सोलहवां अंक

नवोन्मेष

Navonmesh

राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान
(सीमैट) उत्तराखण्ड
ननूरखेड़ा, देहरादून

संरक्षक

झरना कमठान
(आई०ए०एस०)
महानिदेशक
विद्यालयी शिक्षा, उत्तराखण्ड

निर्देशन

बंदना गर्ब्याल
निदेशक
अकादमिक, शोध एवं प्रशिक्षण, उत्तराखण्ड

सम्पादन

अजय कुमार नौडियाल
अपर निदेशक,
सीमैट, उत्तराखण्ड

सम्पादन सहयोग

डा० एम.एस. बिष्ट, प्रोफेशनल (नीति, नियोजन एवं प्रबन्ध)
डा० एम.एम. उनियाल, प्रोफेशनल (शोध एवं मूल्यांकन)
डा० जे.एस. बिष्ट, जूनियर प्रोफेशनल (शोध एवं मूल्यांकन)
डा० विनोद ध्यानी, जूनियर प्रोफेशनल यनीतिए नियोजन एवं प्रबन्ध)

संकलन एवं सहयोग

विनीत त्रिपाठी, कम्प्यूटर प्रोग्रामर, सीमैट
चतर सिंह नेगी, पुस्तकालयाध्यक्ष, सीमैट
राजेन्द्र प्रसाद बडोला, लेखाकार, सीमैट
रघुवीर सिंह बिष्ट, हॉस्टल सुप्रिन्टेन्डेन्ट, सीमैट
सुनील पुरोहित, कम्प्यूटर आपरेटर, सीमैट

सम्पादकीय

शिक्षा एक सुव्यवस्थित प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति ज्ञान, कौशल, मूल्य तथा समझ प्राप्त करता है। शिक्षा ही एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा मानव का सर्वांगीण विकास होता है तथा वह सभ्य सुसंस्कृत और योग्य नागरिक बनता है शिक्षा के द्वारा जहां मनुष्य का भौतिक विकास होता है वही यह उसके चारित्रिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। देश के नागरिकों को वर्तमान युग के अनुरूप शिक्षा प्रदान करने हेतु भारत सरकार के द्वारा 29 जुलाई 2020 को मंजूरी प्रदान की गई इस शिक्षा नीति का लक्ष्य शिक्षा प्रणाली को समग्र कौशल आधारित और आधुनिक बनाना है। हमारे देश में अद्यतन लागू शिक्षा नीतियों में इस नीति की विशेषता है कि यह नीति विद्यालय शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालय शिक्षा शोध कौशल विकास व्यावसायिक शिक्षा आदि पर आधारित है। प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित यह ऐसी नीति है जो की आधुनिक डिजिटल शिक्षा, कृत्रिम बौद्धिकता तथा मशीन लर्निंग को अंगीकृत करने की सिफारिस करती है। इस नीति की एक और महत्वपूर्ण विशेषता है कि यह भारतवर्ष की विविधताओं को ध्यान में रखकर देश की विभिन्न भाषाओं के विकास को महत्व प्रदान करती है अतः इस नीति से भाषाओं के संरक्षण हेतु व्यापक प्राविधान किए गए हैं। उत्तराखण्ड राज्य में भी गढवाली, कुमांउनी तथा जौनसारी भाषाओं के विकास हेतु विभिन्न प्रकार के क्रियाकलाप इस दिशा में अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 को प्रदेश में लागू करने में प्रशिक्षण स्थान की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है नीति में उल्लेखित शैक्षिक प्रशासकों को प्रतिवर्ष 50 घंटे के सतत व्यवसायिक विकास प्रशिक्षण हेतु राज्य स्तर पर राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा महत्वपूर्ण क्रियाकलाप किया जा रहे हैं। लोक सेवा आयोग के द्वारा नवीन चयनित उप शिक्षा अधिकारियों के लिए अनिवार्य आधारभूत प्रशिक्षण का आयोजन इस वर्ष संस्थान का महत्वपूर्ण कार्य रहा है। विद्यालय शिक्षा विभाग के कार्यों में कार्य निस्तारण हेतु समस्त जिला शिक्षा अधिकारी, खंड शिक्षा अधिकारियों को ई0—ऑफिस पर प्रशिक्षण करवाया जा चुका है। इस प्रकार के प्रशिक्षण से सभी हितधारकों की समस्याओं का समाधान होगा व कार्यालय की कार्य संस्कृति में भी सुधार होगा। इसी प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के अंतर्गत राज्य पाठ्यक्रम रूपरेखा, विद्यालय पूर्व तथा स्कूली शिक्षा के निर्णय में भी इस संस्थान के द्वारा पूर्ण मनोयोग से कार्य किया गया है। भविष्य में प्रशिक्षकों की गुणवत्ता में सुधार हेतु शिक्षा अधिकारियों, प्रधानाचार्य एवं मिनिस्ट्रियल संवर्गीय कार्मिकों के प्रशिक्षण हेतु प्रशिक्षण आवश्यकताओं का आकलन कर गुणवत्ता प्राप्त प्रशिक्षण सामग्री तैयार कर प्रशिक्षण प्रदान करना इस संस्थान का महत्वपूर्ण लक्ष्य है। वर्ष 2024—25 में संस्थान के द्वारा विभिन्न कृत कार्यकलापों का विवरण स्थान की वार्षिक पत्रिका नवोन्मेष के 16वें अंक में प्रकाशित किया जा रहा है। मुझे आशा है की पत्रिका के प्रकाशन से सभी शिक्षा अधिकारी, कर्मचारी, शिक्षक, अभिभावक तथा छात्र—छात्राएं लाभान्वित होंगे।

विषय सूची

1.	खण्ड शिक्षा अधिकारियों का पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण	4
2.	नव चयनित उप शिक्षा अधिकारी अभिमुखीकरण प्रशिक्षण	10
3.	पीएम श्री विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों का अभिमुखीकरण प्रशिक्षण	21
4.	प्रधानाध्यापकों / प्रधानाचार्यों का सतत व्यावसायिक विकास प्रशिक्षण	23
5.	समरकैम्प	30
6.	कार्यालय तथा वित्तीय प्रबंधन पर मिनिस्ट्रियल संवर्गीय कार्मिकों का प्रशिक्षण	33
7.	एन.सी.एस.एल. के तत्वाधान में राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन	40
8.	सीमैट द्वारा वर्ष 2024–25 में सम्पादित कार्य	93
9.	राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान, प्रस्तावित वार्षिक कार्य योजना 2025–26	94
10.	शिक्षण संस्थाओं में कार्यरत माध्यमिक शिक्षको के लिए वार्षिक गोपनीय आख्या	98

खण्ड शिक्षा अधिकारियों का पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण

परिचय

माध्यमिक स्तर पर छात्र–छात्राओं को गुणवत्तापरक शिक्षा प्रदान करने तथा शैक्षिक प्रशासन के विकेन्द्रीकरण के दृष्टिगत राज्य में प्रत्येक विकास खण्ड स्तर पर खण्ड शिक्षा अधिकारियों के 95 पद सृजित किये गये हैं। खण्ड शिक्षा अधिकारी विकासखण्ड स्तर पर माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षा में गुणवत्तापरक सुधार, सभी हितधारकों की समस्याओं के तत्काल निराकरण, विभिन्न प्रकार के पाठ्य सहगामी क्रियाकलापों तथा विभिन्न प्रकार की परीक्षाओं के संचालन हेतु विकासखण्ड स्तर पर उत्तरदायी है। पद सृजन तथा खण्ड शिक्षा अधिकारियों की नियुक्ति के फलस्वरूप विकासखण्ड स्तर पर माध्यमिक विद्यालयों में सम्पन्न किये जाने वाले कार्यक्रमों में गति आयी है तथा सभी हितधारकों की समस्याओं का पर्याप्त समाधान हुआ है। उत्तराखण्ड शासन के शासनादेश संख्या 599/XXIV-2/2012-6(3)/2012 के अनुसार खण्ड शिक्षा अधिकारियों के कार्य एवं दायित्व निम्नवत निर्धारित किये गये हैं।

खण्ड शिक्षा अधिकारी

1. विकास खण्ड स्तर पर शिक्षा के अधिकार से वंचित आयु वर्ग 6 से 14 के बच्चे का विद्यालयों में आयु एवं स्तर के अनुसार पंजीकरण करना, शिक्षा धारण एवं उनकी नियमित उपस्थिति का भौतिक सत्यापन करना।

2. विकासखण्ड स्तर पर शिक्षा के अधिकार अधिनियम के तहत समस्त छात्रों को शिक्षण व्यवस्था के अन्तर्गत पुस्तकें, स्टेशनरी, विद्यालय गणवेश, मध्याह्न भोजन तथा राज्य सरकार एवं केन्द्र सहयातित द्वारा दी जा रही विभिन्न आर्थिक सुविधाओं को समय पर उपलब्ध करवाना।
3. विकासखण्ड स्तरीय बैठकों हेतु नोडल अधिकारी के दायित्वों का निर्वहन करना।
4. विकासखण्ड के अन्तर्गत हाईस्कूल तथा इ0 कॉलेजों का सप्ताह में 02 दिन नियमित निरीक्षण करना।
5. विकासखण्ड के अन्तर्गत समस्त संकुल केन्द्रों का पर्यवेक्षण।
6. हाईस्कूल एवं इण्टर स्तर की मान्यता से सम्बन्धित विद्यालयों का स्थलीय निरीक्षण कर संस्तुति जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) को प्रेषित करना।
7. विकासखण्ड स्तर की समस्त परीक्षाओं के सफल संचालन के प्रति उत्तरदायी होना।
8. विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति का नियमानुसार / निर्देशानुसार भुगतान सुनिश्चित कराना।
9. विकास खण्ड स्तर पर शैक्षिक उन्नयन हेतु मासिक बैठक आयोजित करना।
10. विकासखण्ड के अन्तर्गत टी0सी0 को प्रतिहस्ताक्षरित करना।
11. ब्लॉक स्तर पर आर0एम0एस0ए0 एवं साक्षरता परियोजना के क्रियान्वयन हेतु खण्ड परियोजना अधिकारी।

12. ब्लॉक के अन्तर्गत विद्यालयों के शिक्षक एवं छात्रों की नियमित उपस्थिति के प्रति उत्तरदायी होना।
13. विकास क्षेत्र के रा0इ0का0 के प्रधानाचार्यों/रा0उ0मा0वि0 के प्रधानाध्यापकों एवं शिक्षकों का चिकित्सा अवकाश एवं उपार्जित अवकाश दिनों की संख्या, प्रकरणों को जिला शिक्षा अधिकारी, बेसिक/माध्यमिक एवं मुख्य शिक्षा अधिकारी को संस्तुति सहित प्रेषित करना।
14. रा0उ0मा0वि0 के प्रधानाध्यापकों एवं रा0इ0का0 के प्रधानाचार्यों के आकस्मिक अवकाश स्वीकृत करना।
15. विकासखण्ड के अन्तर्गत विद्यालयों के शिक्षक/ कर्मचारियों के स्थानान्तरण के सम्बन्ध में शासन की नीति एवं आदेशों के तहत कार्यवाही सुनिश्चित करना।
16. विकासखण्ड स्तर पर सूचनाओं का संकलन एवं प्रेषण करना।
17. रा0इ0का0 प्रधानाचार्य एवं रा0उ0मा0वि के प्रधानाध्यापक एवं अपने कार्यालयों के समस्त अधीनस्थ अधिकारियों / कर्मचारियों का प्रतिवेदक अधिकारी के रूप में प्रविष्टि अंकित करना।
18. माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के लिए समीक्षक अधिकारी के रूप में प्रविष्टि अंकित करना।
19. विकासखण्ड के अन्तर्गत माध्यमिक विद्यालयों के निर्माण कार्यों की गुणवत्ता के प्रति उत्तरदायी होना।
20. विकासखण्ड के अन्तर्गत सभी नवीन विद्यालयों के खोलने हेतु स्कूल मैपिंग करना तथा विद्यालयों के उच्चीकरण के सम्बन्धित शिक्षा अधिकारियों को आख्या सहित उपलब्ध कराना।
21. विकासखण्ड के समस्त रा0उ0मा0वि0/रा0इ0 कॉलेजों के भौतिक संसाधनों का विवरण संकलित कर व्यवस्थित रखना।
22. विकासखण्ड स्तर की समस्त योजनाओं के क्रियान्वयन के प्रति उत्तरदायी होना।
23. विकास खण्ड के समस्त सेवानिवृत्त शिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों (राजपत्रित को छोड़कर) का 90 प्रतिशत भविष्य निधि के आहरण हेतु संस्तुति कर प्रस्तुत करना।
24. उप शिक्षा अधिकारी के भ्रमण कार्यक्रम अनुमोदित करना तथा मार्ग निर्देशन करना।
25. अपने अधीनस्थ समस्त कर्मचारियों/शिक्षकों/ अधिकारियों के यात्रा भत्ता बिल प्रति हस्ताक्षरित करना।
26. विकास खण्ड में स्थिति विद्यालयों के भवनों का सत्यापन एवं भवन निर्माण कार्यों की प्रगति से उच्च अधिकारियों को अवगत कराना।
27. खण्ड स्तर पर लिपिक वर्गीय कर्मचारियों की गोपनीय आख्याओं में प्रविष्ट हेतु स्वीकृतकर्ता बधिकारी (द्विस्तरीय व्यवस्था के अन्तर्गत)
28. प्रारम्भिक शिक्षा के शिक्षकों से शिक्षणेत्तर कार्मिकों की 42 दिन से अधिक परन्तु 90 दिन तक उपार्जित अवकाश एवं चिकित्सा अवकाश स्वीकृत करना तथा अधिक की स्थिति में जिला शिक्षा अधिकारी बेसिक को संस्तुत/अग्रसारित करना।

माध्यमिक शिक्षा निदेशालय उत्तराखण्ड के द्वारा बदलती हुई परिस्थिति एवं नवीन योजनाओं के सम्पादन तथा विकासखण्ड स्तर पर शैक्षिक समस्याओं के समाधान हेतु प्रशिक्षण की आवश्यकता महसूस की गई। निदेशालय के द्वारा कुछ खण्ड शिक्षा अधिकारियों तथा माध्यमिक शिक्षा निदेशालय में कार्यरत उपनिदेशकों की एक बैठक की गई तथा राज्य शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशिक्षण संस्थान, सीमैट उत्तराखण्ड के सहयोग से प्रशिक्षण विषयों को निर्धारित किया गया तथा माह जून 2024 में प्रशिक्षण सम्पन्न करवाने का निर्णय किया गया।

प्रशिक्षण की योजना–

संस्थान द्वारा खण्ड शिक्षा अधिकारियों की संख्या के दृष्टिगत यह प्रशिक्षण दो चक्रों में करवाए जाने का निर्णय लिया गया है।

प्रथम चरण– दिनांक 18–21 जून, 2024
द्वितीय चरण– दिनांक 28–29 जून, 2024

रूचि के क्षेत्र

प्रशिक्षण से पूर्व सभी प्रतिभागियों से उनके रूचि के क्षेत्रों के बारे में जानकारी प्राप्त की गई, सामान्यतः निम्नलिखित रूचि के क्षेत्र व्यक्त किये गये है–लेखन, पठन–पाठन, खेलकूद, संगीत, बागवानी, कम्प्यूटर कार्य, सोशल मीडिया शेयरिंग, भ्रमण व पयर्टन।

प्रशिक्षण विषय–

जैसा कि प्रस्तावना में व्यक्त किया गया है कि यह प्रशिक्षण माध्यमिक शिक्षा निदेशालय के अनुरोध पर आयोजित किया गया है। माध्यमिक शिक्षा निदेशालय में कार्यरत शिक्षा अधिकारियों को विकासखण्ड स्तर पर कुछ विशिष्ट कार्यों के सम्पादन में प्रशिक्षण आवश्यकता महसूस की गई। अतः अनुभवी खण्ड शिक्षा अधिकारियों, माध्यमिक शिक्षा निदेशालय में कार्यरत शिक्षा अधिकारियों तथा सीमैट के संकाय सदस्यों के द्वारा चार दिवसीय प्रशिक्षण हेतु निम्नलिखित विषयों का निर्धारण किया गया–

1. कार्यालय प्रबंधन।
2. विनिष्टीकरण नियमावली।
3. कार्यालय एवं विद्यालय अनुश्रवण, निरीक्षण व पर्यवेक्षण।
4. न्यायालयी वाद।
5. कर्मचारी आचरण नियमावली।
6. वेतन निर्धारण।
7. कृत्रिम बौद्धिकता।
8. अशासकीय विद्यालयों का प्रबन्धन।
9. अनुशासनात्मक एवं दण्डात्मक कार्यवाहियां।
10. गोपनीय आख्या प्रविष्टि।
11. शैक्षिक नेतृत्व।
12. पी0एम0ई0 विद्या।
13. कौशलम।
14. विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्तियाँ।
15. एन0ई0पी0 ट्रैकर।
16. आई0एफ0एम0एस0।

प्रशिक्षण प्रविधि

खण्ड शिक्षा अधिकारियों के इस प्रशिक्षण में निम्नलिखित प्रशिक्षण प्रविधियों का प्रयोग किया गया ताकि प्रशिक्षण प्रभावी हो तथा कार्य स्थल पर प्रतिभागी प्राप्त प्रशिक्षण का उपयोग आने दैनिक समस्याओं के समाधान में कर सकें।

1. व्याख्यान।
2. पॉवर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण।
3. समूह चर्चा।
4. समूह कार्य।
5. अभ्यास कार्य।
6. भूमिका निवर्हन।

प्रतिभागियों द्वारा व्यक्त अपेक्षाएं

प्रशिक्षण के प्रतिभागियों द्वारा भावी प्रशिक्षण हेतु उनकी अपेक्षाओं की जानकारी प्राप्त की गई सामान्यतः प्रतिभागियों द्वारा निम्नवत् अपेक्षाएं की गई–

1. प्रशिक्षण प्रतिवर्ष आयोजित किये जाने चाहिए।
2. प्रशिक्षण की अवधि बढ़ाई जानी चाहिए।
3. ई0पमेन्ट आई0एफ0एम0एस0 जैसे विषयों पर अभ्यास कार्य प्रशिक्षण के दौरान ही करवाया जाना चाहिए।
4. प्रशिक्षण सामग्री मुद्रित भी उपलब्ध करवायी जानी चाहिए।
5. छात्रावास में प्रशिक्षणोंपरान्त खेल सामग्री की व्यवस्था की जानी चाहिए।
6. निदेशालय तथा प्रशिक्षण संस्थान में प्राप्त नवीन जानकारी हेतु ऑनलाईन प्रशिक्षण का समय–समय पर आयोजित किया जाना चाहिए।

प्रशिक्षण के उपरांत प्रशिक्षणार्थियों का मूल्यांकन निम्नवत रहा–

प्रशिक्षणोपरांत परीक्षण

1. एक संस्थाध्यक्ष के रूप में रोजमर्रा के कार्यों में सर्वाधिक नेतृत्व करना चाहेंगे -

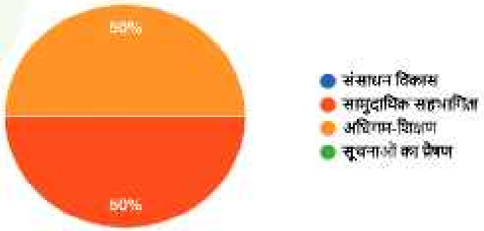

3. अर्द्धशासकीय पत्र लिखा जाता है –

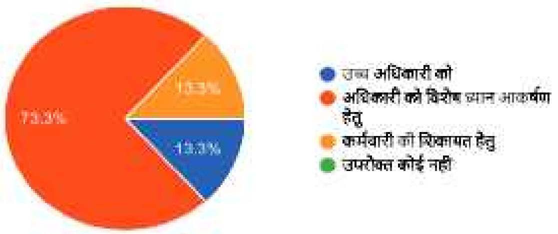

3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 निर्माण समिति के चेयरमैन है -

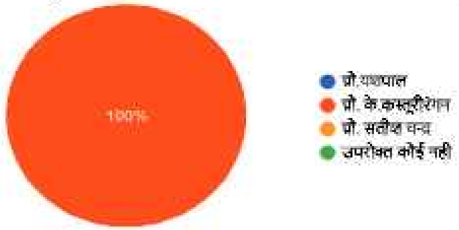

4. आरोप पत्र पर किसके हस्ताक्षर/ अनुमोदन अनिवार्य हैं -

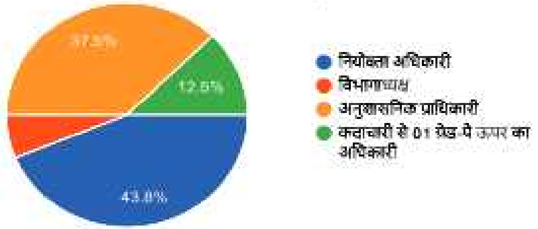

5. NEP-2020के चतुर्थ भाग का सम्बन्ध है ।

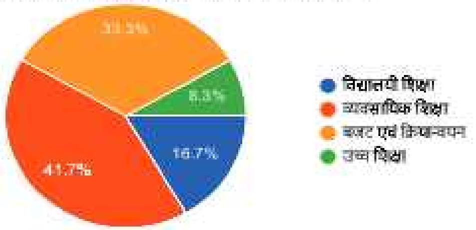

6. कदाचार पर सेवामुक्त करना है -

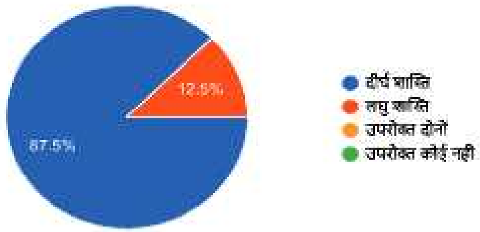

7. असाधारण अवकाश की अधिकतम अवधि हैं-

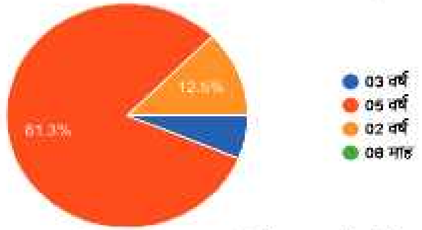

8. बाल्य देखभाल अवकाश पूरे सेवाकाल में अधिकतम कितने दिनों तक अनुमन्य किया जा सकता है।

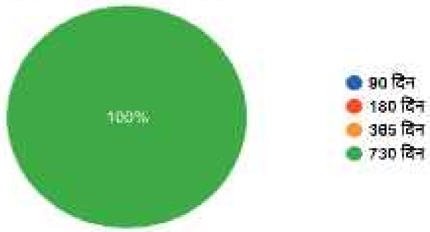

9. 360 डिग्री समग्र प्रगति पत्र का संबंध है।

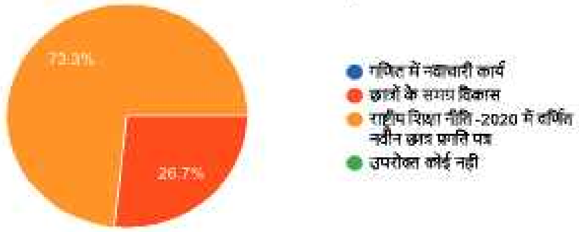

10. लोक सूचना अधिकारी के लिए सामान्यतः सूचना देने की अवधि है।

11. पीटर सांगे के विद्यालय एक अधिगम संस्था की अवधारणा में निम्न में से कौन सा बिन्दु सम्मिलित नही है-

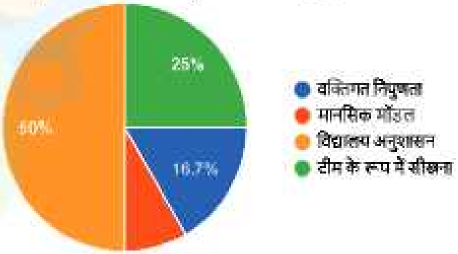

12. IFMS का पूरा नाम है-

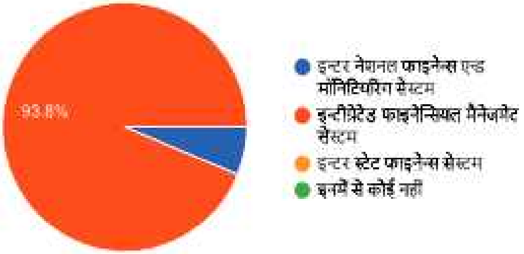

13. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार विद्यालयी शिक्षा का ढांचा है -

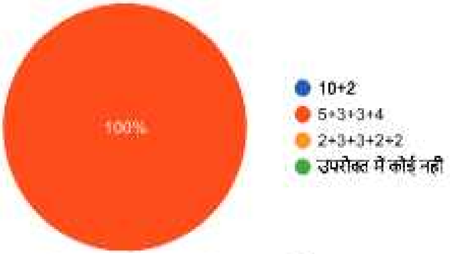

14. विद्यालय के प्रमुख हितधारक हैं

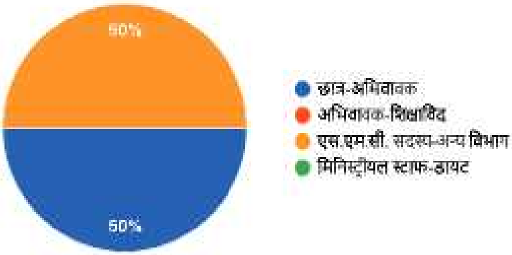

15. FLN क्या है-

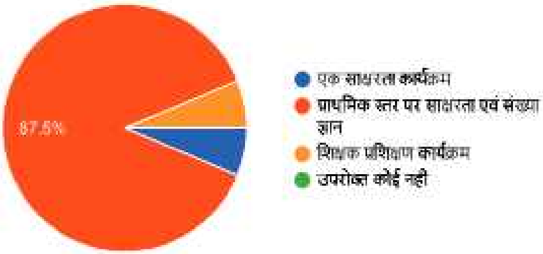

16. उत्तराखण्ड राज्य में कक्षा 1 से 12 तक लागू है।

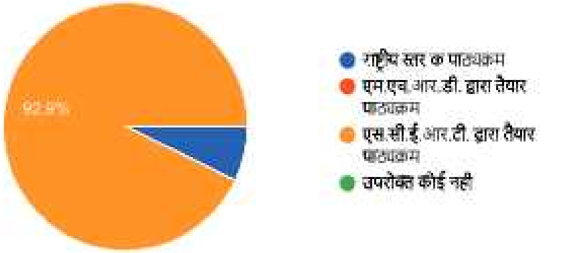

17. बाल वाटिका क्या है।

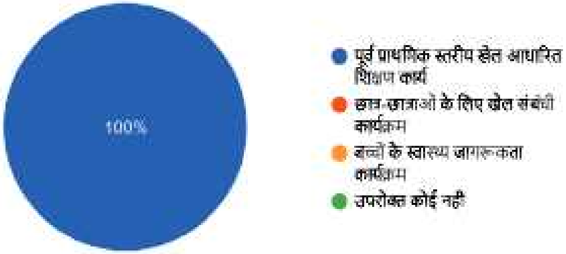

18. राष्ट्रीय शिक्षा नीति में सतत व्यावसायिक विकास का संबंध है।

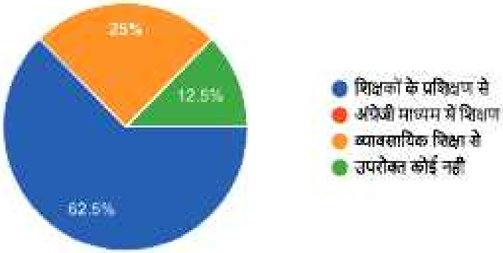

19. राष्ट्रीय शिक्षा नीति में संसाधनों की साझेदारी हेतु सुझाव है।

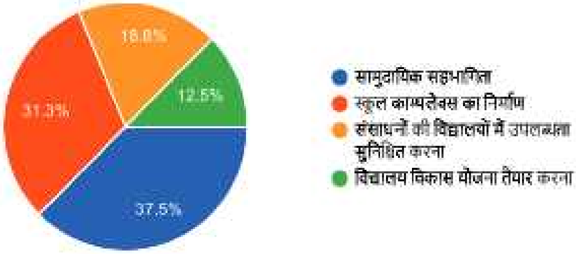

20. 21वीं सदी के 4C's (Learning Skill) में नही है -

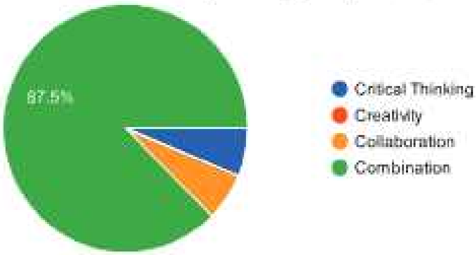

नव चयनित उप शिक्षा अधिकारी अभिमुखीकरण प्रशिक्षण

शिक्षा के विकेन्द्रीकरण तथा विकास खण्ड स्तर पर अनुश्रवण, विद्यालयी निरीक्षण, प्रबंधन तथा कुशल नेतृत्व प्रदान करने हेतु वर्तमान समय पर विकास खण्ड स्तर पर उप शिक्षा अधिकारियों का चयन राज्य लोक सेवा आयोग के द्वारा किया गया है। विकासखण्ड स्तर पर विद्यालयों का प्रभावी संचालन, शिक्षकों की नियुक्ति व स्थानान्तरण हेतु अनुशंसाए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का विकास खण्ड स्तर पर क्रियान्वयन, सभी हितधारकों की समस्या समाधान तथा व्यापक स्तर पर विद्यालयों में सामुदायिक सहभागिता को सुनिश्चित करने के दृष्टिगत राज्य में प्रारम्भिक स्तर के शिक्षा को सुदृढ करने के दृष्टिगत राज्य में उप शिक्षा अधिकारियों के 95 पद सृजित किये गये है।

उप शिक्षा अधिकारियों के कार्य व दायित्व

उत्तराखण्ड शासन माध्यमिक शिक्षा अनुभाग–2 के पत्र संख्या 599XXIV - 2/2012-6(3) दिनांक 20 अक्टूबर 2012 के अनुसार राज्य में विकास स्तर पर नियुक्त किये जाने वाले उप शिक्षा अधिकारियों के मुख्य कार्य निम्नवत निर्धारित किये गये है।

1. विकास खण्ड स्तर पर शिक्षा के अधिकार से वंचित बच्चों के विद्यालयों में आयु एवं स्तर के अनुसार पंजीकरण करना, शिक्षा धारण एवं उनकी उनकी नियमित उपस्थिति का भौतिक सत्यापन करना।
2. विकास खण्ड स्तर पर शिक्षा के अधिकार के तहत समस्त छात्रों को शिक्षण व्यवस्था के अन्तर्गत पुस्तकें, स्टेशनरी, विद्यालय गणवेश, मध्याहन भोजन तथा शासन एवं केन्द्र सहायतित विभिन्न आर्थिक सुविधाओं को समय पर उपलब्ध कराना।
3. प्रारम्भिक शिक्षा से संबंधित विकास खण्ड की बैठकों हेतु उत्तरदायी होना।
4. विकास खण्ड के अन्तर्गत प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक विद्यालयों का सप्ताह में 02 दिन नियमित निरीक्षण करना।
5. विकास खण्ड के अन्तर्गत समस्त संकुल केन्द्रों का अनुश्रवण करना।
6. प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक विद्यालयों की मान्यता हेतु संबंधित विद्यालयों का स्थलीय निरीक्षण। संस्तुति जिला शिक्षा अधिकारी प्रारम्भिक शिक्षा को प्रेषित करना।
7. विकास खण्ड स्तर की प्रारम्भिक शिक्षा से संबंधित समस्त परीक्षाओं के सफल संचालन हेतु उत्तरदायी होना।
8. विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति का नियमानुसार / निर्देशानुसार भुगतान सुनिश्चित करना।
9. विकास खण्ड स्तर पर शैक्षणिक उन्नयन हेतु मासिक बैठक आयोजित करना।
10. ब्लॉक स्तर पर सर्व शिक्षा अभियान का विकासखण्ड परियोजना अधिकारी के दायित्वों का निर्वहन करना।

11. प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों को दक्षता पुरस्कार हेतु संस्तुति जिला शिक्षा अधिकारी प्रारम्भिक शिक्षा को भेजना।
12. विकास खण्ड के अन्तर्गत विद्यालयों के शिक्षक एवं छात्रों की नियमित उपस्थिति के प्रति उत्तरदायी होना।
13. विकासखण्ड स्तर पर स्थापित प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापकों की तैनाती सक्षम स्तर से सुनिश्चित करना।
14. विकास खण्ड के अर्न्तगत विद्यालयों के शिक्षकों एवं कर्मचारियों के स्थानान्तरण के संबंध में शासन की नीति एवं आदेशों के तहत कार्यवाही सुनिश्चित करना।
15. विकासखण्ड के अन्तर्गत प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों के निर्माण कार्यो की गुणवत्ता के प्रति उत्तरदायी होना।
16. विकासखण्ड के अन्तर्गत सभी नवीन प्राथमिक एवं जूनियर विद्यालयों को खोलने हेतु स्कूल मैपिंग तथा विद्यालयों के उच्चीकरण हेतु के संबंधित आख्या संबंधित शिक्षा अधिकारी को प्रेषित करना।
17. विकास खण्ड के समस्त प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों के भौतिक संसाधनों का विवरण संकलित कर व्यवस्थित रखना।
18. विकास खण्ड स्तर की समस्त योजनाओं के क्रियान्वयन के प्रति उत्तरदायी होना। विकास खण्ड स्तर पर सूचनाओं का संकलन एवं प्रेषण करना।
19. विकास खण्ड के समस्त सेवानिवृत शिक्षको, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों का 90 प्रतिशत सामान्य भविष्य निधि के आहरण हेतु संस्तुति कर प्रस्तुत करना।
20. विकास खण्ड में स्थित विद्यालयों के भवनों का सत्यापन एवं भवन निर्माण कार्यो की प्रगति से उच्च अधिकारियों को अवगत कराना।
21. मध्याहन भोजन योजना संचालन के लिए नोडल अधिकारी के दायित्वों का निर्वहन करना।
22. बी.आर.सी.के कार्यों का अनुश्रवण करना। परियोजना संचालन हेतु बी.आर.सी. से समन्वयन ज्ञापित करना।
23. सप्ताह में तीन दिन प्राथमिक विद्यालयों का प्रभावी अनुश्रवण करना। निरीक्षण आख्या जिला शिक्षा अधिकारी को प्रेषित करना।
24. प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों एवं कर्मचारियों की वार्षिक चरित्र पंजिका में समीक्षक अधिकारी के रूप में प्रविष्टि अंकित करना।
25. शिक्षक/शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के 42 दिन का चिकित्सा अवकाश/उपार्जित अवकाश नियमानुसार स्वीकृत करना, तथा उससे अधिक का जिला शिक्षा अधिकारी प्रारम्भिक शिक्षा को प्रेषित करना।
26. खण्ड शिक्षा अधिकारी की अध्यक्षता में गठित समिति से अनुमोदन के उपरान्त चयन वेतनमान स्वीकृत करना।

उक्त के अतिरिक्त मुख्य शिक्षा अधिकारी, मण्डलीय अपर निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा, निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा, निदेशक राज्य परियोजना कार्यालय समग्र शिक्षा अभियान के द्वारा राज्य सरकार, केन्द्र सरकार के द्वारा प्रारम्भिक शिक्षा हेतु संचालित अन्य विभिन्न योजनाओं के संचालन हेतु इन अधिकारियों को समय–समय पर निर्दिष्ट किया जाता है। जनपद में जिलाधिकारी के द्वारा भी इन अधिकारियों के माध्यम से अन्य कार्य निष्पादित करवाये जाते है। अतः इन अधिकारियों को विभिन्न क्रियाकलापों के संचालन हेतु निम्नलिखित कार्य भी किये जाते है।

- समितियों के सदस्य।
- नोडल अधिकारी।
- प्रभारी अधिकारी / अपीलीय अधिकारी।
- निर्वाचन अधिकारी।
- विशिष्ट दायित्व।

प्रारम्भिक शिक्षा में वर्तमान चुनौतियाँ–

वर्तमान समय में प्रारम्भिक स्तर पर राज्य के सरकारी विद्यालयों में निम्नलिखित प्रमुख चुनौतियाँ हैं।

- सरकारी विद्यालयों में घटता छात्र नामांकन।
- दूरस्थ क्षेत्रों में शिक्षा के अधिकार अधिनियम के तहत शिक्षकों की अनुपलब्धता।
- छात्र अनुपस्थिति।
- अभिभावकों का प्राइवेट स्कूल के प्रति झुकाव।
- पर्वतीय क्षेत्रों में आपदाएं।
- राज्य की विविध भौगोलिक स्थिति।

उक्त के दृष्टिगत इन शिक्षा अधिकारियों को विभाग में भविष्य में शैक्षिक नियोजन, प्रबंधन, विद्यालय, निरीक्षण अनुश्रवण, पर्यवेक्षण, विभिन्न प्रकार की नियुक्तियाँ, आहरण वितरण का कार्य आदि भी करना होगा। उक्त को मध्यनजर रखते हुए सीमैट के द्वारा नव नियुक्त उपशिक्षा अधिकारियों के लिए 75 दिवसीय प्रशिक्षण की कार्ययोजना तैयार की गई है। नियुक्ति के उपरान्त प्रदेश सरकार के द्वारा राज्य की गहन जानकारी, अधिकारियों के कर्तव्य दायित्व, कर्मचारी आचरण नियमावली, प्रोटोकाल, वित्तीय प्रबंधन आदि पर इन अधिकारियों के लिए 03 माह का प्रशिक्षण पं. दीनदयाल उपाध्याय वित्तीय प्रबंधन प्रशिक्षण संस्थान में करवाया गया है।

इस प्रकार प्रशिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थाओ का विवरण निम्नवत है।

क्र. सं.	प्रशिक्षण प्रदान करने वाली संस्था का नाम	अवधि	मुख्य उद्देश्य
1	पं दीन दयाल वित्तीय प्रशिक्षण संस्थान, देहरादून	90 दिन	राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था, राजपत्रित अधिकारियों कर्तव्य व उत्तरदायित्व, कर्मचारी आचरण नियमावली, अनुशासनात्मक एवं अपील नियम, राज्य का वित्तीय प्रबंधन एवं बजट प्रवाह एवं अन्य विषयों पर
2	विभागीय अभिमुखीकरण प्रशिक्षण महानिदेशक, विद्यालयी शिक्षा, उत्तराखण्ड के निदेशानुसार मुख्य शिक्षा अधिकारी के नियंत्रण में।	07 दिन	(क). 01 राजकीय माध्यमिक विद्यालय–लगातार 02 दिन। (ख). 01 राजकीय प्राथमिक विद्यालय–लगातार 02 दिन। (ग). 01 राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय–01 दिन। (घ). 01 सी0आर0सी0 / बी0आर0सी0 / जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान– 01 दिन।
3	राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान उत्तराखण्ड	30 दिन	विभागीय जानकारी, प्रबंधन एवं नियोजन तथा प्रभावी विद्यालय निरीक्षण, अनुश्रवण तथा संचालन क्षमता का विकास।
4	क्षेत्रीय प्रशिक्षण (खण्ड शिक्षा अधिकारी / उप शिक्षा अधिकारी कार्यालय मे)	30 दिन	कार्य क्षेत्र में विविध प्रकार की चुनौतियों का समाधान तथा प्रोजेक्ट कार्य संपादन
5	मूल्यांकन (सीमैट उत्तराखण्ड)	15 दिन	प्राप्त प्रशिक्षण का मूल्यांकन

प्रशिक्षण प्रविधि–

राज्य शैक्षिक प्रबंधन तथा प्रशिक्षण संस्थान के द्वारा तैयार किए गए प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत नियोजन, प्रबंधन, अनुश्रवण एवं निरीक्षण तथा विभागीय क्रियाकलापों हेतु दिए जाने वाले 30 दिवसीय विभागीय प्रशिक्षण के अन्तर्गत संबंधित क्षेत्र के राष्ट्रीय तथा राज्य स्तर के विशेषज्ञों को संदर्भदाता के रूप में आमंत्रित किया गया। प्रशिक्षण में विस्तृत परिचर्चाएं, संवाद तथा समूह कार्य के माध्यम से विभिन्न विषयों की जानकारी प्रशिक्षुओं को प्रदान की गयी। प्रशिक्षण के दौरान राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर ख्याति प्राप्त अतिथि वक्ताओं के व्याख्यान दिये गए, ताकि प्रशिक्षुओं को कार्यक्षेत्र में प्रभावी ढंग से कार्य करने की प्रेरणा मिल सके। सामान्यतः प्रशिक्षण में निम्नलिखित प्रविधियाँ अपनाई गई। सामान्यतः प्रशिक्षण में आई.सी.टी. का प्रयोग किया गया।

1. व्याख्यान
2. पावर प्वाइंट प्रस्तुतीकरण
3. भूमिका निर्वहन
4. समूह कार्य
5. केस स्टडी
6. स्व अध्ययन
7. परिचर्चा
8. स्व निर्देशित अधिगम

संदर्भदाता विवरण।

राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान के द्वारा प्रशिक्षण को प्रभावी बनाने और प्रशिक्षुओं में वांछित कौशलों के विकास हेतु निम्नवत संदर्भदाताओं को परिचर्चा, व्याख्यान एवं प्रस्तुतीकरण हेतु आमंत्रित किया गया।

- सीमैट के संकाय सदस्य
- राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान के संकाय सदस्य।
- विद्यालयी शिक्षा महानिदेशालय एवं निदेशालयों में कार्यरत अधिकारी।
- समग्र शिक्षा में कार्यरत शिक्षाधिकारी।
- विद्यालयी शिक्षा परिषद रामनगर में कार्यरत अधिकारी।
- विद्यालयी शिक्षा विभाग से सेवानिवृत शिक्षाधिकारी।
- एस.सी.ई.आर.टी. उत्तराखण्ड में कार्यरत शिक्षाधिकारी एवं संकाय सदस्य।
- मुख्य शिक्षा अधिकारी।
- प्राचार्य डायट उत्तराखण्ड।
- खण्ड शिक्षा अधिकारी उत्तराखण्ड।

क्षेत्रीय प्रशिक्षण–

प्रशिक्षुओं का 30 दिवसीय क्षेत्रीय प्रशिक्षण खण्ड शिक्षा अधिकारियों की निगरानी में खण्ड शिक्षा अधिकारी कार्यालय में करवाया जा रहा है। इस अवधि में प्रतिभागी खण्ड शिक्षा अधिकारी कार्यालय के समीप का विद्यालय आवंटित कर विद्यालयों यथा प्रारम्भिक से उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों का प्रबंधन, नेतृत्व, विद्यालय संचालन का कार्य स्वयं करेंगे। इस अवधि में वे सीमैट द्वारा प्रदत्त प्रोजेक्ट कार्य को भी पूर्ण करेंगे। इस प्रशिक्षण अवधि में प्रशिक्षु कार्य क्षेत्र विशेष में आने वाली समस्याओं का चिह्नीकरण कर उनके समस्या समाधान हेतु संभावित सुझावो का भी अध्ययन करेंगे।

प्रशिक्षण का मूल्यांकन

विभिन्न संस्थाओं के प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागी संबंधित संस्था के बारें में प्रत्यक्ष कार्य प्रणाली की भी जानकारी प्राप्त करेंगे। क्षेत्रीय प्रशिक्षण खण्ड शिक्षा अधिकारी कार्यालय के पास के माध्यमिक विद्यालय में करेंगे तथा इस अवधि में उन्हे विभागीय क्रियाकलापों से संबंधित प्रोजेक्ट पूर्ण करने होगे ये प्रोजेक्ट मौलिक होगे जिनका प्रस्तुतीकरण अन्तिम 15 दिवसीय मूल्यांकन के दौरान करना होगा। इस अवधि में प्रशिक्षुओं के प्रशिक्षण का आधार निम्नवत होगा।

- अपने कार्य क्षेत्र में आने वाली समस्याएँ तथा संभावित समाधान।
- विभिन्न प्रकार के विद्यालय तथा शैक्षिक नेतृत्व व प्रबंधन।
- विद्यालयों की अच्छी गतिविधियों का प्रस्तुतीकरण।

- प्रोजेक्ट कार्य व प्रस्तुतीकरण।
- प्रशिक्षण पश्च परीक्षण।

मूल्याँकन योजना

राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान का वास्तविक उद्देश्य शिक्षाधिकारियों, शैक्षिक नीति नियोजको, प्रशासकों हेतु समय–समय पर प्रशिक्षण आयोजित करना तथा क्षमता संबर्द्धन करना है। इसके साथ–साथ शैक्षिक नीति एवं नियोजन संबंधी कार्य करना भी है। अतः शिक्षा अधिकारियों के प्रशिक्षण के साथ–2 प्रशिक्षण का मूल्यांकन करना भी आवश्यक है।

प्रस्तावित शिक्षा अधिकारियों के प्रशिक्षण के अन्तर्गत मूल्यांकन की भी योजना है। प्रशिक्षण का मूल्यांकन क्षेत्रीय प्रशिक्षण, जो कि नियुक्ति स्थल पर सम्पन्न होना है, के उपरान्त 07 दिनों में किया जाएगा। प्रशिक्षण के मूल्यांकन की योजना निम्नवत है।

क्र.सं.	मूल्यांकन बिन्दु	पूर्णांक
1	प्रशिक्षण के दौरान सहभागिता	100 अंक
2	अनुशासन एवं समयबद्धता	100 अंक
3	दत्त प्रोजेक्ट कार्य	200 अंक
4	लिखित परीक्षा	100 अंक
	कुल	500 अंक

प्रशिक्षण अवधि में प्रशिक्षुओं की दिनचर्या का समय

राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान में उप शिक्षाधिकारियों हेतु प्रस्तावित प्रशिक्षण आवासीय है। अतः प्रशिक्षण हेतु भोजन एवं आवास की व्यवस्था सीमैट भवन में ही की जाती है। प्रशिक्षण अवधि में सामान्य दिनचर्या निम्नवत है।

1.	प्रातः चाय	प्रातः 6.30
2.	योग एवं व्यायाम	प्रातः6.30 से 7.30
3.	नास्ता	प्रातः 8.30 – 9.15
4.	प्रथम् प्रशिक्षण सत्र	प्रातः 9.45 –11.30
5.	चाय	प्रातः 11.30 – 11.45
6.	द्वितीय प्रशिक्षण सत्र	प्रातः 11.45 –1.00
4.	मध्याह्न भोजन	अपराह्न 1.00–2.00
7.	तृतीय प्रशिक्षण सत्र	अपराह्न 2.00 –3.30
8.	चाय	अपराह्न3.30. –3.45
9.	चतुर्थ प्रशिक्षण सत्र	अपराह्न 3.30 –5.00
10.	पाठ्य सहगामी गतिविधियाँ	सांय 6.00–7.30
11.	रात्रि भोजन	रात्रि 8.00–900

प्रशिक्षण हेतु पाठ्यकम

राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान, (सीमैट) उत्तराखण्ड के द्वारा अधिकारियों के कौशल विकसित करने हेतु विद्यालयी शिक्षा विभाग में कार्यरत शिक्षा अधिकारियों, मण्डल स्तर पर कार्यरत शिक्षा अधिकारियों, उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद रामनगर नैनीताल में कार्यरत शिक्षाधिकारियों, मुख्य एवं जिला शिक्षा अधिकारियों, खण्ड शिक्षाअधिकारियों, समग्र शिक्षा उत्तराखण्ड में कार्यरत शिक्षाधिकारियों व समन्वयकों, एस.सी.ई.आर.टी. उत्तराखण्ड में कार्यरत शिक्षाधिकारियों एवं समन्वयकों, डायट में कार्यरत प्राचार्य व संकाय सदस्यों तथा अनुभवी प्रधानाचार्यो से सुझाव मांग कर 30 दिवसीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। प्रशिक्षण पाठ्यक्रम एवं कार्ययोजना उत्तराखण्ड शासन के द्वारा अनुमोदित है।

माड्यूल–1 विद्यालयी शिक्षा विभाग की संरचना, कार्य एवं उत्तरदायित्व

- महानिदेशालय विद्यालयी शिक्षा
- माध्यमिक शिक्षा निदेशालय
- प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय
- निदेशालय, अकादमिक, शोध एवं प्रशिक्षण–एस.सी.ई.आर.टी., सीमैट, डायट
- उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद, रामनगर
- जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
- समग्र शिक्षा
- प्रधानमंत्री पोषण योजना
- विद्या समीक्षा केन्द्र

माड्यूल–2 कार्यालय प्रबंधन

- प्रभावी कार्यालय प्रबंधन
- रजिस्टरों एवं पत्रावलियों का रजिस्टर
- पत्रावली व नोट सीट
- विभिन्न प्रकार के पत्र
- पत्रांक तैयार करना
- विनिष्टीकरण नियमावली
- विभिन्न प्रकार के अभिलेख

माड्यूल–3 विभिन्न प्रकार की सेवा नियमावलियाँ

- शिक्षाधिकारियों के कार्य एवं उत्तरदायित्व
- प्रधानाचार्य शैक्षिक सेवा नियमावली–2022
- प्रवक्ता सेवा नियमावली एवं संशोधन
- प्रशिक्षित स्नातक सेवा नियमावली व संशोधन
- प्राथमिक शिक्षक सेवा नियमावली–2012
- कर्मचारी आचरण नियमावली–2002
- अनुशासन एवं अपील नियमावली–2003, 2010
- अनुशासनात्मक एवं दण्डात्मक कार्यवाहियाँ
- अशासकीय विद्यालयों का अधिनियम
- शिक्षा का अधिकार अधिनियम, छात्र प्रवेश, विद्यालय मान्यता

माड्यूल–4 पैडागाजी

- शैक्षिक नेतृत्व की अवधारणा
- पैडागाजिकल लीडरशिप
- स्वयं का विकास
- विद्यालय के प्रति अपनेपन का विकास
- छात्र छात्राओं का मानसिक स्वास्थ्य
- शिक्षा में नवाचार तथा विद्यालय रूपान्तरण
- दल बनाना व दल में कार्य करना
- सामुदायिक सहभागिता का नेतृत्व
- समय प्रबंधन
- तनाव प्रबंधन

माड्यूल–5 विभिन्न आयोग व न्यायिक प्रक्रिया

- सूचना आयोग–सूचना का अधिकार अधिनियम–2005
- राष्ट्रीय एवं राज्य बाल संरक्षण आयोग
- मानवाधिकार आयोग
- न्यायालयीवाद–वाद के प्रकार न्यायिक आदेशो के प्रकार, अवमानना
- पोक्सो एवं किशोर न्याय एक्ट

- कार्य स्थाल पर यौन उत्पीडन के विरूद्ध शिकायत निस्तारण प्रकोष्ठ

माड्यूल–6 विभिन्न योजनाएँ व पुरस्कार

- राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार
- शैलेश मटियानी राज्य उत्कृष्ट शिक्षक पुरस्कार
- दीनदयाल उपाध्याय पुरस्कार
- तरू श्री योजना
- शिक्षकों के लिए आई.सी.टी. पुरस्कार
- बार्डर एरिया डेवलपमेंट प्लान
- बालिका साइकिल योजना
- राज्य शैक्षिक भ्रमण योजना

माड्यूल–7 विभिन्न प्रकार के विद्यालय व छात्रावास

- राजीव गाँधी नवोदय विद्यालय
- अटल उत्कृष्ट विद्यालय
- कस्तूरबा गांधी आवासीय छात्रावास
- सुभाष चन्द्र बोस आवासीय छात्रावास
- पी.एम. श्री स्कूल
- मॉडल स्कूल
- क्लस्टर स्कूल

माड्यूल–8 विभिन्न प्रकार के पोर्टल

- शिक्षा का अधिकार
- एजुकेशन पोर्टल
- छात्रबृत्ति संबंधी पोर्टल
- सी.एम. हेल्प लाइन
- सेवा का अधिकार
- इन्वेस्ट उत्तराखण्ड पोर्टल

माड्यूल–9 राष्ट्रीय शिक्षा नीति

- भाग–स्कूली शिक्षा से संबंधी अध्याय
- निपुण भारत मिशन
- परख
- भाग–3 अन्य केन्द्रीय विचारणीय मुद्दे
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 व डिजिटल शिक्षा

माड्यूल–10 विविध विषय

- विद्यालय सुरक्षा व आपदा प्रबंधन
- पाठय सहगामी क्रियाकलाप
- भारत स्काउट एवं गाइड
- एन.सी.सी
- एन.एस.एस.
- खेल–मुख्यमंत्री उदीपमान खिलाडी योजना
- प्रोटोकाल व सामान्य शिष्टाचार
- ईको क्लब

लोक सेवा आयोग उत्तराखण्ड द्वारा चयनित उप शिक्षा अधिकारियों का दिवसवार प्रशिक्षण प्रशिक्षण स्थल एवं संस्थान-सीमैट उत्तराखण्ड दिनांक 17 फरवरी 2025 से 18 फरवरी 2025

दिनांक	समय	विषय
17.02.2025	10.00–11.00	पंजीकरण
	11.00–12.00	परिचय
	12.00–01.00	शुभारम्भ
	01.00–02.00	भोजनावकाश
	02.00–03.00	प्रशिक्षण संबंधी जानकारी व मूलभूत नियम
	03.00–04.00	सीमैट,परिचय
	04.00–05.00	प्रशिक्षु अधिकारियों द्वारा प्रस्तुतीकरण
18.02.2025	09.45–10.00	प्रार्थना,पूर्व दिवस की आख्या का प्रस्तुतीकरण
	10.00–11.30	विभागीय सँरचना
	11.30–01.00	विभागीय ढाँचा–महानिदेशालय से विकास खण्ड स्तर
	1.00–2.00	भोजनावकाश
	2.00–3.30	प्रशिक्षु अधिकारियों के द्वारा प्रस्तुतीकरण
	3.30–5.00	उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा परिषद संरचना एवं कार्य परीक्षा संचालन एवं अन्य कियाकलाप

19.02.2025	09.45–10.00 10.00–11.30 11.30–01.00 1.00–2.00 2.00–3.30 3.30–5.00	प्रार्थना,पूर्व दिवस की आख्या का प्रस्तुतीकरण समग्र शिक्षा–परिचय समग्र शिक्षा योजनाएँ भोजनावकाश बालिका शिक्षा/समावेशित शिक्षा प्रशिक्षु अधिकारियों के द्वारा प्रस्तुतीकरण
20.02.2025	09.45–10.00 10.00–11.30 11.30–01.00 1.00–2.00 2.00–3.30 3.30–5.00	प्रार्थना,पूर्व दिवस की आख्या का प्रस्तुतीकरण उप शिक्षा अधिकारी कार्यालय–परिचय व प्रमुख कार्य प्रशिक्षु अधिकारियों के द्वारा प्रस्तुतीकरण भोजनावकाश प्रशिक्षु अधिकारियों के द्वारा प्रस्तुतीकरण प्रशिक्षु अधिकारियों के द्वारा प्रस्तुतीकरण
21.02.2025	09.45–10.00 10.00–11.30 11.30–01.00 1.00–2.00 2.00–3.30 3.30–5.00	प्रार्थना,पूर्व दिवस की आख्या का प्रस्तुतीकरण अशासकीय विद्यालयों का प्रबंधन अशासकीय विद्यालयों का प्रबंधन–अधिनियम भोजनावकाश शिक्षा का अधिकार अधिनियम अपर सचिव विद्यालयी शिक्षा का संबोधन
22.02.2025	09.45–10.00 10.00–11.30 11.30–01.00 1.00–2.00 2.00–3.30 3.30–5.00	प्रार्थना,पूर्व दिवस की आख्या का प्रस्तुतीकरण भारत स्काउट एवं गाइड– भोपालपानी भ्रमण भारत स्काउट एवं गाइड–परिचय भोजनावकाश भारत स्काउट एवं गाइड–गतिविधियाँ समूह कार्य/प्रस्तुतीकरण
23.02.2025		रविवार
24.02.2025	09.45–10.00 10.00–11.30 11.30–01.00 1.00–2.00 2.00–3.30 3.30–5.00	प्रार्थना,पूर्व दिवस की आख्या का प्रस्तुतीकरण शैक्षिक नेतृत्व की अवधारणा पैडागाजिकल लीडरशिप–1 भोजनावकाश पैडागाजिकल लीडरशिप–2 पैडागाजिकल लीडरशिप–3,4 समूह कार्य/प्रस्तुतीकरण
25.02.2025	09.45–10.00 10.00–11.30 11.30–01.00 1.00–2.00 2.00–3.30 3.30–5.00	प्रार्थना,पूर्व दिवस की आख्या का प्रस्तुतीकरण विद्यालय के प्रति अपनेपन का विकास विद्यालय के प्रति अपनेपन का विकास भोजनावकाश स्वयं का विकास समूह कार्य/प्रस्तुतीकरण
26.02.2025		महा शिवरात्रि
27.02.2025	09.45–10.00 10.00–11.30 11.30–01.00 1.00–2.00 2.00–3.30 3.30–5.00	प्रार्थना,पूर्व दिवस की आख्या का प्रस्तुतीकरण ट्रान्जेक्सनल एनालेसिस Conflict And conflict Resolution भोजनावकाश दल बनना एवं दलो में कार्य करना दल बनना एवं दलो में कार्य करना

28.02.2025	09.45–10.00 10.00–11.30 11.30–01.00 1.00–2.00 2.00–3.30 3.30–5.00	प्रार्थना,पूर्व दिवस की आख्या का प्रस्तुतीकरण शिक्षा में नवाचार व विद्यालय रूपान्तरण विद्यालय रूपान्तरण – केश स्टडी भोजनावकाश छात्र छात्राओं का मानसिक स्वास्थ्य छात्र छात्राओं का मानसिक स्वास्थ्य–शिक्षाधिकारियों की भूमिका
01.03..2025	09.45–10.00 10.00–11.30 11.30–01.00 1.00–2.00 2.00–3.30 3.30–5.00	प्रार्थना,पूर्व दिवस की आख्या का प्रस्तुतीकरण तनाव प्रबंधन समय प्रबंधन भोजनावकाश सामुदायिक सहभागिता का नेतृत्व सामुदायिक सहभागिता में शिक्षाधिकारियों की भूमिका
02.03..2025		रविवार
03.03..2025	09.45–10.00 10.00–11.30 11.30–01.00 1.00–2.00 2.00–3.30 3.30–5.00	प्रार्थना,पूर्व दिवस की आख्या का प्रस्तुतीकरण राष्ट्रीय एवं राज्य बाल संरक्षण आयोग मानवाधिकार आयोग भोजनावकाश न्यायालयवाद सूचना आयोग एवं राज्य सूचना आयुक्त का संवोधन
04.03..2025	09.45–10.00 10.00–11.30 11.30–01.00 1.00–2.00 2.00–3.30 3.30–5.00	प्रार्थना,पूर्व दिवस की आख्या का प्रस्तुतीकरण शैलेश मटियानी राज्य उत्कृष्ट शिक्षक पुरस्कार पं. दीन दयाल उपाध्याय योजना,तरू श्री पुरस्कार, बार्डर एरिया डेवलपमेंट प्लान भोजनावकाश माध्यमिक शिक्षा में संचालित अन्य योजनाए–शैक्षिक भ्रमण,ब साइकिल योजना आदि शिक्षा व शैक्षिक प्रशासन समूह कार्य / प्रस्तुतीकरण
05.03..2025	09.45–10.00 10.00–11.30 11.30–01.00 1.00–2.00 2.00–4.00 4.00–5.00	प्रार्थना,पूर्व दिवस की आख्या का प्रस्तुतीकरण विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्तियाँ विज्ञान महोत्सव एवं इन्सपायर अवार्ड भोजनावकाश निर्देशन एवं परामर्श सेवाए तथा बालसखा डिजिटल शिक्षा
06.03..2025	09.45–10.00 10.00–11.30 11.30–01.00 1.00–2.00 2.00–3.30	प्रार्थना,पूर्व दिवस की आख्या का प्रस्तुतीकरण राजीव गॉधी नवोदय विद्यालय कस्तूरबा गॉधी आवासीय विद्यालय/नेताजी सुभाष चन्द्र बोस छात्रावास भोजनावकाश पी.एम. श्री स्कूल पी.एम.पोषण योजना का प्रभावी संचालन
	3.30–5.00	

07.03..2025	09.45–10.00 10.00–11.30 11.30–01.00 1.00–2.00 2.00–3.30 3.30–5.00	प्रार्थना,पूर्व दिवस की आख्या का प्रस्तुतीकरण राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 भाग 1,3,4 भोजनावकाश निपुण भारत अभियान राज्य पाठ्यक्रम पाठ्यचर्या
08.03..2025		द्वितीय शनिवार
09.03..2025		रविवार
10.03..2025	09.45–10.00 10.00–11.30 11.30–01.00 1.00–2.00 2.00–4.30 4.30–5.00	प्रार्थना,पूर्व दिवस की आख्या का प्रस्तुतीकरण विद्यालय सुरक्षा व आपदा प्रबंधन विद्यालय सुरक्षा व आपदा प्रबंधन भोजनावकाश विद्यालय आपदा योजना निदेशक माध्यमिक शिक्षा का संबोधन
11.03..2025	09.45–10.00 10.00–11.30 11.30–01.00 1.00–2.00 2.00–3.30 3.30–5.00	प्रार्थना,पूर्व दिवस की आख्या का प्रस्तुतीकरण विद्यालय एवं कार्यालय निरीक्षण–प्रशासनिक कार्यालय एवं विद्यालय निरीक्षण– प्रबंधकीय भोजनावकाश विद्यालय निरीक्षण एवं नामिका निरीक्षण– अकादमिक अतिथि वक्ता,निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा
12.03..2025	09.45–10.00 10.00–11.30 11.30–01.00 1.00–2.00 2.00–3.30 3.30–5.00	प्रार्थना,पूर्व दिवस की आख्या का प्रस्तुतीकरण शिक्षा विभाग –पोर्टल विभागीय व अन्य विभागो से समन्वयन भोजनावकाश कार्मिको का प्रोफेशनल डेवलपमेंट विद्या समीक्षा केन्द्र
13.03..2025		होली अवकाश
14.03..2025		होली अवकाश
15.03..2025	09.45–10.00 10.00–11.30 11.30–01.00 1.00–2.00 2.00–3.30 3.30–5.00	प्रार्थना,पूर्व दिवस की आख्या का प्रस्तुतीकरण पश्च पोषण प्रदान करना पश्च पोषण–समूह कार्य भोजनावकाश विद्यालयी शिक्षा एवं अकादमिक निदेशालय के गुणवत्तापरक कार्य अपर निदेशक माध्यमिक शिक्षा का संबोधन
16.03..2025		रविवार
17.03..2025	09.45–10.00 10.00–11.30 11.30–01.00 1.00–2.00 2.00–3.30 3.30–5.00	प्रार्थना,पूर्व दिवस की आख्या का प्रस्तुतीकरण कार्मिको के सेवानिवृतिक देयको के त्वरित भुगतान हेतु निर्देश भोजनावकाश कौशलम् पी.एम. ई.–विद्या प्रतिभागियों का प्रस्तुतीकरण
18.03..2025	09.45–10.00 10.00–11.30 11.30–01.00 1.00–2.00 2.00–3.30 3.30–5.00	प्रार्थना,पूर्व दिवस की आख्या का प्रस्तुतीकरण क्षेत्रीय प्रशिक्षण हेतु प्रोजेक्ट क्षेत्रीय प्रशिक्षण व प्रोजेक्ट कार्य हेतु निर्देश भोजनावकाश समापन संबोधन समापन

इस प्रकार उपर्युक्त प्रशिक्षण कार्ययोजना से स्पष्ट है कि संस्थान के द्वारा प्रशिक्षु अधिकारियों के प्रशिक्षण हेतु एक व्यापक कार्य योजना तैयार कर इसे अद्यतन संचालित किया जा रहा है।

प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में उप शिक्षा अधिकारियों के कार्य एवं दायित्व संबंधी सभी विषयों का समावेश किया गया है। प्रशिक्षण में कार्यदायित्व के साथ अन्य विभागीय समन्वयन आदि पर भी परिचर्चाएँ की गई ताकि प्रतिभागी कारपोरेट सोशल रिस्पान्सिविलिटी आदि का प्रयोग कर विद्यालयों में संसाधन विकास आदि कार्य कर सके।

पीएम श्री विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों का अभिमुखीकरण प्रशिक्षण

पी.एम. श्री स्कूल (प्राइम मिनिस्टर स्कूल फॉर राइजिंग इंडिया) भारत सरकार के द्वारा केंद्र प्रायोजित योजना है। इस पहल का उद्देश्य केंद्र सरकार, राज्य सरकारों, नवोदय विद्यालय समिति, केंद्रीय विद्यालय समिति तथा स्थानीय निकायों के द्वारा संचालित 14500 से अधिक विद्यालयों को पी.एम. श्री स्कूलों के रूप में विकसित करना है। इन विद्यालयों में छात्र–छात्राओं की बेहतर देखभाल के साथ एक समावेशी वातावरण में सीखने का माहौल तैयार करना है। इन विद्यालयों में जहां एक ओर सुरक्षित और प्रेरक सीखने का माहौल है वहीं सीखने के अनुभवों की विशिष्ट श्रृंखला पेश की जाती है। इन विद्यालयों में प्रभावी सीखने का माहौल व वातावरण को तैयार करने के लिए अच्छा भौतिक बुनियादी ढांचा तथा उपयुक्त संसाधन उपलब्ध करवाए जाएंगे। पी.एम. श्री विद्यालय, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सिद्धांतों पर आधारित हैं अतः यह विद्यालय छात्र–छात्राओं को इस प्रकार पोषित करेंगे कि यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 द्वारा परिकल्पित समावेशी क्षमता–मूलक और बहुलतावादी समाज के निर्णय के लिए उत्पादक तथा योगदान देने वाले योग्य नागरिक बन सकें। यह परिकल्पित किया गया है कि इस योजना से 20 लाख से अधिक छात्र–छात्राएँ लाभान्वित होंगे। पी.एम. श्री विद्यालय योजना शिक्षा की गुणवत्ता के विभिन्न आयामों की समझ को बढ़ावा देंगे। वर्ष 2022–23 से वर्ष 2026–27 तक 5 वर्षों

में इस योजना को क्रियान्वित किए जाने का प्रस्ताव रखा गया है।

पीएम श्री विद्यालयों की विशेषताएँ

- इन विद्यालयों में सिखाने हेतु समावेशी व आनंददायक वातावरण है।
- इन विद्यालयों में उच्च गुणवत्तापरक शिक्षा प्रदान की जाएगी।
- इन विद्यालयों में सीखने के अच्छे वातावरण निर्माण हेतु अनुकूल भौतिक व बुनियादी ढांचा तथा संसाधन उपलब्ध करवाए जाएँगे।
- इन विद्यालयों में छात्रों को 21वीं सदी के कौशल सिखाए जाएँगे।
- शिक्षण पद्धति अनुभवात्मक, पूछताछ पर आधारित और विद्यार्थी केंद्रित होगी।
- विद्यालयों में आधुनिक प्रयोगशालाएँ, कंप्यूटर लैब, समेकित विज्ञान लैब, व्यावसायिक लैब, अटल टिंकरिंग लैब व अन्य सुविधाएँ होंगी।
- विद्यालयों का चयन राज्य सरकारों द्वारा पोषित विद्यालय, केंद्र सरकार, स्थानीय निकाय, नवोदय विद्यालय तथा केंद्रीय विद्यालय समिति द्वारा संचालित विद्यालय पी.एम.श्री योजना में सम्मिलित होने हेतु तीन चरण की प्रक्रिया पूर्ण करते हैं।

प्रथम चरण– केंद्र के साथ समझौता ज्ञापन।
द्वितीय चरण– यू डायस डाटा की आधार पर विद्यालयों की पहचान।

तीसरा चरण– पात्र स्कूल कुछ निश्चित मानदंड पूर्ण करने हेतु प्रतिस्पर्धा करते हैं।

उत्तराखंड में पी.एम.श्री योजना

उत्तराखंड राज्य में अद्यतन 250 विद्यालय, जिनमें प्राथमिक, उच्च प्राथमिक तथा माध्यमिक विद्यालय हैं, को पी.एम. श्री विद्यालय के रूप में विकसित किया जा चुका है।

आधार–

- समग्र शिक्षा।
- विद्यालय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का क्रियान्वयन।
- आधुनिक अवसंरचना।
- पर्यावरण अनुकूल दृष्टिकोण–सौर ऊर्जा, पानी की बचत, कचरा प्रबंधन।
- शिक्षक प्रशिक्षण और विकास।
- समुदाय की भागीदारी।

प्रधानाचार्यों का प्रशिक्षण 2024–25

पी.एम. श्री विद्यालयों में संस्थाध्यक्षों के प्रशिक्षण हेतु संस्थान को समग्र शिक्षा द्वारा बजट उपलब्ध करवाया जा चुका है। वर्ष 2024–25 में संस्थान द्वारा एक प्रशिक्षण चक्र संपन्न करवाया गया है। प्रशिक्षण में राज्य के माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत 40 प्रधानाचार्यों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

प्रशिक्षण विषयों का चयन–

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में वर्णित सिद्धांतों को पीएम श्री विद्यालयों में संचालित करने के दृष्टिगत प्रशिक्षण विषयों का चयन करना अति महत्वपूर्ण कार्य रहा। इस हेतु राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान के द्वारा समग्र शिक्षा, एस.सी.ई.आर.टी, विद्यालयी शिक्षा निदेशालय तथा कुछ प्रधानाचार्यों की समन्वयन से पांच दिवसीय प्रशिक्षण हेतु निम्नलिखित विषय चयनित किए गए–

पी.एम.श्री विद्यालय–

- परिचय, उद्देश्य, लक्ष्य एवं गुणवत्ता आश्वासन।
- पाठ्यक्रम का शिक्षाशास्त्र एवं मूल्यांकन।
- क्रियाशीलता व विद्यालय सौन्दर्यीकरण।
- मानव संसाधन एवं विद्यालय नेतृत्व।
- समावेशी प्रयास व लैंगिक समानता।
- प्रबंधन निगरानी व शासन।
- तनाव प्रबंधन।
- अधिगम सुधार व छात्र अधिगम हेतु दिशा निर्धारण।
- शिक्षा शास्त्रीय नेतृत्व का कार्य व्यवहार।
- छात्र अधिगम का सुनिश्चय।
- शिक्षा शास्त्रीय नेतृत्व पर क्षमता निर्णय।
- विद्यालय की प्रति अपनेपन का पोषण और सामाजिक आर्थिक संबंधों को मजबूत बनाना।
- छात्र–छात्राओं का मानसिक व शारीरिक विकास।
- स्वयं का विकास।
- साझेदारी का नेतृत्व डिजिटल शिक्षा।
- आत्मरक्षा।
- पी.एम. श्री स्कूल विद्यालय विकास योजना।
- व्यावसायिक शिक्षा।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति– 2020।
- विद्यालय सुरक्षा व आपदा प्रबंधन

प्रधानाध्यापकों/प्रधानाचार्यों का सतत व्यावसायिक विकास प्रशिक्षण

पृष्ठभूमि :–

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विद्यालय प्रमुखों के लिए विद्यालयी नेतृत्व एवं प्रबंधन पर प्रतिवर्ष अनिवार्य 50 घंटे के सत्त व्यावसायिक विकास प्रशिक्षण की अनुशंसा की गई है। विद्यालयी शिक्षा के अंतर्गत प्रत्येक स्तर पर विभिन्न अधिकारियों के कर्तव्य एवं दायित्व निर्धारित हैं। राजकीय सेवा में प्रवेश करने के उपरांत पदोन्नति तथा पदस्थापना की प्रक्रिया के अन्तर्गत विभिन्न संवर्गीय कार्मिकों की भूमिकाओं में परिवर्तन होता रहता है। इसके कारण व्यक्ति के कार्य एवं दायित्वों में भी परिवर्तन होता रहता है। उत्तराखण्ड राज्य में माध्यमिक विद्यालयों में प्रधानाध्यापक तथा प्रधानाचार्य के पद अद्यतन पदोन्नति के माध्यम से भरे जाने की व्यवस्था है। प्रधानाध्यापक पद पर पदोन्नति एल.टी.संवर्गीय तथा प्रवक्ता संवर्गीय शिक्षकों की पदोन्नति से भरे जाते हैं। संस्थाध्यक्ष के रूप में प्रधानाध्यापक/प्रधानाचार्य की भूमिका को अब एक कुशल प्रबंधन, नेतृत्वकर्ता के रूप में देखा जा रहा है। संस्थाध्यक्ष को समस्त विद्यालयी क्रियाकलापों (अकादमिक, प्रशासनिक एवं वित्तीय) में दक्ष होना आवश्यक है तभी वे अपनी भूमिका का जिम्मेदारी पूर्वक निर्वहन कर पाएँगे व उनकी स्वीकार्यता बढ़ेगी। उक्त को दृष्टिगत रखते हुए सीमैट के द्वारा प्रधानाचार्यों/प्रधानाध्यापकों को उनके परिवर्तित कार्य एवं उत्तरदायित्वों के अनुरूप निम्नलिखित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु विभिन्न चक्रों/फेरों में प्रशिक्षण दिया गया :–

उद्देश्य :–

- पदोन्नत प्रधानाध्यापको/प्रधानाचार्यो को विभिन्न प्रकार के अकादमिक क्रियाकलापों की जानकारी प्रदान करना।
- राष्ट्रीय स्तर पर संचालित विभिन्न प्रकार के शैक्षिक नवाचारों, लर्निंग आउटकम्स की जानकारी प्रदान करना

- पदोन्नत प्रधानाध्यापकों/प्रधानाचार्यो की शैक्षिक नेतृत्व व प्रबंधन क्षमता का विकास करना।
- शिक्षा विभाग में संचालित विभिन्न नवीन योजनाओं की जानकारी प्रदान करना।
- वेतन निर्धारण एवं विभिन्न वित्तीय प्रावधानों से अवगत कराना।
- अवकाश नियम, कर्मचारी आचार संहिता एवं अनुशासनात्मक कार्यवाही की जानकारी प्रदान करना।
- सेवानिवृत्तिक लाभ, अंशदायी पेंशन योजना, सामान्य भविष्य निधि एवं पारिवारिक पेंशन के संबंध में जानकारी प्रदान करना।
- सेवा नियमावली एवं सेवा की सामान्य शर्तों को स्पष्ट करना।
- कार्यालय प्रबंधन संबंधी जानकारी एवं कार्यालय पंजिकाओं/अभिलेखों के रखरखाव में दक्ष करना।
- आयकर गणना एवं ऑडिट संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करना।
- एक विद्यालय नेतृत्वकर्ता के रूप में संस्थाध्यक्ष को तैयार करना ताकि वह छात्र–शिक्षकों सहयोग से सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से शैक्षिक गुणवत्ता संवर्द्धन कर सकें।

- विद्यालयों में संसाधन विकास के विभिन्न स्रोतो के प्रति अभिमुखीकरण करना।
- कार्यालय प्रबंधन संबंधी विभिन्न प्रकार के अभिलेखों के बारे में स्पष्ट करना।
- अकादमिक,शोध एवं प्रशिक्षण निदेशालय से संचालित विभिन्न प्रकार के नवाचारी क्रियाकलापों तथा कार्यक्रमों को स्पष्ट करना।

उक्त उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु प्रधानाध्यापकों/प्रधानाचार्यों का सतत व्यावसायिक विकास प्रशिक्षण निम्नलिखित चार चक्रों में सम्पन्न किया गया–

प्रथम चक्र–29 जुलाई 2024 से 02 अगस्त 2024

द्वितीय चक्र–20 अगस्त 2024 से 24 अगस्त 2024

तृतीय चक्र–2 सितम्बर 2024 से 06 सितम्बर 2024

चतुर्थ चक्र–23 सितम्बर 2024 से 27 सितम्बर 2024

पंचम् चक्र–30 सितम्बर 2024 से 04 अक्टूबर 2024

प्रकरण :– उक्त पाँच दिवसीय प्रशिक्षण में लक्ष्य समूह की आवश्यकताओं के अनुरूप निम्नवत प्रकरण रखे गए थे :–

1. कार्यालय प्रबंधन –कार्यालयी अभिलेखों का रखरखाव।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति –2020।
3. IFMS।
4. विद्यालयी शिक्षा पोर्टल।
5. शिक्षा विभाग में संचालित विभिन्न योजनाएँ।
6. छात्रवृत्तियों का रखरखाव।
7. आयकर गणना।
8. विद्यालय सुरक्षा एवं आपदा प्रबंधन।
9. अधिप्राप्ति नियमावली 2008।
10. तनाव प्रबंधन।
11. शैक्षिक नेतृत्व एवं प्रबंधन।
12. समय प्रबंधन।
13. अवकाश नियम, सेवा नियमावली आदि।
14. निदेशालय अकादमिक, शोध एवं प्रशिक्षण द्वारा संचालित गुणवत्तापरक क्रियाकलाप।
15. आनन्दम कार्यक्रम।
16. कौशलम एवं व्यावसायिक शिक्षा।
17. 21 वी सदी के कौशल।
18. कर्मचारी आचरण नियमावली।

प्रतिभागियों की प्रशिक्षण से अपेक्षाएँ व उनकी रूचि के क्षेत्र :– सीमैट द्वारा आयोजित प्रशिक्षणों में प्रतिभागियों से उनकी अपेक्षाओं व रूचियों के क्षेत्र अभिव्यक्त करने हेतु कहा जाता है। इससे यह पता चलता है कि प्रशिक्षण के उपरांत इनकी अपेक्षाओं की पूर्ति कहाँ तक हुई है। साथ ही हर व्यक्ति की रूचियाँ अलग–अलग होती हैं। आपसी समन्वय व सहयोग से प्रशिक्षण का वातावरण सहयोगात्मक बनाने का प्रयास किया जाता है। उक्त संबंधी सार निम्न है :–

1. प्रशिक्षण के उपरांत कार्यालय प्रबंधन के संबंध में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
2. आहरण वितरण अधिकारियों के कर्तव्य एवं दायित्व के बारे में समझ सकेंगे तथा उनका प्रभावशाली ढंग से क्रियान्वयन कर सकेंगे।
3. विभिन्न प्रकार के नवाचारी कार्यक्रमों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
4. प्रशिक्षण के उपरांत विद्यालय संचालन में सहायता मिलेगी।
5. वित्त से संबंधित अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त होगी।
6. प्रधानाचार्य के रूप में नवीन भूमिका का निर्वहन कुशलता पूर्वक कर सकेंगे।
7. विद्यालयों का प्रभावी संचालन कर छात्र संप्राप्ति में वृद्धि कर सकेंगे।
8. विद्यालय के साथ सभी हित धारकों के साथ प्रभावी समन्वयन कर सकेंगे।

रूचि के क्षेत्र :– अभिव्यक्ति के आधार पर उनकी रूचि के क्षेत्र निम्नवत हैं –

लेखन, पठन–पाठन, अध्ययन, अध्यापन, खेलकूद, संगीत, सांस्कृतिक क्रियाकलाप, गाइडेन्स एण्ड काउन्सिलिंग, शैक्षिक भ्रमण, विज्ञान विषयक कार्यक्रम एवं संगोष्ठी, अनुशासन की समस्याओं का अध्ययन निदान एवं उपचार, शैक्षिक वातावरण का निर्माण आदि।

संस्थाध्यक्ष के रूप में विद्यालय के प्रति विजन – विद्यालय के प्रति विजन को प्रतिभागियों द्वारा निम्न प्रकार से स्पष्ट किया गया :–

- विद्यालय के सर्वांगीण विकास के लिए समस्त पहलुओं के विकास पर ध्यान।
- एन.सी.एफ.–2005 के अनुरूप विद्यालयों को आनंदालय के रूप में विकसित करना।
- विद्यालय को इस प्रकार होना चाहिए कि यहाँ आने पर विद्यार्थी अपने ज्ञान की वृद्धि कर सकें एवं उन्हें ज्ञान के सृजन में आनंद की अनुभूति हो।
- छात्रों को इस योग्य बनाना कि वे समस्याओं की पहचान व समाधान करने में सक्षम हो सकें।
- विद्यालय भवन में प्रयोगशालाएँ एवं पुस्तकालय महत्वपूर्ण कारक हैं, अतः इनका महत्तम उपयोग होना सबसे प्रमुख कारक है।
- विद्यालय में छात्रों का नैतिकता का विकास होना चाहिए जिससे कि वह जीवन के जिस क्षेत्र में भी जाएँ सफलता को अर्जित कर सकें।
- विद्यालय में शिक्षण को भी गतिविधि आधारित होना चाहिए। जिससे कि छात्र स्वयं ही सीखने की भावना से प्रेरित होंगे।
- गुणवत्तापरक शिक्षा को दिया जाना सबसे महत्वपूर्ण घटक है।
- टीम भावना से ही विद्यालय में कार्य किया जाना चाहिए।
- शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया आनन्ददायी होनी चाहिए।

प्रशिक्षण पूर्व एवं पश्चात् परीक्षण :– प्रतिभागियों के पूर्व प्रकरणगत ज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षण पूर्व (Pre Test) एवं प्रशिक्षण के उपरांत सीखे गए ज्ञान व प्राप्त जानकारी को मूल्यांकित करने हेतु प्रशिक्षण पश्चात (Post Test) परीक्षण लिया गया। उक्त विभिन्न चक्रों में परिणाम क्रमशः निम्नवत है –

प्रथम चक्र	=	18.75%
द्वितीय चक्र	=	21.34%
तृतीय चक्र	=	24.65%
चतुर्थ चक्र	=	23.69%
पंचम् चक	=	24.65%

प्रशिक्षणोपरांत परीक्षण –

प्रथम चक्र	=	69.75%
द्वितीय चक्र	=	70.35%
तृतीय चक्र	=	74.85%
चतुर्थ चक्र	=	73.67%
पंचम् चक्र	=	75.64%

1. शिक्षकों को देय विशेष अवकाश की संख्या है-

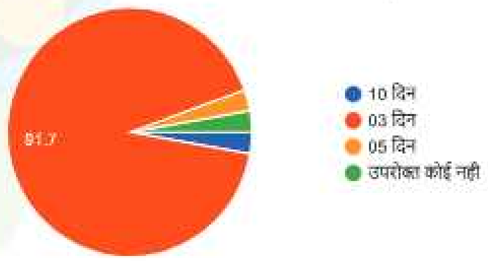

2. IFMS का पूरा नाम है-

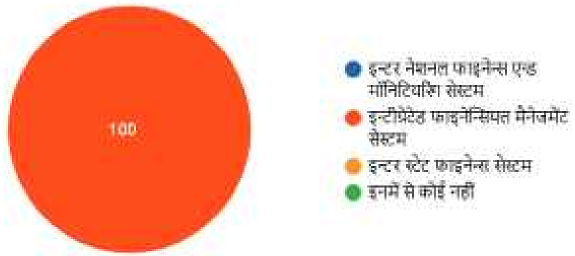

3. बिना कोटेशन क्रय सीमा है-

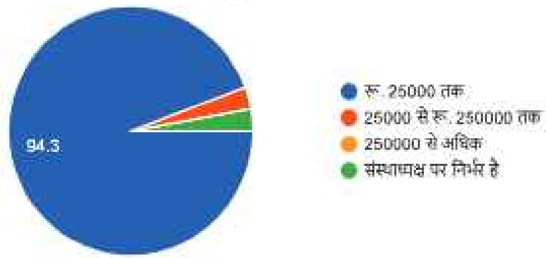

4. कम्प्यूटर का क्रय किस मद से करेंगे-

5. बाल्य देखभाल अवकाश की न्यूनतम अवधि है-

6. असाधारण अवकाश की अधिकतम अवधि हैं-

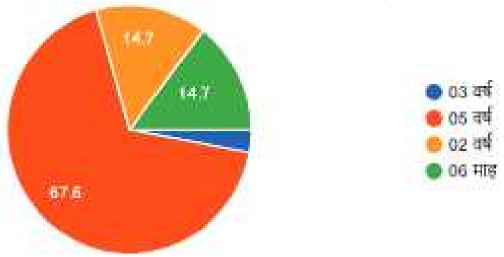

7. बाल्य देखभाल अवकाश पूरे सेवाकाल में अधिकतम कितने दिनो तक अनुमन्य किया जा सकता है।

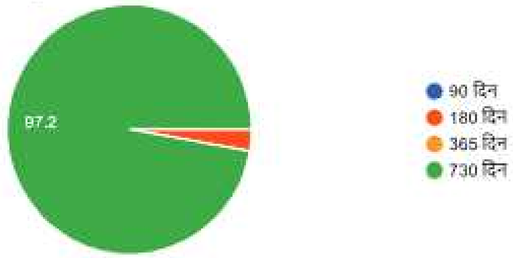

8. कोविड–19 के दृष्टिगत सूचना संप्रेषण हेतु उपयुक्त साधन है–

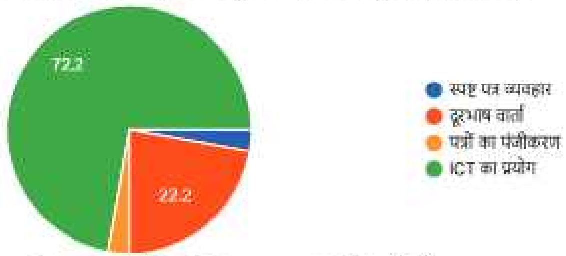

9. लोक सूचना अधिकारी केद्वारा सूचना देने केअवधि है-

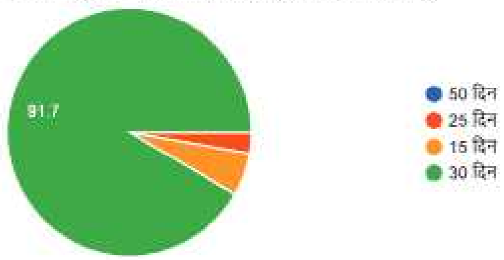

10. प्रशिक्षण करवाने हेतु किस मद से व्यय करेंगे-

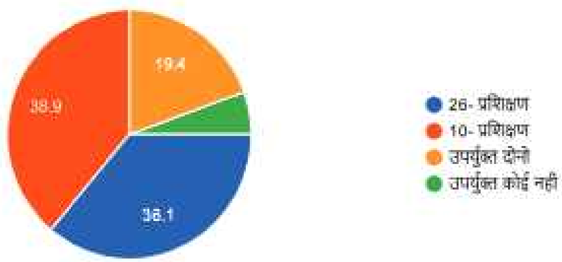

11. अविहित पत्र लिखा जाता है -

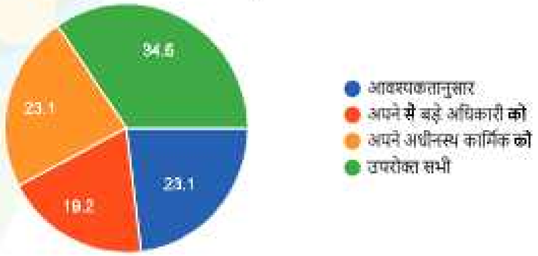

12. दीक्षा पोर्टल है -

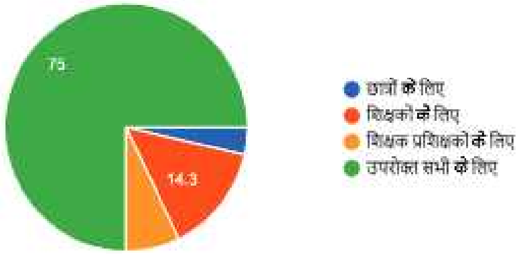

13. राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 के अध्यक्ष हैं -

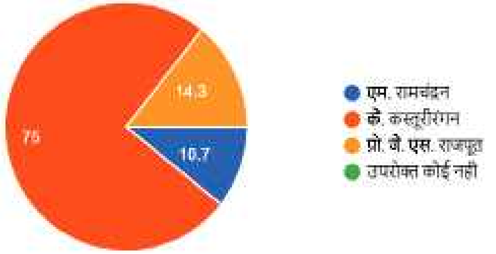

14. कर्मचारियों की क्षमता संवर्द्धन लिए आवश्यक है।

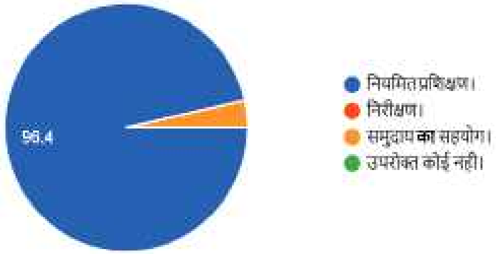

15. दंड के विरुद्ध अपील कितने दिनों के अंदर की जानी आवश्यक है -

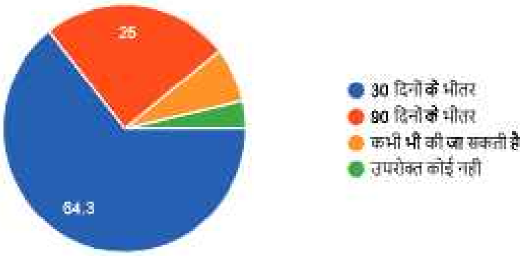

16. अवकाश नियमो का उल्लेख है-

17. उत्तराखण्ड राज्य के बजट के छठे खण्ड में है-

18. किस कार्य हेतु हमें उच्च प्राथमिकता देनी होती है -

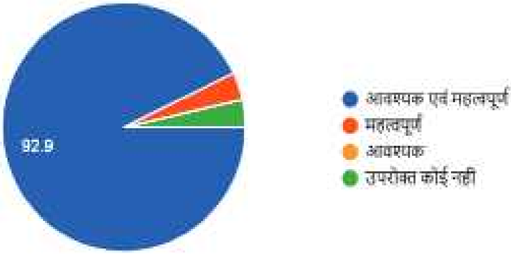

19. NIPUN भारत मिशन का उद्देश्य है-

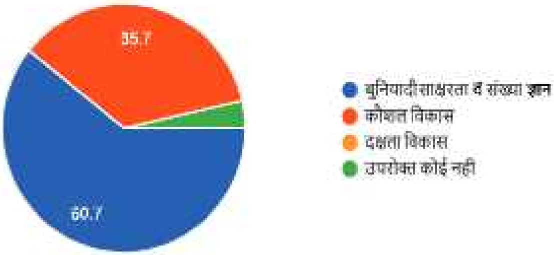

20. 21वीं सदी के 4C's (Learning Skill) में नही है -

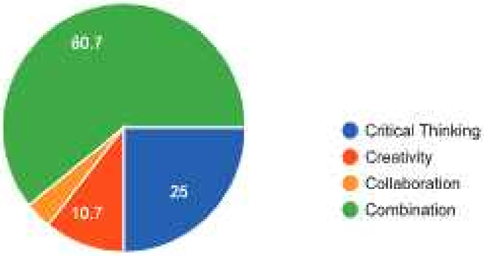

प्रशिक्षण पूर्व परीक्षण का अभिप्राय किसी प्रशिक्षु के संबंध में या उनकी किसी विषयवस्तु से संबंधी जानकारी प्राप्त करना नही होता है अपितु इसका उद्देश्य प्रशिक्षण की आवश्यकता से संबंधित है साथ पूर्व परीक्षण के उपरान्त प्रशिक्षण पश्च परीक्षण के आधार पर प्रशिक्षण की उपादेयता तथा प्रशिक्षण की प्रभावशीलता का पता भी लग जाता है अतः प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षण पूर्व परीक्षण तथा पश्च परीक्षण शासित किया जाता है।

प्रशिक्षण पूर्व मूल्यांकन के आधार पर निष्कर्ष निकला कि 05 चक्रों का औसत 22.61 रहा अतः इस विश्लेषण से स्पष्ट होता है पूर्व में शिक्षण कार्य से संबंध रखने वाले नवीन पदोन्नत प्रधानाध्यापकों तथा प्रधानाचार्यों, को वित्तीय प्रबंधन तथा प्रशासनिक व्यवस्था आदि की जानकारी दी जानी आवश्यक थी। उक्त के दृष्टिगत माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत संस्थाध्यक्षों को इस प्रशिक्षण की नितान्त आवश्यकता थी। जिसके आधार पर प्रशिक्षण कराना उचित था। प्रशिक्षण पश्चात मूल्यांकन से यह निष्कर्ष निकला कि 05 चक्रों का औसत 74.80 रहा। अतः स्पष्ट है कि प्रतिभागियों के संप्राप्ति स्तर में सुधार हुआ है। इसे अपेक्षित स्तरों पर (शत प्रतिशत) लाने के लिए सीमैट कार्यरत है।

प्रशिक्षण प्रविधि :– प्रशिक्षण के दौरान बाह्य संदर्भदाता (गेस्ट फैकल्टी) व आंतरिक संदर्भदाता (इन हाउस फैकल्टी) द्वारा विभिन्न सत्रों में व्याख्यान, केस स्टडी, सामूहिक गतिविधि, विडियो क्लिपिंग, समूह चर्चा परिचर्चा तथा प्रतिभागियों द्वारा प्रतिवेदन प्रस्तुति आदि प्रशिक्षण प्रविधियों का प्रयोग किया गया। साथ ही प्रशिक्षण अवधि में प्रतिभागियों के द्वारा अपने विद्यालयों में किये जा रहे अच्छे, प्रभावशाली तथा नवाचारी क्रियाकलापों की शेयरिंग भी की गई।

प्रशिक्षण फीडबैक व मूल्यांकन :– प्रशिक्षण के अंत में प्रशिक्षण फीडबैक व मूल्यांकन प्रपत्र में प्रतिभागियों से चौदह बिन्दुओं के सापेक्ष उत्कृष्ट, अति उत्तम, उत्तम एवं सामान्य के अंतर्गत उनकी प्रतिक्रियाएँ व्यक्त करने को कहा गया था। इनका समग्र परिणाम बिन्दुवार निम्नवत है–

क्र.स.	बिन्दु	उत्कृष्ट	अति उत्तम	उत्तम	सामान्य
1	भूमिका प्रस्तुतीकरण	62.85	34.28	2.85	–
2	सहायक प्रशिक्षण सामग्री	39.57	46.14	14.28	–
3	विषय वस्तु	53.57	29.28	10.57	6.57
4	सम्प्रेषण कौशल	70.57	20.00	09.42	–
5	प्रशिक्षण अवधि	49.28	30.71	15.14	4.85
6	प्रतिभागी सहभागिता	45.71	44.00	10.28	–
7	समूह कार्य एवं गतिविधि	50.71	22.30	27.57	–
8	समय प्रबंधन	60.14	31.28	4.57	4.00
9	प्रशिक्षक विषय ज्ञान	68.85	22.71	5.85	2.85
10	उद्देश्य प्राप्ति	50.71	35.85	09.42	2.85
11	प्रशिक्षण सामग्री	60.85	24.70	07.42	6.85
12	आवास व्यवस्था	53.71	40.57	5.71	–
13	भोजन व्यवस्था	45.85	30.14	20.00	4.00
14	सीमैट अभिकर्मियों का व्यवहार	76.28	12.28	09.21	2.21

चौदह बिन्दुओं का मूल्यांकन करने के पश्चात यह निष्कर्ष निकला कि उत्कृष्ट एवं अति उत्तम को मिलाकर 80% से अधिक के बिन्दु भूमिका प्रस्तुतीकरण, सहायक प्रशिक्षण सामग्री विषय वस्तु सम्प्रेषण कौशल, प्रतिभागी सहभागिता, समूह कार्य एवं गतिविधि, विषय ज्ञान, उद्देश्य प्राप्ति, प्रशिक्षण सामग्री, आवास व्यवस्था एवं सीमैट अभिकर्मियों का व्यवहार रहा। जबकि 80% से कम बिन्दु प्रशिक्षण अवधि, समूह कार्य एवं गतिविधि एवं भोजन सामग्री रही। अतः भविष्य में सीमैट में आयोजित होने वाले प्रशिक्षणों में उक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखकर कमियों को दूर करने का प्रयास किया जाएगा।

प्रशिक्षण के संदर्भ में प्रतिभागियों द्वारा दिए गए सुझावों का सार निम्नवत है –

1. प्रशिक्षण के दौरान आवश्यक प्रपत्रों यथा वित्तीय क्रियाकलापों की जानकारी प्रपत्र भरवाकर करवायी जानी चाहिए।
2. प्रशिक्षण को निश्चित समयांतराल के पश्चात रिफ्रेशर कोर्स के रूप में दिया जाना चाहिए।
3. प्रशिक्षण अवधि को बढ़ाया जाना चाहिए।
4. प्रशिक्षण के दौरान समूह चर्चा पर अधिक जोर दिया जाना चाहिए।
5. समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों का प्रशिक्षण होना चाहिए।
6. प्रत्येक प्रकरण की समयावधि को बढाया जाना चाहिए जिससे कि जिज्ञासाएँ पूरी हो सके।
7. प्रशिक्षण के दौरान गतिविधियाँ अधिक करवायी जानी चाहिए।
8. प्रतिवर्ष एक बार अवश्य प्रधानाचार्यो तथा प्रधानाध्यापकों के लिए प्रशिक्षण आयोजित किया जाना चाहिए।
9. कम्प्यूटर तथा आई.सी.टी. पर भी प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
10. प्रशिक्षण शिक्षण सत्र के आरम्भ में करवाये जाने चाहिए ताकि प्रशिक्षण का लाभ शिक्षण सत्र के दौरान प्राप्त हो सके।

समरकैम्प

प्रायः देखा गया है कि वर्षभर अध्ययन तथा कक्षोन्नति के उपरान्त छात्र–छात्राए अपने अभिभावकों के साथ विभिन्न प्रकार के पर्यटक स्थलों में घूमने चले जाते है। कुछ अभिभावक अपने पाल्यों के लिए इस अवधि में विभिन्न प्रकार की गतिविधियों यथा खेलकूद, लेखन, संगीत, नृत्य, गायन आदि कार्यक्रमों का अभ्यास कराते है परन्तु सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत मलिन वस्तियों के छात्र–छात्राए अवकाश की अवधि में इस प्रकार की गतिविधियों में भाग नही ले पाते है। इस समस्या के दृष्टिगत विगत कई वर्षो से निदेशालय, अकादमिक, शोध एवं प्रशिक्षण के द्वारा मलिन बस्तियों एवं सरकारी विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के लिए समर कैम्प का आयोजन करवाया जाता है।

दिनांक 28 मई 2024 जून से 05 जून 2024 तक निदेशक, अकादमिक शोध एवं प्रशिक्षण, उत्तराखण्ड के निर्देशन में राजीव गांधी नवोदय विद्यालय परिसर नालापानी देहरादून में आस–पास की बस्तियों में रहने वाले बच्चों के लिये समर कैम्प आयोजित किया गया कैम्प के उददेश्य निम्नवत् थे।

1. मलिन बस्तियों, झुग्गी झोपड़ियों तथा दैनिक मजदूरी करने वाले परिवार के बच्चों को शिक्षा के प्रति प्रेरित करना।
2. शासकीय विद्यालयों में पढ़ रहे बच्चों में स्वास्थ्य, सामाजिक एकता तथा परस्पर सहयोग की भावना विकसित करना।
3. बच्चों की नेसर्गिक प्रतिभाओं के प्रदर्शन के अवसर प्रदान करना।
4. बच्चों में संगीत, चित्रकला, साहित्यिक गतिविधियों के प्रति रुचि जागृत करना।
5. बच्चो में खेल–कूद के माध्यम से शारिरिक एवं मानसिक विकास के अवसर प्रदान करना।

उक्त उददेश्यों की प्राप्ति के लिये समरकैम्प में निम्नलिखित कार्यक्रम सम्पन्न किये गये।

(क) नामांकन–

समरकैम्प में आसपास की बस्तियों से निम्नवत् बच्चों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

क्र0 सं0	बस्ती/क्षेत्र का नाम	कुल नामांकन
1.	नालापानी	207
2.	लाडपुर	51
3.	ननूरखेड़ा	56
4.	वाणी विहार	5
5.	सुंदरवाला	63
6.	विद्या विहार	05
7.	आमवाला	1
8.	सोड़ा सरोली	2
9.	जाखन	4
10.	अन्य	99
कुल योग–		**493**

समर कैम्प में निम्नलिखित स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा सहयोग किया गया–

1. नाश्ता व भोजन–अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन, हसं कल्चरल सेन्टर, आसरा ट्रस्ट, अमेरिकन इण्डियन फाउण्डेशन, देहरादून।
2. लेखन एवं पाठय सामग्री – रूम टू रीड, लब्या फाउण्डेशन, ड्रीम–ए–ड्रीम, हंस फाउण्डेशन।
3. फोटोग्राफी वर्कशॉप, स्मृति चिन्ह–उद्यम लर्निंग फाउण्डेशन।
4. स्वास्थ्य परीक्षण शिविर–दून मेडिकल कालेज।
5. पेयजल–स्पोर्टस एवं कल्चरल डेवलपमेंट सोसाइटी, उत्तराखण्ड।
6. स्कूल बैग–राज्य परियोजना कार्यालय, समग्र शिक्षा।

इस समर कैम्प में विभिनन प्रकार के विशेषज्ञ शिक्षकों, तथा एस0सी0ई0आर0टी0, सीमैट व राजीव गांधी नवोदय विद्यालय तथा डायट देहरादून के अभिकर्मियों द्वारा विभिन्न गतिविधियों को सम्पन्न कराने में सहयोग दिया गया। शिक्षकों का विवरण निम्नवत है।

क.स.	विशेषज्ञ शिक्षक	संख्या
1	व्यायाम शिक्षक	05
2	योग शिक्षक	04
3	कला शिक्षक	04
4	साहित्य शिक्षक	03
5	संगीत शिक्षक	03
6	संकाय सदस्य एस.सी.ई.आर.टी.	15
7	संकाय सदस्य एवं स्टाफ अभिकर्मी सीमैट	समस्त स्टाफ
8	कार्मिक निदेशालय, अकादमिक, शोध एवं प्रशिक्षण	समस्त स्टाफ

(ख) पठन–पाठन एवं अन्य सामग्री वितरण – समर कैम्प में सभी बच्चों को ड्रॉइंगबुक, कलर बॉक्स, पेंसिल, रबर तथा स्कूल बैग उपलब्ध कराये गये। उपलब्ध करायी गयी सामग्री का प्रयोग चित्र–कला, कहानी लेखन आदि में किया गया।

(ग) योग एवं व्यायाम–

प्रतिदिन प्रातः 07 बजे से सभी बच्चों को योग प्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा योगाभ्यास कराया गया। इस दौरान बच्चों को शारीरिक व मानसिक रुप से सुदृढ़ बनानें के लिये व्यायाम भी सिखाये गये।

(घ) साहित्यिक गतिविधियाँ (कहानी एवं कविता लेखन)–

बच्चों द्वारा स्वयं कहानी एवं कविताओं का लेखन कार्य किया गया। इसके साथ ही बाल साहित्यकारों द्वारा बच्चों को कहानी एवं कविता लेखन से सम्बन्धित महत्वपूर्ण बिन्दुओं को बताया गया। समर कैम्प के अंतिम दिन बच्चों द्वारा स्वरचित कहानी व कविताओं को सभी प्रतिभागियों के साथ शेयर किया गया।

(ड.) चित्रकला– बच्चों को अपनी नैसर्गिक प्रतिभा को चित्रों के द्वारा प्रदर्शित करने के लिये चित्रकला का अभ्यास करवाया गया। इस हेतु

बच्चों को विभिन्न चित्रकलाओं एवं उनमें रंग के मिश्रण के बारे में बताया।

(च) **खेलकूदः**— समर कैम्प के अन्तर्गत बच्चों को उनकी अभिरुचि के अनुसार विभिन्न खेलों जैसे क्रिकेट, बॉलीबाल, फुटबाल एवं बैडमिंटन में प्रतिभाग करवाया गया। बच्चों को खेलने के नियमों के बारे में अवगत कराया गया तथा अच्छे खेलों के लिये विभिन्न खेल शिक्षकों के द्वारा टिप्स दिये गये जिसमें बच्चों की प्रतिभाओं में निखार आया।

(छ) **संगीत एवं नृत्यः**— समर कैम्प के अन्तर्गत बालक एवं बालिकाओं को संगीत एवं नृत्य के विभिन्न पहलुओं के बारे में अवगत कराया गया। दोनों विधाओं की आधारभूत जानकारियों के साथ ही संगीत एवं नृत्य का अभ्यास कराया गया। संगीत के माध्यम से विभिन्न प्रार्थना एवं देशभक्ति गीतों का अभ्यास करवाया गया।

(ज) **स्वास्थ्य परीक्षणः**— समर कैम्प में बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण कर उन्हें निःशुल्क उपचार एवं दवाईयां भी वितरित की गयी। समर कैम्प के अन्तिम दिन विभिन्न प्रतिभागियों को अपने क्षेत्रों में अग्रिम रहने पर पुरस्कृत किया गया। निदेशक, अकादमिक, शोध एवं प्रशिक्षण द्वारा सभी छात्र—छात्राओं को विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने पर पुरस्कृत किया गया।

(झ) **रिपोर्टिंगः**— बच्चों द्वारा समरकैम्प में आये हुए अतिथियों का साक्षात्कार, कृत क्रियाकलापों की वीडियो रिकार्डिंग करते हुए एक लघु फिल्म का निर्माण किया गया।

कार्यक्रम का शैक्षिक महत्व

कार्यक्रम को प्रभावी बनाने हेतु कार्यक्रम की प्रत्येक गतिविधि का अनुश्रवण, निरीक्षण निदेशक अकादमिक, शोध एवं प्रशिक्षण के द्वारा किया गया ताकि कार्यक्रम प्रभावी बन सके तथा प्रतिभागी छात्र—छात्राएँ आनन्दमय वातावरण में अपनी रूचि के अनुसार गतिविधियों में प्रतिभाग कर सकें। अतः कार्यक्रम के उपरान्त यह अपेक्षा की जाती है कि छात्र—छात्राएं भविष्य में अपनी रूचि के अनुसार विभिन्न प्रकार की गतिविधियों तथा विद्यालय में विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों में प्रतिभाग करेंगे।

इस प्रकार की गतिविधियों में प्रतिभागिता के फलस्वरूप छात्र छात्राओं में विभिन्न प्रकार के मूल्यों का विकास होगा। छात्र छात्राओं में विभिन्न प्रकार के 21 वी सदी के कौशलों यथा आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता, सहयोग, संचार, डिजिटल साक्षरता, समाधान, नवाचार, आत्म प्रबंधन, सामाजिक कौशल, नैतिकता, वैश्विक जागरूकता, सांस्कृतिक जागरूकता आदि के विकास हेतु इस प्रकार की गतिविधियां अत्यन्त लाभदायक होगी।

कार्यालय तथा वित्तीय प्रबंधन पर मिनिस्ट्रियल संवर्गीय कार्मिकों का प्रशिक्षण

पृष्ठभूमि :— कार्यालयी क्रियाकलापों के संपादन, अभिलेखों को तैयार करने तथा संरक्षित रखने में मिनिस्ट्रियल संवर्गीय कार्मिकों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। आहरण वितरण अधिकारियों के साथ वे इस कार्य में भी संस्थाध्यक्षों का सहयोग करते है। विद्यालयों तथा कार्यालयों में आहरण वितरण अधिकारियों के साथ मिनिस्ट्रियल संवर्गीय कार्मिक सूचना का अधिकार अधिनियम, क्रय प्रक्रिया तथा आनलाइन पेमेंट में महत्वपूर्ण कार्य करते है। कार्यालय में अभिलेख तैयार करना उन पर अंकना करना तथा तथा अधिष्ठान में कार्यरत सभी कर्मचारियों के प्रकरणों के निस्तारण,देयकों के भुगतान आदि की जिम्मेदारी का भी इन्हे निर्वहन करना पडता है। वर्तमान समय में छः प्रकार के पदो पर मिनिस्ट्रियल संवर्गीय कर्मिक कार्यरत हैं। जिनका विवरण निम्नवत है।

- कनिष्ठ सहायक।
- प्रवर सहायक।
- प्रधान सहायक।
- प्रशासनिक अधिकारी।
- वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी।
- मुख्य प्रशासनिक अधिकारी।

कार्यालयी क्रियाकलापों के सफल संचालन तथा शिक्षा विभाग के कार्मिको के विभिन्न प्रकार के प्रकरणों के निस्तारण एवं प्रभावी कार्यालयी कार्यप्रणाली विकसित करने के दृष्टिगत राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान के द्वारा मिनिस्ट्रियल संवर्गीय कार्मिकों के प्रशिक्षण के लिए निम्नवत प्रशिक्षण चक्र आयोजित किये गये।

प्रथम चक्र दिनांक–08 से 12 जुलाई 2024
(केवल मुख्य प्रशासनिक अधिकारी)
द्वितीय चक्र दिनांक–02 से 06 दिसम्बर 2024
तृतीय चक्र दिनांक–24 से 18 दिसम्बर 2024

लक्ष्य समूह :— उपर्युक्त प्रशिक्षणों हेतु निम्नवत मिनिस्ट्रियल संवर्गीय कार्मिकों को लक्ष्य समूह के रूप में निर्धारित किया गया :—

- विद्यालय तथा कार्यालयों में कार्यरत कनिष्ठ सहायक।
- विद्यालय तथा कार्यालयों में कार्यरत प्रवर सहायक।
- विद्यालय तथा कार्यालयों में कार्यरत प्रधान सहायक।
- विद्यालय तथा कार्यालयों में कार्यरत प्रशासनिक अधिकारी।
- विद्यालय तथा कार्यालयों में कार्यरत वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी।
- विद्यालय तथा कार्यालयों में कार्यरत मुख्य प्रशासनिक अधिकारी।

रूचि के क्षेत्र

प्रशिक्षण से पूर्व प्रतिभागियों से उनकी रूचि के क्षेत्रों के बारे में जानकारी प्राप्त की गई प्रतिभागियों के द्वारा कुछ प्रमुख रूचि के क्षेत्र निम्नवत व्यक्त किये गये है।

- लेखन, पठन–पाठन, अध्ययन, खेलकूद, संगीत, सांस्कृतिक क्रियाकलाप, बागवानी, कम्प्यूटर कार्य, सोशल मीडिया में सकियता आदि।

प्रशिक्षण विषय– जैसा कि पूर्व में स्पष्ट किया गया है कि कार्यालयों के प्रभावी कार्य निष्पादन, सूचनाओं के समय पर संप्रेषण, अभिलेखीकरण आदि को केंद्र में रखते हुए मिनिस्ट्रियल संवर्गीय कर्मचारियों के लिए सीमैट द्वारा उक्तानुसार प्रशिक्षण चक्र आयोजित किये गए। जिस प्रकार सभी आहरण–वितरण अधिकारी, वित्तीय तथा कार्यालयी क्रियाकलापों के संचालन हेतु उत्तरदायी हैं उसी प्रकार इस प्रकार के कार्यों को संपादित करने हेतु मिनिस्ट्रियल संवर्गीय कर्मचारियों की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। अतः कार्यालय तथा वित्तीय प्रबंधन हेतु निम्नलिखित प्रकरणों को प्राथमिकता दी गई है।

1. कार्यालय प्रबंधन।
2. कार्यालय संचालन तथा सामूहिक कार्य संपादन।
3. आहरण वितरण कार्य तथा आहरण वितरण अधिकारियों के कर्तव्य तथा उत्तरदायित्व।
4. वेतन निर्धारण।
5. जी.पी.एफ., पेंशन आगणन तथा भुगतान।
6. केन्द्र सहायतित योजनाओं में धनराशि का उपभोग।
7. आयकर।
8. अधिप्राप्ति नियमावली।
9. सेवा पंजिका निर्माण तथा सेवा पंजिका पर अंकना करना तथा उस पर विभिन्न प्रकार के प्रारूपों को संलग्न करना।
10. सूचना का अधिकार अधिनियम तथा समय पर सूचना प्रदान करना।
11. कर्मचारी आचरण नियमावली।
12. अनुशासनात्मक एवं दण्डात्मक कार्यवाहियाँ।
13. समय प्रबंधन।
14. तनाव प्रबंधन।
15. IFMS
16. विनिष्टीकरण नियमावली।
17. अवकाश नियम।
18. एजुकेशन पोर्टल।
19. विद्यालय सुरक्षा व आपदा प्रबंधन।
20. Government e-Marketing

जैम पोर्टल पर एक प्रभावी प्रशिक्षण

राज्य के शिक्षा विभाग के कार्यालयों एवं विद्यालयों मे गुणवत्तापरक सामग्री क्रय करने तथा प्रभावी क्रय प्रतिस्पर्धा के दृष्टिगत राज्य सरकार के द्वारा वर्ष 2022–23 से सामग्री जैम पोर्टल के माध्यम से क्रय करने का शासनादेश जारी किया जा चुका है। अतः जैम पोर्टल के माध्यम से गुणवत्तापरक सामग्री के क्रय हेतु संस्थान के द्वारा मिनिस्ट्रियल संवर्गीय कार्मिको को जैम पोर्टल का प्रशिक्षण प्रदान किया जा चुका है।

जैम पोर्टल का संक्षिप्त विवरण न्मिनवत है। भारत सरकार ने इस वर्ष 15 अगस्त तक 75 प्रतिशत सरकारी खारीदारी गवर्नमेंट ई–मार्केटप्लेस (जीईएम) से करने का लक्ष्य निर्धारित किया है। जबकि अगले साल मार्च के अंत तक 100 प्रतिशत सरकारी खरीद जेम पोर्टल से ही की जाएगी। प्रधानमंत्री के निर्देश पर यह लक्ष्य तय किया गया है जैम पोर्टल पर बिजनेस टू बिजनेस (बीटूबी) कारोबार होता है। वर्ष 2016 में जैम पोर्टल की स्थापना की गई थी। वित्त वर्ष 2021–22 में जैम पोर्टल पर 1,06,760 करोड़ रुपये का कारोबार किया गया जो वित्त वर्ष 2020–21 के कारोबार के मुकाबले 178 प्रतिशत अधिक रहा है। है।

यह विशेष रूप से सरकारी खरीद–फरोख्त के लिये बनाया गया है। सरकारी अधिकारियों द्वारा की जाने वाली खरीद के लिये यह एक गतिशील, स्वपोषित, प्रयोक्ता अनुकूल (User

Friendly) पोर्टल है, जहाँ सामान्य प्रयोग में आने वाली वस्तुओं और सेवाओं की खरीद की जा सकती है। हाल ही में सरकार ने इसका उन्नत संस्करण जेम 3.0 लांच किया है।

जैम की प्रमुख विशेषता

- सभी सरकारी विभागों तक विक्रेताओं की सीधी पहुँच के साथ न्यूनतम बाजार प्रयासों के साथ वन स्टॉप मार्केटप्लेस।
- विभिन्न सरकारी विभागों के टेंडर की आवश्यकता नहीं होगी। उत्पादक द्वारा उत्पाद पोर्टल पर उपलब्ध कराये जाने के बाद सरकारी विभाग स्वयं प्रस्ताव करेंगे।
- उत्पाद और मॉडल के पंजीकरण के लिये भाग–दौड़ की आवश्यकता नहीं होगी ।
- गतिशील उत्पाद सूचीकरण–मॉडल अपग्रेडेशन/परिवर्तनों के लिये भाग–दौड़ की कोई आवश्यकता नहीं।
- नवीनतम उत्पादों को सूचीबद्ध और विशेषताओं एवं प्रतिस्पर्धी मूल्यों के आधार पर उनकी बिक्री होती है ।
- वार्षिक खरीद योजना के माध्यम से सभी सरकारी आवश्यकताओं की पूर्ण जानकारी प्राप्त हो सकती है।
- समय से भुगतान की गारंटी।
- सुसंगत और एकरूप क्रय प्रक्रियाएँ तथा संविदा के नियम एवं शर्तें।

जैम से मिलने वाली सुविधाएँ

- जैम के माध्यम से सरकारी विभाग अपनी आवश्यक खरीदारी फाइल्स के तामझाम के बिना खरीद सकते हैं।
- केंद्र सरकार के विभागों के अलावा राज्य सरकारें, सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियाँ और स्वायत्त निकायों के अधिकृत प्रतिनिधि भी जैम के माध्यम से सामानों और सेवाओं को प्राप्त कर सकते है।
- गतिशील कीमत आधार पर देखने, तुलना करने और खरीद की सुविधा।
- जब भी, जहां भी आवश्यकता हो वस्तुओं / सेवाओं की ऑनलाइन खरीदारी।
- मांगों और आदेशों के समूहन के लिये सिंगल विंडो सिस्टम।
- पारदर्शिता और खरीद की सुविधा।
- प्रतियोगिता अधिक होने के कारण 'रिवर्स ऑक्शन' के माध्यम से बेहतर गुणवत्ता वाला सामान आसानी से खरीदा जा सकता है।

प्रशिक्षण से अपेक्षाएँ :– उक्त प्रशिक्षण को आयोजित करने से पूर्व सभी प्रतिभागियों से उनकी प्रशिक्षण संबंधी अपेक्षाओं की जानकारी प्राप्त की गई। प्रतिभागियों द्वारा व्यक्त की गई अपेक्षाएँ निम्नवत रही हैं।

- प्रशिक्षण समय–समय पर आयोजित किए जाने चाहिए।
- प्रशिक्षण में नवीन विधाओं, समूह कार्य प्रस्तुतीकरण आदि को और अधिक स्थान दिया जाना चाहिए।
- सूचना के अधिकार अधिनियम, ई पेमेंट जैसे नवीन संबोधों पर अवश्य नियमित प्रशिक्षण आयोजित हों।
- कार्यालय में कार्य संपादन हेतु कम्प्यूटर, जनरेटर तथा अन्य व्यवस्थाएँ उपलब्ध हों।
- सामूहिक कार्य प्रणाली का विकास हो ताकि सहयोग की भावना से कार्य संपादन किया जा सकें।
- वित्तीय क्रियाकलाप अत्यन्त महत्वपूर्ण है

अतः वित्तीय प्रबंधन संबंधी प्रशिक्षण समय–समय पर आयोजित किए जाने चाहिए ताकि नवीन जानकारियों से सभी कार्मिक अवगत हो सके।

प्रशिक्षण प्रविधि :– प्रभावी प्रशिक्षण आयोजित किया जाना सीमैट का महत्वपूर्ण उद्देश्य रहा है अतः प्रशिक्षणों की गुणवत्ता बनाए रखने हेतु निम्नलिखित प्रविधियों का उपयोग किया गया :–

1. विचारोत्तेजन (ब्रेन स्टार्मिंग)।
2. व्याख्यान।
3. समूह कार्य।
4. परिचर्चा।
5. प्रस्तुतीकरण।
6. रोल प्ले (भूमिका निर्वहन) आदि।

प्रशिक्षण के दौरान सहयोगात्मक व रूचिकर वातावरण बनाने, प्रतिभागियों को प्रेरित करने व उनमें कार्य के प्रति उत्साहवर्द्धन हेतु प्रार्थना, प्रेरणादायक वीडियो क्लिप्स, पूर्व दिवस की आख्या प्रस्तुतीकरण आदि के द्वारा प्रशिक्षण आरम्भ किए गए। समय–समय पर मूल्यांकन तथा कृत समूह कार्यों का प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुतीकरण भी किया गया –

प्री–टेस्ट :– प्रशिक्षण से पूर्व प्रतिभागियों में कार्यालय तथा वित्तीय प्रबंधन की पूर्व जानकारी हेतु प्री टेस्ट शामिल किया गया जिनका उद्देश्य प्रतिभागियों के परफारमेंस गैप (कार्य निष्पादन न्यूनता) पता करना था। प्री टेस्ट के प्राप्तांक निम्नवत प्राप्त हुए –

प्रथम् चक्र	–	20.26%
द्वितीय चक्र	–	19.56%
तृतीय चक्र	–	22.64%

औसत प्राप्तांक

औसत उपलब्धि स्तर से स्पष्ट है कि कार्यालयी प्रबंधन एवं वित्तीय प्रबंधन को प्रभावशाली बनाने के लिए प्रशिक्षण की अत्यंत आवश्यकता है।

पोस्ट टेस्ट :– प्रशिक्षण के समापन से पूर्व सभी प्रतिभागियों पर पोस्ट टेस्ट शामिल किया गया। पोस्ट टेस्ट में वे प्रश्न समाहित थे जो प्रकरण प्रशिक्षण के दौरान सम्मिलित थे। पोस्ट टेस्ट का उद्देश्य यह जानकारी प्राप्त करना रहा है कि प्रतिभागियों में प्रशिक्षण का स्थानान्तरण कितना हुआ है। पोस्ट टेस्ट के प्राप्तांक निम्नवत प्राप्त हुए–

प्रथम् चक्र	–	68.56%
द्वितीय चक्र	–	70.36%
तृतीय चक्र	–	73.54%

1 -आनलाइन पेमेंट की विशेषता है-

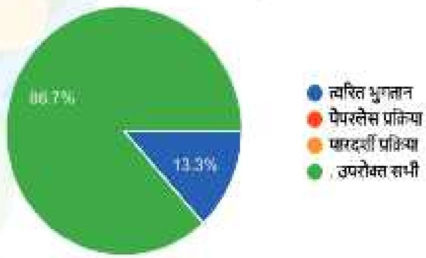

2. IFMS का पूरा नाम है-

3. अर्द्धशासकीय पत्र लिखा जाता है –

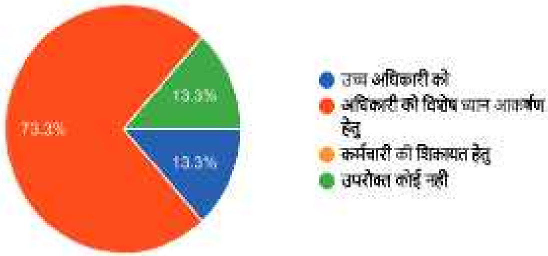

4. आरोप पत्र पर किसके हस्ताक्षर/ अनुमोदन अनिवार्य हैं -

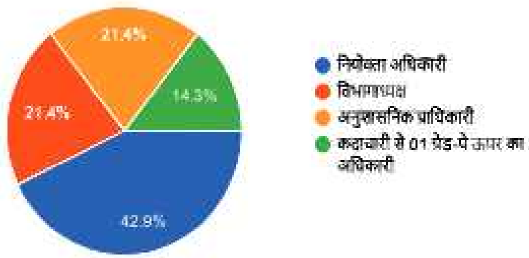

5. बाल्य देखभाल अवकाश की न्यूनतम अवधि है-

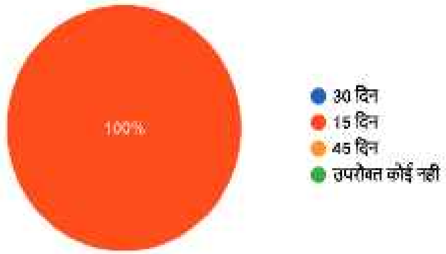

6. समय प्रबंधन में प्राथमिकता दी जानी चाहिए –

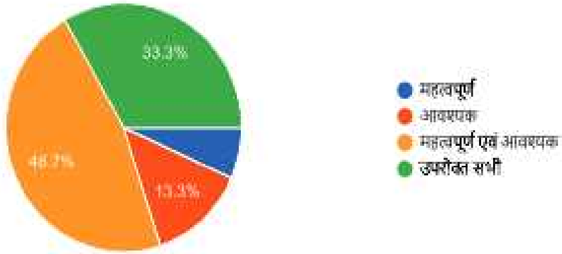

7. असाधारण अवकाश की अधिकतम अवधि हैं-

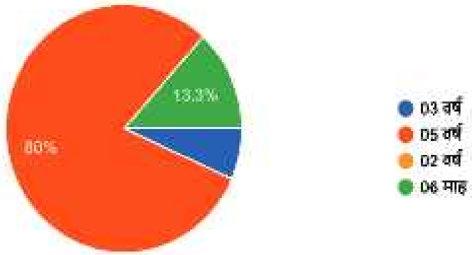

8. बाल्य देखभाल अवकाश पूरे सेवाकाल में अधिकतम कितने दिनो तक अनुमन्य किया जा सकता है।-

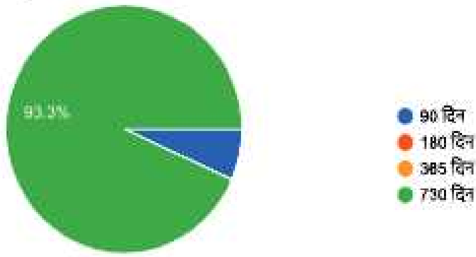

9. निविदा प्रतिभूति धरोहर राशि ली जाती है-

10. लोक सूचना अधिकारी के लिए सामान्यतः सूचना देने की अवधि है।

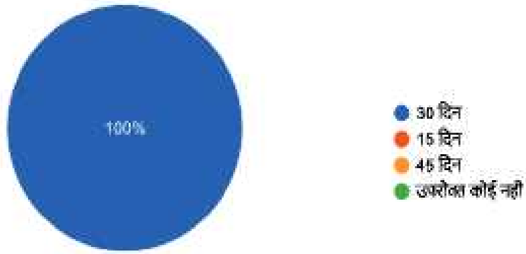

11. उपयोगिता बिलों के आहरण के लिए नई मानक मद है -

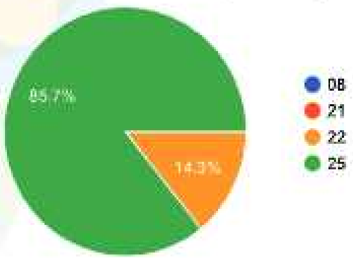

16.अवकाश नियमो का उल्लेख है-

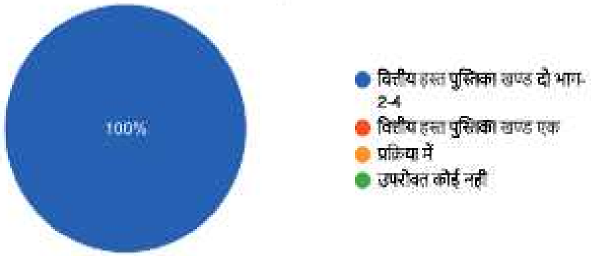

12 प्रशिक्षण करवाने हेतु किस मद से व्यय करेंगे–

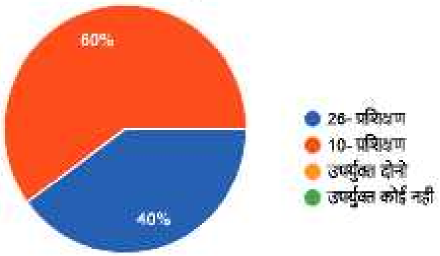

17.उत्तराखण्ड राज्य के बजट के छठे खण्ड में है-

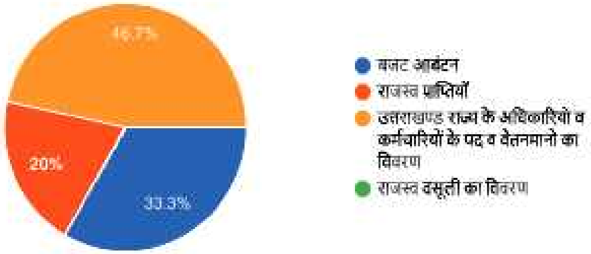

12 संस्थान/अधिष्ठान में प्रकाशन किस मद से कराएँगे–

18. सूचना के अधिकार अधिनियम के तहत प्राप्त धनराशि को जमा करेंगे-

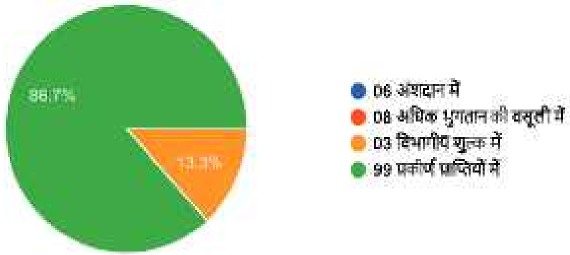

14. प्रभावी कार्य सम्पादन हेतु कभी कभी लाभदायक है -

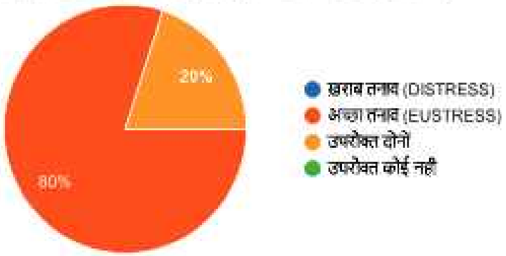

19.न्यूनतम पेंशन है-

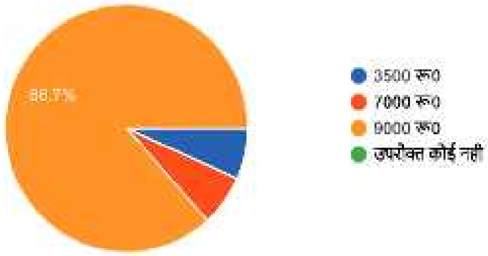

15. Govt. e-Marketing की विशेषता है-

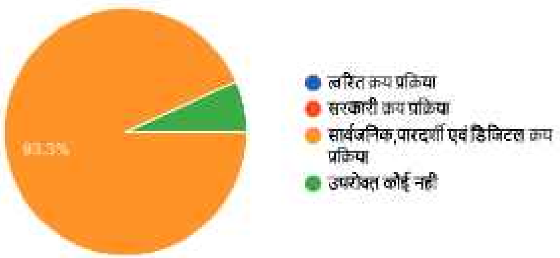

20. राज्य के बजट के लिए उधार एवं अन्य देयतायें कोन से पक्ष से प्राप्त होती हैं-

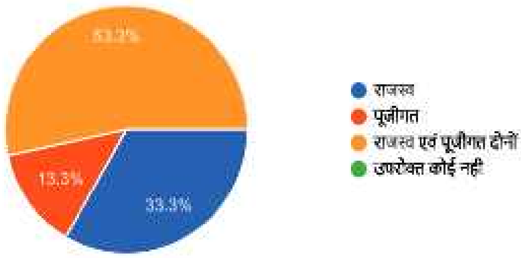

औसत प्राप्तांक

औसत उपलब्धि स्तर 70.82 के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रशिक्षण से उपलब्धि स्तर में वृद्धि हुई है और इसे पूर्णता को प्राप्त करने के लिए भविष्य में भी प्रशिक्षणों की आवश्यकता होगी। उक्त प्रशिक्षणों के लिए सीमैट प्रतिबद्ध है।

प्रशिक्षण के दौरान समय–समय पर सभी प्रतिभागियों को गुणवत्तापरक लेखन सामग्री, सीमैट द्वारा विकसित सन्दर्भ साहित्य, शासनादेशों का संग्रह भी उपलब्ध करवाया गया ताकि उन्हें कार्य निष्पादन में सुगमता हो सके।

प्रशिक्षण के उपरांत फीडबैक :– सीमैट द्वारा आयोजित किए जाने वाले प्रशिक्षणों का सीमैट के द्वारा अपने आन्तरिक मूल्यांकन हेतु प्रतिभागियों से फीड बैक भी प्राप्त किया जाता रहा है। प्रायः प्रशिक्षण के दौरान संदर्भदाताओं तथा उनके व्याख्यानों, भोजन, आवास तथा प्रशिक्षण सामग्री के बारे में अलग–अलग विचार रहते हैं अतः प्रतिभागियों से निम्नलिखित बिन्दुओं पर फीडबैक प्राप्त किया गया तथा उसका औसत परिणाम निम्न रहा –

क्र.स.	बिन्दु	उत्कृष्ट	अति उत्तम	उत्तम	सामान्य
1	भूमिका प्रस्तुतीकरण	60.71	39.28	–	–
2	सहायक प्रशिक्षण सामग्री	45.71	32.85	21.42	–
3	विषय वस्तु	50.28	35.42	14.28	–
4	सम्प्रेषण कौशल	40.28	41.85	17.85	–
5	प्रशिक्षण अवधि	51.42	16.42	17.85	3.57
6	प्रतिभागी सहभागिता	53.28	36.00	10.71	–
7	समूह कार्य एवं गतिविधि	51.42	23.57	17.85	7.14
8	समय प्रबंधन	55.57	29.14	10.71	3.57
9	प्रशिक्षक विषय ज्ञान	73.85	15.42	10.71	2.85
10	उद्देश्य प्राप्ति	89.71	33.14	7.14	–
11	प्रशिक्षण सामग्री	69.42	19.85	7.17	–
12	आवास व्यवस्था	44.85	40.80	10.71	3.57
13	भोजन व्यवस्था	37.71	37.28	17.85	3.57
14	सीमैट अभिकर्मियों का व्यवहार	69.85	26.57	3.57	

प्रशिक्षण फीडबैक प्रपत्र का मूल्यांकन करने के उपरांत यह निष्कर्ष निकला कि उत्कृष्ट तथा अति उत्तम को संयुक्त करने पर भूमिका प्रस्तुतीकरण, प्रशिक्षण विषय वस्तु, समय प्रबंधन, उद्देश्य प्राप्ति एवं सीमैट अभिकर्मियों का व्यवहार 80% से अधिक रहा, जबकि प्रशिक्षण अवधि प्रतिभागी सहभागिता एवं भोजन सामग्री के बिन्दु 80% से कम रहे। सम्प्रेक्षण कौशल, प्रशिक्षण सहायक सामग्री, प्रशिक्षण अवधि, भोजन व्यवस्था, प्रतिभागी सहभागिता, आवास व्यवस्था, फीडबैक प्रपत्र में सीमैट अभिकर्मियों का व्यवहार सर्वाधिक 96.42% विषय वस्तु 85.70% समय प्रबन्धन 85.11% प्रशिक्षण विषय ज्ञान 89.27% रहा जबकि सबसे कम प्रशिक्षण अवधि 67.84% रहा। अतः 80% से कम बिन्दुओं के लिए सीमैट उक्त कमियों को दूर करने के लिए प्रयासरत रहेगा।

एन.सी.एस.एल. के तत्वाधान में राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अध्याय–पाँच में उल्लेख किया गया है कि ''शिक्षक वास्तव में बच्चों के भविष्य को आकार देते हैं, अतः वे राष्ट्र के भविष्य का निर्माण करते हैं। स्कूलों के संस्थाध्यक्ष अपने नेतृत्व–कौशलों से राष्ट्र के भविष्य का निर्माण करते हैं। संस्थाध्यक्षों या स्कूल कॉम्प्लेक्स प्रमुखों के लिए उनके नेतृत्व कौशलों को लगातार विकसित करने के लिए एक समान मॉड्यूलर नेतृत्व प्रबंधन कार्यशालाएँ और ऑनलाइन विकास के अवसर प्राप्त होंगे ताकि वे अपनी सर्वोत्तम प्रैक्टिस आपस में साझा कर सकें।'' शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा विद्यालयी शिक्षा में विद्यालय प्रमुखों के क्षमता विकास तथा प्रभावी विद्यालय प्रबन्धन को सुनिश्चित करने हेतु राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान (नीपा) में नेशनल सेन्टर फॉर स्कूल लीडरशिप (एन0सी0एस0एल0) की स्थापना की गई है। विद्यालय नेतृत्व के क्षेत्र में हो रहे शोधों के आधार पर यह पाया गया कि विद्यालयों के प्रभावी मात्रात्मक एवं गुणात्मक रूपान्तरण हेतु विद्यालय प्रधान ही ऐसा व्यक्तित्व है जिसके व्यक्तित्व में नेतृत्व विकास एवं प्रबंधन की क्षमताओं के विकास से देशभर के विद्यालयों को भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप परिवर्द्धित कर विद्यालय वातावरण को सीखने के अनुकूल रूपान्तरित किया जाना सरल हो जाता

है। इसी अवधारणा को केन्द्र में रखकर नेशनल स्कूल लीडरशिप सेन्टर (एन.सी.एस.एल.) ने भारत में स्कूल लीडरशिप डेवलपमैंट कार्यक्रम की 2012 में शुरुआत करते हुए लीडरशिप पाठ्यचर्या विकास, लीडरशिप प्रशिक्षण, नवाचार एवं अनुश्रवण गतिविधियाँ, शोध व विकास गतिविधियों को स्कूल लीडरशिप विकास के लिये प्रमुख हस्तक्षेप के रूप में स्थान दिया। उपरोक्त सभी हस्तक्षेपों का प्रयोगकर विद्यालय संस्थाध्यक्षों के मध्य लगातार कार्य करते हुये स्कूल लीडरशिप विकास कार्यक्रम नये आयाम स्थापित कर रहा है।

इन कार्यों को राज्य स्तर पर क्रियान्वित करने हेतु स्कूल लीडरशिप एकेडमी (एस0एल0ए0) की स्थापना की गयी है जो कि उत्तराखण्ड में राज्य शैक्षिक प्रबन्धन एवं प्रशिक्षण संस्थान (सीमैट), देहरादून में स्थापित है। राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान (नीपा) स्थित नेशनल सेन्टर फॉर स्कूल लीडरशिप (एन0सी0 एस0एल0) सम्पूर्ण भारत में विद्यालयी शिक्षा स्तर पर विविध प्रणालियों के अन्तर्गत संचालित विद्यालय प्रमुखों के शैक्षिक नेतृत्व–विकास एवं प्रबंधन की अवधारणा को संस्थाध्यक्षों के व्यवहार का अंग बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। एस0एल0ए0 उत्तराखण्ड द्वारा विद्यालय प्रमुखों के क्षमता संवर्द्धन हेतु विद्यालय नेतृत्व विकास एवं प्रबंधन पर एक माह का सर्टिफिकेट कोर्स, 10 दिवसीय

लीडरशिप प्रशिक्षण, लीडरशिप मॉड्यूल निर्माण, सफलता की कहानियाँ, लघु वीडियो फिल्म तथा शैक्षिक भ्रमण जैसे कार्यक्रमों का निरन्तर क्रियान्वयन किया जाता है।

एन.सी.एस.एल., नीपा, भारत सरकार के तत्वाधान में एस.एल.ए. उत्तराखण्ड के द्वारा 20 से 22 नवम्बर 2024 तक राष्ट्रीय–सेमिनार आयोजित किया गया। इस सेमीनार में उत्तर भारत के राज्यों जम्मू–कश्मीर, लद्दाख, हरियाणा, हिमांचल एंव उत्तराखण्ड के स्कूल लीडरशिप एकेडमी के नोडल पर्सन्स के द्वारा उनके राज्यो में स्कूल लीडरशिप के क्षेत्र के किये जा रहे नवाचारों पर आधरित विषयों पर अपने शोध पत्रों को प्रस्तुत किया। विभिन्न राज्यों सहित उत्तराखण्ड के प्राथमिक, उच्च प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालयों के विद्यालय प्रमुखों के द्वारा किए जा रहे नवाचारी कार्यक्रमों, उत्कृष्ट विद्यालयी प्रबन्धन, सफलता की कहानी, शैक्षिक गुणवत्ता संवर्द्धन हेतु बाल केन्द्रित कक्षा–कक्ष शिक्षण एवं बाल सुलभ मूल्यांकन, स्कूल प्रबन्धन, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन में किए जा रहे सफलतम प्रयासों, शिक्षण अधिगम में आई0 सी0 टी0 की भूमिका, विद्यालय रूपान्तरण जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर अपने लेख, शोध पत्र, नवाचार आधारित वीडियो फिल्मों का प्रस्तुतीकरण किया गया। वर्ष 2023 में भी सीमैट एवं अजीम प्रेमजी फाउण्डेशन के साझा सहयोग से आयोजित राज्य स्तरीय सेमीनार में विभिन्न विद्यालयी प्रमुखों तथा शिक्षकों द्वारा अपने विद्यालय में किए गए सफलतम प्रयासों को साझा किया गया था। संस्थाध्यक्षों के इन प्रयासों को अधिक से अधिक सफलतम रूप में क्रियान्वित करते हुए, उनके परिणामों तथा क्रियान्वयन के तरीकों को भी इन विद्यालय प्रमुखों द्वारा इस सेमिनार में साझा किया गया। सार रूप विद्यालय प्रमुखों द्वारा प्रस्तुत सेमीनार प्रस्तुतियों को इस अध्याय में समाहित किया जा रहा है।

School Leadership Academy (SLA), SCERT JK (Kashmir Division) Bemina Sringar, Kashmir (J&K) Dr. Amarpreet Kour Associate -coordinator Transformative Initiatives in Education: A Case Study of SMDC in Cluster Boys Higher Secondary School Hatmulla.

This paper presents an in-depth analysis of transformative decisions made by School Management and Development Committee (SMDC) in Boys Higher Secondary School, Hatmulla, Kupwara (Jammu and Kashmir).

Major achievements among them are allocation of 30 kanals for a cutting-edge library and laboratory block and initiated the process for over 200 kanals of land to establish the country's first-ever herbal garden. The visionary leadership aims to revolutionize education in the entire Hatmulla area, making quality education accessible to all. This paper delves into the major achievements of SMDC's like in making the vision for educational revolution, making library and laboratory block, the revolutionary herbal garden initiative, collaborative efforts with the revenue department, and the collective commitment to accelerating educational parameters in Government Boys Higher Secondary School Hatmulla.

The case study on transformative initiatives in education at Boys Higher Secondary School Hatmulla is rooted in the theoretical frameworks of educational governance, community involvement, and decentralization. The investigator has adopted case study method to study the functioning of School Management and Development Committees (SMDCs) towards achieving the quality of education in Boys Higher Secondary School Hatmulla. The study a er made an in-depth investigation and analysis of SMDC of BHSS Hatmullah, the following results are found:

1. Constituted SMDC as per guidelines laid down by School Education Department and NEP 2020.
2. SMDC was found to be successful in carrying out its pre-determined targets like
   - Enabled all cluster schools to complete their course outline within academic calendar year.
   - Made all cluster schools to emphasis and imbibe the course of uniformity and quality in their educational curriculum.
3. SMDC was found to be engaged in devising latest methods of Questionnaire and other evaluative techniques in order to achieve desired learning outcomes.
4. SMDC highlighted the potential of PS Bubbernag and MS Vogbal which fall within the jurisdiction of BHSS Hatmullah. The potential of these institutions has been identified which can contribute to education, research and recreational activities.
5. SMDC was found in making not only laboratories functional but also reported to be involved in highlighting the deficiencies of lecturers, Lab. Assistants etc. Moreover, the proactive role of SMDC was surfaced in various other spheres and activities, like Constitution of Skill Development Centre/Mathematics Lab., Up-gradation of School Library thrown open to students from 7Am to 7Pm.
6. SMDC was also found to be successful not only taking pre-emptive role in school enrollment drives but also achieved milestone in enhancing the enrollment of science students which has surged from 230 to 568 students within a span of four years.

अनीता कुँवर राजकीय प्राथमिक विद्यालय नौटी, चमोली **पढ़ने का कोना, पढ़ने लिखने की प्रक्रिया को प्रभावी बनाना** के सम्बन्ध में प्रस्तुतीकरण किया गया। जिसका सार विद्यालय में बच्चों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए अनेक प्रक्रियाओं का संचालन किया जाता है, जैसे प्रार्थना सभाएं बाल सभाएं, प्रतिभा दिवस, सांयकालीन सभाएं, उपचारात्मक शिक्षण, बाल शोध मेला, पढ़ने का कोना आदि। विद्यालय में एकल शिक्षक के रूप में कार्य करने के दौरान मैंने कुछ उद्देश्यों पर फोकस किया। जिससे बच्चों में पढ़ने के प्रति उत्सुकता और वातावरण का निर्माण किया जा सके। सर्वप्रथम चुनौती थी कि बच्चे कैसे पढ़ने के प्रति रुचि लें इसके लिए मैंने उनसे कहा चलो एक कोना बनाते हैं, जिसमें आप सभी बारी–बारी से अपने पसंद की किताब पढ़ सकते हैं। संकुल भवन के एक छोटे से कमरे का इस कार्य के लिए चयन किया। कमरे को बैठने के लिए व्यवस्थित किया। अब काम के अगले चरण में बच्चों की सहायता से बच्चों की आयु के अनुसार इन किताबों को छाँटा गया और उन्हें इस तरह से डिस्प्ले किया गया ताकि बच्चे आसानी से किताबों को देखकर निकाल पाएं। स्वयं से बच्चों के बीच जाकर पढ़ना शुरू किया। यह मेरे और बच्चों के लिए नया अनुभव था। पहले स्वयं से पढ़कर बच्चों में सुनने के कौशल को विकसित किया। सुनाई गई कहानी पर बच्चों से बातचीत कर उनमें बोलने के कौशल को विकसित किया गया। इस प्रकार बच्चे कहानी को ध्यान से सुनने और उस पर बातचीत करने लगे। बच्चे लंच के बाद अपनी पसन्द की पुस्तक लेकर बैठने लगे। यह बात समझ में आयी कि बच्चों के साथ निरंन्तर समय के साथ–साथ कुछ चीजों को निरंतरता में चीजों को करना होगा। फ्लैश कार्डों को बच्चे क्रम से लगाते हैं और उनकी पहचान करते हैं।

इसके बाद हम जिन कहानियों को पढ़ते थे उनमें से कुछ शब्दों को बोर्ड पर लिख देते फिर बच्चे उस पर कहानी बनाते। इस क्रम को नियमित रखने से बच्चों के शब्द भंडार में भी वृद्धि हुई और वे कहानी निर्माण भी करने लगे। बच्चों द्वारा बनाई गई इन कविता कहानियां को रीडिंग कॉर्नर में सजाया गया है। पढ़ने के कोने में किताबों के रख–रखाव के लिए एक रजिस्टर बनाया गया है जब भी विद्यालय में छुट्टी होती है तो बच्चे किताबों को घर पढ़ने के लिए लेकर जाते हैं। जिससे उनके छोटे भाई–बहन और अभिभावकों में भी पढ़ने की आदत विकसित हो रही है। इस प्रकार निरंतर कार्य करने से बच्चों में समूह में कार्य करने की भावना विकसित हुई है। स्कूल में हर महीने एस.एम.सी. की बैठक की जाती है। अभिभावक तब विद्यालय में आते हैं। वह भी रीडिंग कॉर्नर में बैठकर अपनी पसंद की किताबें पढ़ते हैं और कुछ किताबों को घर भी ले जाते हैं। पुस्तकों के अस्पताल में पुस्तकों में जिल्द और किताबों के फटने पर देखभाल की जाती है।

नियमित तौर पर बच्चों को यदि मौके उपलब्ध करवाए जाते हैं तो बच्चों के सीखने की गति में सकारात्मक प्रभाव देखने को मिला है। बच्चों के साथ स्वयं भी यदि किसी कार्य में जुड़ते हैं तो बच्चे और भी अधिक उत्साह से कार्य में शामिल होते हैं।

आरती गौनियाल राजकीय प्राथमिक विद्यालय दोगीवाला, फेरुपुर, हरिद्वार **बच्चों के बेहतर शिक्षा देते हुए अभिभावकों को शिक्षा के प्रति जागरूक करने के सम्बन्ध में** प्रस्तुतीकरण किया गया। राजकीय प्राथमिक विद्यालय दोगी वाला की स्थापना 1998 में हुई थी। यह विद्यालय सत्तर–अस्सी किसान परिवारों वाले घोसीपुरा गाँव में स्थित है। विगत 2 वर्षों से पड़ोसी गाँव में उच्च प्राथमिक विद्यालय खोलने से कुछ लड़कियाँ कक्षा आठ तक पढ़ रही हैं। कोई लड़की 8वीं से आगे नहीं बढ़ रही है। सरकार द्वारा बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने पर भी यहाँ की लड़कियाँ आगे नहीं बढ़ पा रही हैं। यह एक विचारणीय प्रश्न बना हुआ है। वर्ष 2015 में मेरी नियुक्ति प्रधानाध्यापिका के पद पर हुई, यहाँ कार्यरत मेरी सहयोगी शिक्षिका का लंबे कार्यकाल से मुझे बच्चों की पारिवारिक पृष्ठभूमि समझने में सहयोग मिला। यहाँ गाँव वालों के आपसी झगड़े स्कूल तक आ जाते थे। यहाँ अध्यापकों का सम्मान नहीं करना तथा विद्यालय की संपत्ति की तोड़–फोड़ करना, गाली–गलौज करना एक आम बात थी। विद्यालय को अनेको बार सरकारी गल्ला कहकर अपमान किया जाता था। अभिभावकों में बच्चों की शिक्षा को लेकर कोई खास रूचि नहीं थी। जिसके कारण बच्चों की विद्यालय में उपस्थिति दर भी बहुत कम थी, बच्चे छुट्टी से पहले ही घर भाग जाते थे, जो कि एक प्रमुख चिंता का विषय थी।

हमने विद्यालय विकास अनुदान के साथ निरंतर वार्तालाप किया, जिसके चलते विद्यालय के भौतिक वातावरण एवं अनुशासन को सुधारा गया। लगातार अनुपस्थित रहने वाले बच्चों के अभिभावकों से संपर्क एवं मीटिंग बुलाकर माता अभिभावकों को भी की। उन्हें विद्यालय से जोड़ा गया। खेल अनुदान की राशि का भी अधिकतम उपयोग कर बालिकाओं को स्कूल से जोड़ा गया। बालक–बालिकाओं में छिपी प्रतिभाओं को पहचान कर उनकी प्रशंसा कर, पुरस्कार देकर उनको प्रोत्साहित करने की प्रक्रिया शुरू की गई। दोनों शिक्षिकाओं द्वारा भयमुक्त वातावरण बनाया गया, भय विहीन होकर स्कूल आने लगे। इसके अन्य कई सकारात्मक प्रभाव भी दिखने लगे। प्रार्थना सभा तथा छुट्टी में खेल गतिविधियों एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए भी काम किया गया। संपर्क फाउंडेशन द्वारा स्मार्ट टीवी का अधिकतम उपयोग किया जाता है। गत वर्ष एक संस्था के साथ सहयोग करके बाल शोध मेला आयोजित किया गया। पुस्तकालय को व्यवस्थित किया गया तथा उसके उपयोग की योजना बनाकर विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों और भूतपूर्व छात्रों को निरंतर पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों को पढ़ने, समझने तथा अपने शब्दों में अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान किये जाते हैं। पुस्तकों का संयोजन वितरण का रिकॉर्ड भी रखा जाता है। बालिका शिक्षा पर जोर देते हुए हम दोनों शिक्षिकाएं लगातार बच्चों से बात करके आठवीं कक्षा से आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। माता अभिभावक चाहती है कि हमारा प्राथमिक स्कूल का उच्चीकरण उच्च प्राथमिक में किया जाए, ताकि वो अपनी बच्चियों को दूसरे गाँव भेजना न पड़े। वर्तमान वर्ष में हमने छात्राओं को दसवीं का फॉर्म ओपन बोर्ड से भरवाया है, हमारी कोशिश है कि गाँव की अन्य लड़कियाँ भी आगे पढ़ें। अभिभावक अपने पाल्यों की शिक्षा के प्रति जागरूक हो रहे हैं। अब कोई भी अभिभावक बच्चों का झगड़ा लेकर स्कूल नहीं आता है बल्कि छात्र–छात्राओं के हित में सुझाव देने अथवा कार्य करने आते हैं।

अवधेष मणि लाल हेमवती नंदन बहुगुणा राजकीय इंटर कॉलेज देवलगढ़, पौड़ी गढ़वाल का प्रस्तुतीकरण **उत्कृष्ट विद्यालय प्रबन्धन** था। हेमवती नन्दन बहुगुणा रा.इ.का. देवलगढ, पौड़ी गढ़वाल जनपद का दुर्गम श्रेणी का विद्यालय है। जुलाई 2022 में अतिवृष्टि के कारण विद्यालय का पैदल मार्ग ध्वस्त हो गया। विद्यालय प्रांगण में प्रार्थना सभा स्थल के टूटे पुस्ते को सितम्बर 2022 में अध्यापक–अभिभावक संघ, विद्यालय प्रबंधन समिति, गणमान्य व्यक्तियों तथा ग्राम प्रधान के सहयोग से सीढ़ीदार पक्का रास्ता और आयरन

पाइप की रेलिंग भी लगाकर तैयार की गयी जिससे विद्यालय छात्र–छात्राओं के लिए लिंक रोड से आवागमन सुलभ हुआ। यह खेल मैदान न केवल विद्यालय के प्रयोग में आ रहा है बल्कि उसमें न्याय पंचायत स्तर के खेल महाकुंभ, शरद एवं शीतकालीन क्रीडा प्रतियोगिताएँ, स्वर्गीय श्री एच०एस० खत्री स्मृति वालीबाल टूर्नामेंट, जलेबी मेला, रस्साकस्सी एवं अन्य खेलकूद का आयोजन अनेकों बार संपन्न हुआ है। हमारे दो छात्र वालीबाल प्रतियोगिता में राज्यस्तर की टीम में अपनी जगह बना चुके हैं। विद्यालय के चार जर्जर एवं खंडहर कक्षा–कक्षों को मरम्मत कार्य करके उसे उपयोगी बना दिया। उनमें वर्चुअल क्लास सहित अन्य तीन कक्षाएँ संचालित हो रही हैं। विद्यालय में पेड़ पौधों की सुरक्षा हेतु हमारे 60 पौधे ट्री–गार्ड, तथा 05 मातृ पितृ विहीन छात्राओं के लिए ₹600 प्रति छात्रा की दर से सहयोग राशि प्रदान करायी गयी। हाईस्कूल एवं इण्टर स्तर पर प्रथम श्रेणी प्राप्त करने वाले छात्रों का प्रतिशत बढ़ा है। सत्र 2024–25 कंप्यूटर एवं स्मार्टफोन आधारित शिक्षा के लिए प्रेरित किया जा रहा है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत विद्यालय में बालसखा, इको क्लब फार फ्यूचर लाइफ, यौन उत्पीडन निवारण प्रकोष्ठ, विज्ञान क्लब, सामाजिक विज्ञान क्लब, सुसज्जित पुस्तकालय, विज्ञान प्रयोगशाला, तथा कौशलम (कक्षा 9 से 12 तक) की कक्षाएँ संचालित है। वाद्ययंत्रों के साथ प्रार्थना–सभा तथा छात्राओं के लिए आत्मरक्षा कौशल (सेल्फ डिफेन्स) कार्यक्रम, कैरिअर काउंसलिंग के कार्यक्रम संचालित है। विद्यालय में हमारी समस्या हमारा समाधान पेटिका की स्थापना की गई है।

छात्र–छात्राओं को विभिन्न छात्रवृत्ति परीक्षाओं में प्रतिभाग कराया जाता है। उन्हें कला, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, क्विज आदि प्रतियोगिताओं में भी प्रतिभाग कराया जाता है। छात्र–छात्राओं एवं स्टाफ को यौन उत्पीडन एवं अपराध के बारे में भी जागरूक किया जाता है। स्टाफ को प्रशिक्षणों में शत–प्रतिशत प्रतिभाग कराया जाता है। अनुशासन पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इस प्रकार विद्यालय के भौगोलिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक वातावरण का सृजन किया गया है जिससे छात्र–छात्राएं सुगमता से पठन–पाठन कर रहे हैं।

बबली सेंजवाल पी.एम. श्री राजकीय प्राथमिक विद्यालय, गैरसैण चमोली **विद्यालय में नामांकन वृद्धि के प्रयास के सम्बन्ध में** प्रस्तुतीकरण किया गया। राजकीय प्राथमिक विद्यालय गैरसैण चमोली नगर क्षेत्र का विद्यालय है। यहां पर एक किलोमीटर के दायरे में सात गैर सरकारी विद्यालय हैं। मार्च 2017 में विद्यालय में 14 छात्र संख्या रह गई थी। विद्यालय में कार्यभार ग्रहण करने के बाद एक सप्ताह तक इसकी योजना बनायी कि विद्यालय की बेहतरी के लिए कहां से काम शुरू किया जाए। हमारा मानना है की विद्यालय परिसर ऐसा हो जहाँ बच्चों को अच्छा महसूस हो इसके लिए फुलवारी, दीवार की पेंटिंग, स्कूल परिसर को बेहतर बनाना बहुत जरुरी लगता है। हमने इसे प्राथमिकता से देखा और चरणबद्ध इस पर काम किया गया, सहयोगी शिक्षक के सहयोग से हमने समस्याओं के कारण और कारकों का विष्लेषण किया और उन पर कार्य करने की ठानी। इस चुनौती को स्वीकार करते हुए हमने कार्य योजना बनाकर कार्य करते हुए एस.एम.सी.अभिभावकों की बैठकों में नगर क्षेत्र के गणमान्य व्यक्तियों को आमंत्रित किया। घर–घर जाकर जागरूकता अभियान चलाया। महिला मंगल दलों की बैठकों में प्रतिभाग किया। प्रतिवर्ष वार्षिक उत्सव का आयोजन, राष्ट्रीय पर्व, विशेष पर्वों का आयोजन कर अधिकारियों का आमंत्रित किया। बालिका शिक्षा और विद्यालय में मिलने वाली सुविधाओं का प्रचार प्रसार किया।

इसके साथ–साथ समुदाय भ्रमण करना शुरू किया। तब समुदाय नकारात्मक विचार भी सरकारी शिक्षा के बारे में प्राप्त हुए जैसे–सरकारी शिक्षा के प्रति नकारात्मकता, नगर क्षेत्र में गैर सरकारी विद्यालयों की अधिकता, सरकारी विद्यालय में शिक्षकों का अभाव, विद्यालय में

कक्षा–कक्षों का अभाव, सरकारी विद्यालय के गरीबों का विद्यालय की इमेज आदि। सहयोगी शिक्षक के साथ मिलकर एक कार्य–योजना बनायी गयी और इस कार्य–योजना पर कार्य करना शुरू किया जिससे समाज में सकारात्मक संदेश गया और लोग सरकारी विद्यालय की ओर ध्यान देने लगे। प्रवेश उत्सव के तहत नगर क्षेत्र में जागरूकता रैली निकाली गई, जन–जन/ घर–घर संपर्क किया गया, सरकारी योजनाओं का लाभ बताया गया और बालिका शिक्षा पर जोर दिया, इसी बीच दो शिक्षकों ने अपने पाल्यों का दाखिला हमारे विद्यालय में करवाया। जिससे अन्य अभिभावक भी प्रेरित होकर अपने बच्चों को दाखिला हमारे विद्यालय में करवाने लगे। गैर सरकारी विद्यालय से भी छात्र कुछ वापस आए, और प्रतिवर्ष आते रहे। जहां संख्या अप्रैल माह में 14 हो गई थी, यह निरंतर बढ़ती रही और वर्तमान में छात्र संख्या 70 पर पंहुच गई है और आगे भी छात्र संख्या निरंतर बढ़ने की संभावना है।

समुदाय से दो निशुल्क शिक्षकों की व्यवस्था 2017 से वर्तमान तक निरंतर बनी हुई है। छात्रों द्वारा विद्यालय में दीवार पत्रिका का स्वयं निर्माण किया जाता है। प्रत्येक माह के अंतिम शनिवार को प्रतिभा दिवस मनाया जाता है जिसमें बच्चों को फूल–पत्तियों से जोड़, घटाना, गुणा, भाग करना सिखाया जाता है। वेस्ट मटेरियल, ऊन, माचिस की तिल्ली, रस्सी आदि से बच्चों को राखी बनाना,कबाड़ से जुगाड़ से कुछ ना कुछ बनाना सिखाया जाता है। सब्जियों को काटकर आलू, भिंडी, करेले के ठप्पे द्वारा डिजाइन बनाना सिखाया जाता है।

जो विद्यालय एक समय पर बंद होने की कगार पर खड़ा था आज राज्य स्तर पर अपनी पहचान बनाने में सफल हुआ है। यह मेरी सबसे बड़ी उपलब्धि है। हमारे विद्यालय का चयन पी. एम.श्री योजना के अंतर्गत हुआ है जिससे विद्यालय में समस्त भौतिक–शैक्षिक संसाधन पूर्ण होंगे। विद्यालय के शिक्षकों एवं सामुदायिक सहयोग से विद्यालय में भौतिक एंव मानवीय संसाधन उपलब्ध कराते हुए, विद्यालय में नामांकन वृद्धि के साथ–साथ शैक्षिक गुणवत्ता वृद्धि के सकारात्मक प्रयास जारी हैं।

बलवन्त सिंह राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय बागेश्वर द्वारा **बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान वातावरण निर्माण के सम्बन्ध में** प्रस्तुतीकरण किया गया। शैक्षिक सत्र 2022–23 में एफ.एल.एन. का प्रशिक्षण लेने के बाद निपुण भारत मिशन के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अपने विद्यालय राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय बागेश्वर के शिक्षक एवं सहकर्मियों के साथ व्यापक चर्चा परिचर्चा करते हुए, इसमें विद्यालय परिसर एवं कक्षा–कक्षों को स्वच्छ एवं आकर्षक बनाने तथा बाल सुलभ प्रिन्टरिच वातावरण तैयार करने, अभिभावकों एवं समुदाय को निपुण भारत मिशन के लक्ष्यों एवं उन्हें प्राप्त करने के तरीकों की जानकारी देने, सहकर्मियों में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा बुनियादी स्तर की समझ विकसित करने, एफ.एल.एन. गतिविधि पुस्तिकाओं में निर्धारित समय सारिणी एवं प्रक्रिया के अनुसार कार्य करने, आनन्ददायी गतिविधियों एवं शिक्षण–अधिगम सामग्री का निर्माण करने तथा बुनियादी साक्षरता को सुदृढ़ करने के लिए आदर्श पुस्तकालय स्थापित कर पुस्तकालयी गतिविधियों पर कार्य करते हुए, बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अभिभावकों व समुदाय का सहयोग को ध्यान में रखते हुए अभिभावकों एवं जनसमुदाय को जागरूक करने के लिए जनसम्पर्क अभियान चलाया गया। कुमाऊँ के सुप्रसिद्द उत्तरायणी मेले में एफ.एल.एन. से सम्बन्धित शिक्षण अधिगम सामग्री एवं निपुण भारत के लक्ष्यों का स्टॉल लगाया गया। विद्यालय में जिला पंचायत अध्यक्ष एवं माननीय विधायक बागेश्वर, मुख्यशिक्षाधिकारी महोदय की उपस्थिति में सभा की गयी।

विद्यालय प्रबन्धन समिति की प्रत्येक बैठक में व्यापक चर्चा की गयी। अभिभावकों को सीखने के प्रतिफलों की जानकारी दी गयी तथा उनके द्वारा बच्चों के शिक्षण में अपेक्षित सहयोग की

सम्भावनाओं पर चर्चा की गयी। सामान्यतया अभिभावकों की यह धारणा होती है कि वे कम पढ़े लिखे हैं और उनके पास बच्चों के लिए पर्याप्त समय नहीं होता है। इन बातों को ध्यान में रखते हुए उन्हें बताया गया कि माताएं जब खाना बना रही होती हैं, तब बच्चों को सामने बुलाकर उनके साथ खाना बनाने की प्रक्रिया, खाना बनाने में प्रयुक्त सामग्री का नाम तथा कीमत आदि के बारे में बात करें। बच्चे शौक से मां के साथ कार्य करना चाहते हैं। उन्हें यह मौका देना चाहिए जिससे वे छोटे–छोटे कार्य सहजता से सीख जाते हैं। बच्चों को साथ बैठाकर कहानी सुनाने तथा उस पर चर्चा करने के लिए कहा गया। बच्चों को घर के लिए इसी तरह का कार्य दिया भी जाता है।

एफ.एल.एन. शिक्षक निर्देशिका में निर्धारित समय–सारिणी के अनुसार कक्षा–शिक्षण सुनिश्चित किया जाता है। प्रत्येक बच्चे की गतिविधि पुस्तिका को नियमित रूप से अवलोकित किया जाता है। प्रत्येक माह के लिए निर्धारित वर्णो पर आधारित शब्दों के अभ्यास के लिए टी.एल.एम. तैयार किया जाता है। गणित में सम्पर्क किट के साथ साथ स्वयं तैयार टी एल एम द्वारा शिक्षण किया जाता है।

इसके अलावा स्वच्छता मानक, अभिभावकों का सहयोग, भौतिक संसाधनों का विकास एवं उपलब्धता, आनन्ददायी गतिविधियों का आयोजन आदि मानकों को भी पूर्ण कर लिया गया है। स्व–मूल्यांकन के आधार पर विद्यालय को निपुण विद्यालय घोषित कर दिया गया है।

भावना अग्रवाल राजकीय प्राथमिक विद्यालय के द्वारा **रीड़िंग कार्नर द्वारा भाषाई कौशल क्षमता व रचनात्मक शक्ति का विकास** पर प्रस्तुतीकरण किया गया। सितम्बर 2022 में राजकीय प्राथमिक विद्यालय गडोली में प्रधानाध्यापक पद पर नियुक्त हुई तो सबसे पहले मैंने विद्यालय में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को ठोस व मजबूत बनाने के लिए बच्चों के भाषाई कौशल क्षमता के विकास पर ध्यान केन्द्रित किया। इसके लिए हमने विद्यालय की पुस्तकालय अलमारी जो अस्त–व्यस्त तरीके से भरी हुई थी को व्यवस्थित करने से शुरुआत की। इसके लिए हमने कक्षा 5 के बच्चों को बुलाया और उनकी मदद से उन किताबों को पहले बाहर निकाला और साफ किया। सफाई के दौरान हमें कुछ कार्ड मिले जिन पर चित्र सहित छोटी–छोटी कवितायें और कहानियाँ लिखी थी। समझाये जाने पर बच्चों ने कविताओं के कार्डस अलग रखे, भाषाई पहेलियाँ के कार्डस अलग रखे। गणितीय पहेलियों और अवधारणा संबंधी कार्डस अलग रखे और कुछ English Language Card थे उन्हें भी अलग रखा। हिन्दी भाषाई कहानियों के कार्ड अलग रखे और इस प्रकार English Poem पढ़ने की जागरूकता बढ़ती जा रही थी और उन्हीं से में कार्ड में से कुछ कार्ड बच्चे घर ले गये और उन्होंने कार्ड में बने चित्रों को पुनः अपनी नोटबुक में बनाया जो कि बहुत सुन्दर और आकर्षक थे। कविता, कहानी, पहेली और सामान्य ज्ञान को उन्होंने प्रार्थना सभा में प्रस्तुत करने की इच्छा जतायी। हमारे यहाँ प्रार्थना सभा भी बहुत प्रभावशाली होती है।

मेरी सहयोगी श्रीमती साधना रावत और कक्षा 4 व 5 के बच्चों ने भरपूर सहयोग दिया और किताबों का वर्गीकरण और उनकी उचित व्यवस्था, देख–रेख शुरू हो गयी। इस बीच विभागीय मदद से विद्यालय का भौतिक वातावरण भी समृद्ध तथा आकर्षक बना दिया गया। अब बारी सिर्फ किताबों के लिए रीडिंग कार्नर तैयार करने की थी। अभी तक हमने सिर्फ छोटे–छोटे कार्ड ही छांटे थे जिस पर बच्चों ने अपनी अभिव्यक्ति देना शुरू कर दिया था। अब हमने किताबों का चुनाव किया जो कि सरल से कठिन की ओर थीम पर आधारित था। नवीन दीवारों और पर्याप्त स्थान और संसाधनों के द्वारा हमनें किताबों का रख–रखाव एक नवीन वर्गीकरण के आधार पर किया। जैसे इंगलिश कॉर्नर, आपणु मातृभाषा कॉर्नर, हमारी रंगीन दुनिया, हमारे छोटे–छोटे पल, आओ चित्रों से कुछ बातें करें, तथा कुछ बड़ी मजेदार रोचक कहानियाँ।

उपरोक्त सभी बातों मे सबसे मजेदार बात यह थी कि यह काम बच्चों ने स्वयं किया यद्यपि हम निरन्तर हाथ में पोंछा लेकर (एक साफ–सुथरा कपड़ा) वहीं किताबों को साफ करके सुव्यवस्थित ढंग से रखते रहे। कॉर्नर की अधिकतर किताबों को मैंने स्वयं पढ़ा ताकि एक मजेदार रोचक प्रस्तुति नाटकीय अंदाज में बच्चों के सामने मैं खुद कर सकूं। भाषाई कौशल के विकास और बच्चों की पढ़ने में रुचि विकसित करने में यह एक प्रभावशाली और महत्वपूर्ण कदम था। बच्चे किताबों के पठन–पाठन के साथ–साथ उनमें दिये गए चित्रों को भी अपनी ड्राइंग शीट और नोटबुक में बनाते है साथ ही अपनी कल्पना व शक्ति और हमारी मदद लेकर उससे सम्बन्धित एक छोटी कविता या स्लोगन भी लिख देते हैं जो दीवार पत्रिका का एक महत्वपूर्ण अंग बन जाता हैं।

भावना जोशी राजकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय सल्ला, पिथौरागढ़ **ग्रामीण बालिका शिक्षा में चुनौतियां, रुकावटें और समाधान विषय** पर प्रस्तुतीकरण किया गया। हमारे विद्यालय का सेवित क्षेत्र अति दुर्गण और नेपाल सीमा से लगा हुआ है। लोगों की सोच समय के हिसाब से काफी पीछे है। कुछ वर्ष पूर्व जब यहां जूनियर विद्यालय की स्थापना हुई बालिका शिक्षा के प्रति लोगों में अजीब सी सोच और धारणाएँ थीं। बालिकाएं कक्षा 5 के बाद विद्यालय नहीं जाती थीं। कम उम्र में ही उनकी शादी कर दी जाती थी या फिर उन्हें घर पर ही बैठा दिया जाता था। विद्यालय में बालिकाओं का नामांकन न्यूनतम था जो विद्यालय के लिए एक चुनौती था। बालिकाओं के घर की कुछ रुढ़ियां, सामाजिक सोच और कुप्रथाएं उन्हें आगे पढ़ने और बढ़ने से रोक रही थीं। गांव की महिलाएं और बालिकाएं कुछ तो निरक्षर थीं और अधिकांश बालिकाएं कक्षा 5 के बाद आगे नहीं पढ़ पाती थीं। कारणों की खोज करने के लिए जब हमने गांव का भ्रमण लोगों से बातचीत व अवलोकन किया तो पता चला–कुछ कारण जो बालिकाओं की शिक्षा में बाधक थे जैसे–ग्रामीण समाज की बालिकाओं के प्रति गलत सोच, रुढ़ियाँ, रुढ़िबद्ध धारणाएँ, अंधविश्वास, बच्चियों के लिए अतिरिक्त घरेलू कार्य, बालिकाओं और बालकों में भेदभाव, आदि।

हमारे विद्यालय में कुछ विशेष प्रयास किए गए जो आज भी निरंतर चल रहे हैं और काफी सफल व प्रभावी भी हैं। यहां पहली चुनौती बालिकाओं को विद्यालय में नामांकित करना थी। इसके लिए बालिकाओं व अभिभावकों से सम्पर्क किया गया। गांव के सामाजिक कार्यक्रमों में शामिल हो कर उनका विश्वास जीता। विद्यालय स्टाफ द्वारा बालिकाओं के लिए शैक्षणिक सामग्री की व्यवस्था की गई। बालिकाओं को उनकी व्यक्तिगत स्वच्छता, उनके अधिकारों के बारे में बताया गया। बालिकाओं से जुड़ी कई योजनाओं की जानकारी और उदाहरण देकर उन्हें बालिका शिक्षा के लिए प्रेरित किया गया। बच्चों की शिक्षा से जुड़े सरकारी नियमों एवं सुविधाओं की जानकारी दी गई। बालिकाओं का विद्यालय में नामांकन हो गया किन्तु अधिकांश बालिकाएं विद्यालय नहीं आ पाती थीं और कक्षा 6 एवं 7 के बाद आगे नहीं पढ़ पाती थीं। उनकी शादी कर दी जाती या फिर उन्हें घरेलू कार्य करने में लगा दिया जाता था। इसके लिए फिर नये प्रयास किये गए। बालिकाओं व अभिभावकों को बच्चों की नियमित उपस्थिति के लिए प्रेरित किया गया। मन की बात पेटिका आदि गतिविधियां शुरू की गई जिनमें बालिकाएं उन बातों को शेयर करती हैं जिन्हें बोल कर नहीं बता पाती हैं।

कुछ वादनों में कहानी व खेलों का आयोजन, विद्यालय का वातावरण बालिका मित्रवत और भयमुक्त मुक्त बनाने का प्रयास, बच्चों को एक छोटी कापी देकर दिन के विशेष क्रियाकलापों को भरवाना, उनके मां या पिता से हस्ताक्षर करवाना, समय–समय पर बालिकाओं को प्रेरित करना, विभिन्न गतिविधियों और प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग एवं समान अवसर देना प्रारम्भ किया गया। समय–समय पर बालिकाओं की व्यक्तिगत काउंसिलिंग शुरू की एवं माता–पिता से बात की

गयी। अभिभावकों को विश्वास में लेकर बालिकाओं एवं बालकों को ब्लॉक तथा जिला स्तर तक प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करवाना एवं बालिकाओं को उनकी ताकत और क्षमताओं की याद दिलाई गयी। इन नवाचारों, नवल प्रयासों के परिणाम काफी सकारात्मक और लाभदायक रहे। विद्यालय में बालिकाओं के नामांकन शत–प्रतिशत रहता है। बालिकाओं की नियमित उपस्थित बढ़ी, विद्यालय में बालिकाओं का ठहराव बना रहता है।

विशेष–बालिकाओं में आत्मसम्मान व आत्मविश्वास में वृद्धि हुई है। बच्चियों में अपनी बात कहने की क्षमता का विकास हुआ है। स्थिति विशेष में विरोध कर पाने व सामना करने के प्रति सार्थक सोच उत्पन्न हुई। स्वावलंबन के प्रति स्वस्थ सोच का विकास हुआ है। उपरोक्त प्रकियाएं निरंतर चल रही हैं।

चन्द्र शेखर जोशी राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय जाजरचिंगरी, पिथौरागढ़ **नवाचार के साथ रोजगार** विषय पर प्रस्तुतीकरण किया गया। वर्ष 2005 में सहायक अध्यापक के पद पर राजकीय प्राथमिक विद्यालय अल्काथल, डीडीहाट, जनपद पिथौरागढ़ में नियुक्ति हुई तो विद्यालय की स्थिति देखकर छात्रों की बेहतर शिक्षा हेतु अपने वेतन का का इस्तेमाल कर आवश्यक सामग्री जुटाई गयी। इसमें विद्यालय के अन्य शिक्षकों एवं समुदाय ने भी साथ दिया। सामुदायिक सहभागिता से विद्यालय संचालन करने की कला में अन्य शिक्षक साथी भी रूचि लेने लगे। वर्ष 2017 में प्रमोशन हो कर जनपद के सबसे दुर्गम विद्यालय जाजरचिंगरी जो नेपाल तथा चीन सीमा पर कालीनदी के तटपर पंचेश्वर नामक स्थान के नजदीक है, मैंने प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यभार ग्रहण किया तो देखा कि इतनी कम धनराशि में गुणवत्तापूर्ण भोजन बच्चों को कैसे दिया जाए। यही सोच ले कर गर्मियों के अवकाश में कृषि वि० वि० पन्तनगर जाकर मशरूम का प्रशिक्षण लेकर कार्य प्रारम्भ किया। सफलता मिली। भोजन में मशरूम खा कर छात्रों को काफी अच्छा लगा। यह एक शून्य निवेश नवाचार था। इस नवाचार के दौरान कुछ परिवार भ्रांतियों के कारण मशरूम नहीं खाने का फैसला ले रहे थे, परन्तु जागरूकता शिविर लगा कर एवं अनेक अधिकारियों के द्वारा विद्यालय भ्रमण के दौरान जनता को जागरूक करके कार्यक्रम लागू करवाया गया।

विद्यालय में किचन गार्डन के साथ खुद बन्द कमरे में मशरूम उगाकर छात्र और अभिभावक जान गये कि यह मशरूम शुद्ध व सुरक्षित है। 32% प्रोटीन युक्त मशरूम से अच्छा कुछ भी नहीं है जो बच्चों को कुपोषण से बचाएगा और इसमें कोई धन भी खर्च नहीं होगा। यह शून्य निवेश नवाचार है। इस किचन गार्डन की जब सरकार ने भी मदद की तो हर स्कूल में किचन गार्डन हेतु धनराशि उपलब्ध करा दी गयी। इससे यह कार्यक्रम और भी गति पकड़ने लगा। 25 विद्यालय जनपद के चुने गये, जहाँ पर यह किचन गार्डन बने। अध्यापकों द्वारा अपने पास से धन खर्च करके अपने विद्यालय में किचन गार्डन बना कर मशरूम का उत्पादन किया गया, जिससे जनपद पिथौरागढ़ का यह नवाचार, रोजगार, पौष्टिक आहार शिक्षा विभाग में मील का पत्थर बन गया। कोविड के समय विद्यालय के मार्गदर्शन द्वारा 265 लोगों को डायट में प्रशिक्षण दिया गया जो प्रवासी वापस शहर छोड़ कर गांव आये थे उनको भी प्रशिक्षण में सम्मिलित किया गया।

विद्यालय में छात्र संख्या में वृद्धि के साथ शत–प्रतिशत उपस्थिति बनाने में व कुपोषण से लड़ने में, रोजगार देने में यह नवाचार मील का पत्थर साबित होता दिख रहा है।

चन्द्र प्रकाश पाल राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय गांधीग्राम बुल्लावाला, देहरादून **सामुदायिक सहभागिता के सम्बन्ध में** प्रस्तुतीकरण किया गया। वर्तमान समय में शहरी क्षेत्रों में बहुसंख्यक प्राइवेट विद्यालय शिक्षा प्रदान करने का कार्य कर रहे हैं परन्तु दूर–दराज के क्षेत्र के बच्चों को शिक्षा प्रदान करने का कार्य केवल और केवल सरकारी विद्यालय कर रहे हैं। संपन्न और सक्षम परिवारों के अधिकांश बच्चे इन प्राइवेट

विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं जबकि सरकारी विद्यालय से उनका कोई सरोकार नहीं होता है। राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय गांधीग्राम, बुल्लावाला द्वारा समाज के अमीर शिक्षित और गणमान्य व्यक्तियों और संस्थाओं को सरकारी विद्यालय से जोड़ने का प्रयास किया गया है। अगस्त–2021 में विद्यालय में कार्यभार ग्रहण करने के समय भवन और शौचालय की खस्ताहाल स्थिति तथा पेयजल स्थिति तो अशोभनीय थी। प्रांगण में रेत बजरी पत्थरों का फैलाव था। शिक्षक साथियों ने अराजक तत्वों का यहां पर डेरा होना बताया। दरवाजे पानी के नल की तोड़फोड़ रोज का कार्य रहता है। कुछ सम्मानित लोगों से बात की गई तो जवाब मिला कि विद्यालय के पड़ोस का मोहल्ला बहुत खराब है उन्हें तो कुछ कह नहीं सकते। लड़ाई झगड़े पर उतारु हो जाते हैं। मेरे सामने चुनौती बहुत बड़ी थी इस चुनौती को स्वीकार करते हुए कार्य आरंभ किया गया।

2 अक्टूबर 2021 गांधी जयंती से सर्वप्रथम विद्यालय के बाहरी हिस्से की साफ सफाई कराई गई। यह संकल्प लिया गया कि विद्यालय का सभी कार्य स्थानीय व्यक्तियों से ही कराना है। विद्यालय भवन की रंगाई–पुताई, शौचालय के दरवाजों की मरम्मत, पानी की व्यवस्था, प्रांगण की साफ सफाई सुबह से शाम तक विद्यालय में रुककर स्वयं खड़े होकर, स्थानीय अभिभावकों के द्वारा उनके समक्ष स्वयं खड़े रहकर संपन्न कराए। गांव वालों का विद्यालय में आने–जाने का सिलसिला शुरू हुआ। अभिभावक समझने लगे कि यह हमारी जिम्मेदारी है।

विद्यालय में सहयोग करने के लिए स्थानीय व्यक्तियों द्वारा पानी के लिए सोख्ता गड्ढा निर्माण, कक्षा कक्ष में व्हाइट बोर्ड की व्यवस्था, भवन रंगाई, विद्यालय में विशेष भोज, कक्षा कक्षों में पंखे लगवाने का कार्य, विद्यालय में प्रतिदिन समाचार पत्र उपलब्ध कराने का कार्य, विद्यालय भवन की ग्रौटिंग तथा प्रांगण में स्ट्रीट लाइट, पेयजल एवं शौचालय की उत्तम व्यवस्था, पेयजल व्यवस्था के ऊपर टिन शेड का निर्माण, वॉटर कूलर की व्यवस्था आदि कार्य किये गए। हमारे सहायक अध्यापक द्वारा मुख्य द्वार का निर्माण कार्य करने की जिम्मेदारी ली। इसी प्रकार विद्यार्थियों की स्वास्थ्य जांच शिविर, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा शिविर, नशा मुक्त भारत अभियान शिविर आयोजित किए गए। विद्यालय में स्थानीय संस्था द्वारा विशेष भोज एवं विद्यार्थियों को स्टेशनरी प्रदान की जाती है। पर्यावरण और स्वच्छता पर विशेष गोष्ठी में माननीय विधायक द्वारा विद्यालय में भोजन व्यवस्था हेतु टीन सेड का निर्माण कराया गया।

आज ग्राम बुल्लावाला के अभिभावक विद्यालय के प्रति संवेदनशील होकर मिलनसार और जिम्मेदार हो गए हैं कि सदैव विद्यालय की उचित देखभाल करते हैं। विद्यालय से बच्चे खेल प्रतियोगिताओं में, मुख्यमंत्री उददीयमान खिलाड़ी योजना और मुख्यमंत्री छात्रवृत्ति योजना जैसी सभी प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करते हैं और विद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं।

डी.डी. शर्मा, अटल उत्कृष्ट राजकीय इन्टरमीडिएट कॉलेज सिमली, चमोली **के द्वारा शिक्षा के प्रति जागरूक करने के प्रभावी उपाय** के सम्बन्ध में प्रस्तुतीकरण किया गया। विद्यालय में 245 छात्र–छात्राएं अध्ययनरत है जो लगभग तीन किलोमीटर से लेकर पांच किलोमीटर दूर तक पैदल चल कर विद्यालय आते हैं। ग्रामीण वातावरण होने के कारण तथा शिक्षित लोगों के पलायन होने के कारण शिक्षा के प्रति अभिभावकों का व्यवहार उदासीन रहता है। ग्रामीण समस्याओं को समझते हुए निम्नलिखित कार्यों को अति आवश्यक महसूस करते हुए जो कार्य विद्यालय स्तर पर किए वे निन्नांकित हैं–

विद्यालय के सेवित क्षेत्र मे शिक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने हेतु ग्राम सभाओं में निरक्षर अभिभावकों को साक्षर करने तथा शिक्षा की आवश्यकता का प्रसार करने हेतु प्रत्येक ग्राम सभा की छात्र–छात्राओं द्वारा निरक्षर व्यक्तियों की

सूची तैयार कर छात्रों के द्वारा निरक्षर अभिभावकों को साक्षर करने की जिम्मेदारी दी गई। यह कार्य साप्ताहिक आधार पर किया गया। इस कार्य के साथ–साथ अलग–अलग तरह की सूचनाएं जैसे स्वच्छता, जल संरक्षण एवं पर्यावरण आदि जानकारी को ग्रामसभा में प्रसारित किया गया जिसका प्रभाव अभिभावकों द्वारा सामुदायिक सहयोग के रूप में परिलक्षित हुआ। वर्ष 2023–24 में हमारे विद्यालय में इन्टरमीडिएट छात्रों को गणित विषय पढ़ाने हेतु शिक्षक नहीं था जिस कारण छात्रों को विषय पढ़ने में काफी कठिनाई हो रही थी। अभिभावकों द्वारा गणित विषय में एक विषय अध्यापक को नियुक्त किया गया तथा परिणाम आशानुरूप रहा।

छात्रों को भौतिक विज्ञान विषय समझने में कठिनाई महसूस होती है। विद्यालय में प्रोजेक्ट तथा इंटरनेट रिसोर्सेज का प्रयोग कर विषय को अधिक प्रभावशाली रुप से प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया जिस कारण विद्यालय का परिणाम शत प्रतिशत रहा। सभी विषयों के तथा सभी कक्षाओं के वॉट्सऐप ग्रुप बनाकर शिक्षण कार्य सम्पादित किया जा रहा है। छोटी कक्षा के विद्यार्थियों की कक्षा को इन्टरैक्टिव बनाने हेतु ''हैंडस ऑन प्रैक्टिस'' की जाती है।

जीव विज्ञान विषय को प्रोजेक्ट आधारित बनाया गया है जिससे विद्यार्थी शिक्षण के साथ–साथ वास्तविक जीवन की समस्याओं को समझ सकें तथा उसका अध्ययन कर सकें। जैसे समय समय पर होने वाले मौसम परिवर्तन के कारण होने वाली बीमारियाँ फ्लू, जुकाम, खून की कमी, कुपोषण के आंकड़े एकत्रित कर अध्ययन करना, अपने स्तर से शोध परियोजना तैयार करना, समाज में मोटे अनाज के प्रयोग को प्रोत्साहित करना तथा गांव में अपने आस पास होने वाली परेशानियों, समस्याओं को चिन्हांकित करना तथा अपने स्तर से हल करना या समस्या के समाधान का प्रारूप तैयार कर विद्यालय के आइडिया बॉक्स मे डालना, जिससे छात्रों में अपने मौलिक विचार विकसित हो सकें।

पर्यावरण एक विश्वव्यापी समस्या है इससे जागरूक करने के लिए हमारे विद्यालय के सभी अध्यापकों द्वारा प्रत्येक दिन कक्षा–कक्ष में पर्यावरण को बचाने एवं स्वच्छता को बनाए रखने के लिए छात्रों को निर्देश दिए जाते हैं। विद्यालय स्तर पर कुछ छात्रों को पर्यावरण मित्र बनाया गया है जो विद्यालय में ''सिंगल यूज'' प्लास्टिक तथा अन्य प्रदूषक को विद्यालय मे प्रयोग न करने हेतु प्रेरित करते हैं। विद्यालय में बालप्रहरी पानी के स्रोतौ की स्वच्छता करते है तथा समाज को जागरूक करते है। विगत वर्ष छात्रों द्वारा 400 वृक्षों का रोपण किया गया जिसमे अभिभावकों का सहयोग भी रहा। वृक्षारोपण विद्यालय परिसर तथा आस पास के सभी ग्राम सभाओं में किया गया।

शिक्षा मे रोजगारपरक कौशल विकसित करने हेतु आगामी वर्ष 2025–26 की रुपरेखा भी तैयार की जा रही है। जिसमे छात्रो द्वारा स्थानीय वस्तुओं से उत्पादों का निर्माण कराना, उत्पादों का निर्माण कर, प्रदर्शनी आयोजित कराना, तत्पश्चात उत्पादन को बाजार में भेजा जाएगा जिसका संपूर्ण कार्य स्थानीय स्तर पर अभिभावकों द्वारा निर्देशित किया जाएगा, विपणन तथा आय–व्यय, लाभ–हानि संपूर्ण कार्य छात्रों द्वारा किया जाएगा। जिससे छात्रों में कम्यूनिकेशन स्किल, ''इकोनॉमिक अवेर्नेस'', डिमांड एंड सप्लाई की समझ विकसित हो सकेंगी। अंत में हम विद्यालय में ऐसे वातावरण का निर्माण करने हेतु प्रयासरत है जिसमें प्रत्येक छात्र अपनी शिक्षा, आजीविका, स्वास्थ्य, पर्यावरण तथा समाज के प्रति जागरूक हो, तथा आत्मनिर्भर रह सके।

गबर सिंह बिष्ट राजकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय मुस्याखांद, पौड़ी गढ़वाल के द्वारा **सामूहिक कक्षा तथा सूचना एवं प्रौद्योगिकी का शिक्षण में प्रयोग** के सम्बन्ध में प्रस्तुतीकरण किया गया। विद्यालय शिक्षा का केन्द्र है। शिक्षा के तीन महत्वपूर्ण बिन्दु होते हैं–अभिभावक, छात्र एवं शिक्षक। प्रत्येक माता–पिता चाहते हैं कि उनका बच्चा अपनी शिक्षा पूरी कर कुछ ऐसा करे कि वह कल समाज में एक बेह्त्तर नागरिक बन सके। इस

सोच के साथ हमने अपने विद्यालय का ध्येय वाक्य रखा है, बच्चों के प्रदर्शन स्तर को बेहतर करना। बच्चों ने विभिन्न छात्रवृत्ति परीक्षाओं, ''इन्सपायर अवार्ड'' तथा राष्ट्रीय आविष्कार क्विज प्रतियोगिता में पिछले कई वर्षों से अपना एक स्थान प्राप्त किया है। जब इन उपलब्धियों के परिप्रेक्ष्य में हमने अपनी शैक्षणिक गतिविधियों को दृष्टिगत रखा तो पाया कि सामूहिक कक्षा शिक्षण के माध्यम से आनन्दम् गतिविधियाँ तथा शिक्षण में आई.सी.टी विधा का प्रयोग महत्वपूर्ण कारक रहे हैं।

आनन्दम् की गतिविधियों को सीधे–सीधे सीखने की प्रक्रिया में अंतरित किया जाता है। इन्हीं गतिविधियों का प्रयोग कर खेल–खेल में ही विभिन्न विषयों के सीखने के प्रतिफलों की प्राप्ति करवायी जाती है। बच्चों के बालमन में शिक्षा के प्रति एक जिज्ञासा पैदा की जाती है। आनन्दम् की गतिविधियों से बच्चों में आत्मविश्वास आता है तथा वे सीखने की प्रक्रिया से अवगत होते हुए सरलतम तरीके से उनके अन्दर उत्पन्न संवेदनशीलता से अपनी गतिविधियों को कर पाते हैं। विभिन्न विषयों को सह सम्बन्ध कर आई.सी. टी के प्रयोग द्वारा कुछ नया सिखाया जाता है, इसी कक्षा के माध्यम से दिनभर की शिक्षण गतिविधियों की पुनरावृत्ति भी हो जाती है।

बहु कक्षा शिक्षण का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की शैक्षिक अधिगमों की प्राप्ति ही नहीं, अपितु छात्रवृत्ति तथा प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी करवाना, उनकी शैक्षिक कमियों को ध्यान में रखकर समावेशी वातावरण तैयार करना और समूह शिक्षण करवाना है। इससे जहां एक ओर सभी विषयों जैसे–गणित, विज्ञान, भाषा तथा सामाजिक विषय का समन्वय किया जाता है, वहीं दूसरी ओर अलग–अलग स्तर पर समान अधिगम प्रतिफलों का भी एकीकरण किया जाता है। सूचना एवं प्रौद्योगिकी के संसाधनों का प्रयोग करने से छात्रवृत्ति परीक्षाओं की तैयारी में बड़ी मदद मिलती है। इनकी सहायता से विभिन्न विषयों का समावेश करते हुए 50 या 100 प्रश्नों का एक प्रश्नपत्र बनाकर प्रोजेक्टर के माध्यम से कम से कम समय में अधिक प्रतिफल प्राप्त करने के उद्देश्य से प्रस्तुत किया जाता है।

इन नवाचारों के प्रतिफल हमारे विद्यालय का प्रदर्शन स्तर उत्तम रहा है। अभी तक 25 से अधिक छात्रों को राज्य तथा राष्ट्रीय छात्रवृत्ति में सफलता प्राप्त हुई है तथा 5 छात्रों को इन्सपायर अवार्ड प्राप्त हो चुका है। इसी वर्ष मुख्यमंत्री छात्रवृत्ति योजना में ब्लॉक के अंतर्गत 10 प्रतिशत चयनित 16 छात्रों में से हैं। हमारे विद्यालय से 6 छात्रों को सफलता मिली है।

गायत्री पाण्डे, आदर्श प्राथमिक विद्यालय ट्रांजिट कैंप, उधमसिंह नगर **विद्यालय में शैक्षिक वातावरण निर्माण** के सम्बन्ध में प्रस्तुतीकरण किया गया। विद्यालय में काम करते हुये इस बात को भी महसूस किया कि सभी साथी काम अपने–अपने ढंग से कर रहे हैं। मेरे सामने एक समस्या थी कि एक सामूहिक समझ के साथ विद्यालय को कैसे देखें? सभी शिक्षक मिलकर विद्यालय में अकादमिक माहौल कैसे बनाएँ? विद्यालय में काम करते हुये मुझे एहसास हुआ कि शैक्षिक माहौल में बदलाव लाने के लिए अपने साथियों के साथ बातचीत, प्रिंटरिच वातावरण हेतु चार्ट, कुछ कहानी, कविता आदि के पेंटिंग, कक्षा में बच्चों के साथ नियमित बातचीत एवं कुछ नवाचार एक उपयुक्त माध्यम है।

मेरा मकसद Leading by doing यानी खुद काम करते हुये अपने सहयोगी शिक्षकों के साथ काम को आगे बढ़ाना रहा है। सहयोगी शिक्षिकाओं एवं शिक्षकों के साथ मिलकर कुछ प्रयास किये हैं। विद्यालय में प्रिंट–रिच वातावरण बनाने के लिए कक्षा में दीवारों पर किताबें, चार्ट, पोस्टर, और अन्य प्रिंट सामग्री को देखकर बच्चों में पढ़ने की इच्छा उत्पन्न हुई। जिससे एक स्वाभाविक और आकर्षक माहौल तैयार हुआ है। विद्यालय के पुस्तकालय में 300 पुस्तकें है। जिसमें एन.बी.टी.,सी.बी.टी., एकलव्य और प्रथम प्रकाशन की कहानियों और कविताओं की किताबें शामिल हैं।

कुछ किताबें शिक्षकों एवं अभिभावकों के लिए भी है जैसे अग्नि की उड़ान, तोतोचान, बच्चों की भाषा एवं अध्यापक या बड़ों की जीवनियाँ आदि उपलब्ध हैं। हम सहयोगियों के साथ बाल साहित्य की किताबों को पढ़ते हैं और पुस्तकालय से कुछ कहानियों की किताबें कक्षा में लेकर जाते हैं। बच्चे सीख रहे हैं एवं नियमित उपस्थित हो रहे और प्रार्थना सभा से ही बच्चे सक्रिय हो जाते हैं। कभी पैरेंट्स मीटिंग, मदर्स डे, ग्रैंडपेरेंट्स डे मना कर उनके साथ त्योहार मना रहे होते हैं। बच्चे पाठ्यपुस्तक से इतर कुछ रोल प्ले करते हैं जिससे उनमें आत्मविश्वास और सर्जनात्मकता का विकास होता है और उनमें झिझक आदि दूर हो जाती है। सीखने–सिखाने के उत्सव के रुप में एवं विद्यालय में शैक्षिक माहौल के लिए भी 4 मार्च 2024 को बाल शोध मेले का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में डायट के प्रधानाचार्य एवं आसपास के 5 शिक्षक साथी तथा 45 अभिभावक शामिल हुये।

प्रधानाध्यापिका के रूप में काम करते एक समझ बनी कि विद्यालय में शैक्षिक माहौल बनाने के लिए प्रिंट–रिच वातावरण के साथ–साथ विद्यालय में सीखने–सिखाने से जुड़ी प्रक्रियाओं को अपनाना पड़ता है। लोंगों के साथ जुड़ाव बनाना पड़ता है। साथ ही कुछ प्रक्रियाओं को स्थापित करवाने एवं प्रोत्साहित कर साथ में खुद करते रहने से भी काम होता है।

कल्पना तिवारी, राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय सुखरो देवी, पौड़ी गढ़वाल **पुस्तकालय संचालन की प्रभावी प्रक्रियायें के सम्बन्ध में** अवगत कराया गया। हमारे विद्यालय में छात्रों को विभिन्न प्रकार की शैक्षणिक और गैर–शैक्षणिक गतिविधियों के माध्यम से प्रोत्साहित किया जाता है। 2016 में जी.एम.पी.एस. सुखरो देवी का कार्यभार संभालते समय मेरे सामने बहुत सी चुनौतियां थी, लेकिन फिर अपने ध्येय वाक्य "कोशिश करने वालों की हार नहीं होती" को लेकर चली तो सीमित संसाधनों के बावजूद भी कामयाबी हासिल हुई। उस समय यहां पर छात्र संख्या 42 थी जो वर्तमान में 45 है, निर्धारित कसौटी के अनुसार विद्यालय को निपुण विद्यालय बनाने का उद्देश्य रहा है। इस कामयाबी को हासिल करने के लिए हमने विद्यालय सौंदर्यीकरण का कार्य किया जिसमें प्रातःकालीन सभा का प्रभावी संचालन, प्रिंट–रिच द्वारा विद्यालय को आकर्षक बनाना, पुष्प वाटिका का निर्माण, ग्रीष्मकालीन शिविर, प्रतिभा दिवस एवं बाल दिवस को विशेष बनाना, बाल पुस्तकालय का निर्माण, विद्यालय हेतु शिक्षकों के द्वारा अतिरिक्त समय प्रदान किया जाना, नव प्रवेशित छात्रों के लिए पुस्तकालय का स्वागत कार्यक्रम का आयोजन, स्मार्ट क्लास की स्थापना कर छात्रों को आई.सी. टी से जोड़ा गया।

समुदाय से विद्यालय के लिए भौतिक संसाधन जुटाए। समुदाय से नामांकन सहयोग, प्रति माह एस.एम.सी. की बैठक का आयोजन एवं छात्रों की प्रगति को अभिभावकों के साथ साझा करना, समुदाय द्वारा विद्यालय को अतिरिक्त समय दान किया गया। वर्ष 2016 में ''रूम टू रीड'' संस्था द्वारा स्थापित पुस्तकालय से प्रेरणा लेकर 2017 में मैने अपने विद्यालय में पुस्तकालय कक्ष को स्थापित किया। बच्चों में पुस्तकालय के प्रति रुचि जागृत करने के लिए पुस्तकालय बाल प्रबंधन समिति का गठन किया गया है।

समय विभाजन चक्र में पुस्तकालय को प्रतिदिन स्थान दिया गया है जिसमें सभी कक्षाएं शामिल हैं। पुस्तकालय में बच्चों द्वारा स्वतंत्र पठन, युगल पठन, मुखर पठन, समूह पठन किया जाता है। बच्चे पढ़ी गई कहानियों को अपनी कल्पनानुसार चित्रण कर बुलेटिन बोर्ड पर प्रदर्शित करते हैं। शिक्षक सभी छात्रों का क्रियाकलापों की निगरानी करते हैं और जरूरत पड़ने पर छात्रों की शंका समाधान करते हैं। विद्यालय में पुस्तकालय कक्ष की साज–सज्जा स्वयं के प्रयास और समुदाय के सहयोग से किया गया।

पुस्तकालय में पुस्तकें विभाग द्वारा, समुदाय

द्वारा, विद्यालय के अध्यापकों द्वारा बनाई गई पत्रिकाएँ, छात्रों द्वारा बनाई गई बाल पत्रिकाएँ, अभिभावकों के सहयोग द्वारा, धाद संस्था द्वारा प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ उपलब्ध हैं। पुस्तकालय से बच्चों के पठन कौशल में सुधार हुआ है। बच्चों की पढ़ने की आदत विकसित हुई जिससे छात्रों की भाषाई कौशल को मजबूती मिली जिससे उनकी सोचने और समझने की क्षमता का विकास हुआ। बच्चों की कल्पना शक्ति का विकास हुआ साथ ही उन में आत्मविश्वास बढ़ा। पुस्तकालय विद्यालय में केवल शिक्षा नहीं देता, बल्कि छात्रों के व्यक्तित्व और सामाजिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान करता है। विद्यालय की सफलता उसकी शिक्षण विधियों, समर्पित शिक्षकों, और समुदाय के सहयोग पर निर्भर करती है। वर्ष 2024 में रा.आ.प्रा.वि. सुखरो देवी को "राज्य स्तरीय आदर्श पुस्तकालय" के पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया गया है।

कर्मवीर सिंह, पी0एम0श्री अटल उत्कृष्ट विद्यालय श्री 1008 गीता स्वामी रा.इ.का. गोपेश्वर, चमोली **सम्पूर्ण गुणवत्ता प्रबंधन एक दृष्टि में** प्रस्तुतीकरण किया गया। विद्यालय के भौतिक रूपान्तरण से शैक्षणिक अभिवृद्धि–प्रवेश द्वार, ऑडिटोरियम, विद्यालय का बाह्य आवरण, सम्पूर्ण छात्रों के लिए गणवेश, कक्षा–कक्ष एवं शौचालय के साथ छात्र–छात्राओं से सम्बन्धित सभी सुविधाओं को विभागीय व जन सहयोग से आकर्षक व शिक्षण अधिगम के अनुरूप बनाने का कार्य किया गया है। इस विद्यालय में प्रवेश के लिए इच्छुक छात्र–छात्राओं की अधिकता के चलते और सी.बी.एस.ई. के मानकों को ध्यान में रखते हुए कक्षा–09 व कक्षा–7 में प्रवेश परीक्षा के माध्यम से ही प्रवेश की प्रक्रिया अपनाई जाती है।

समावेशी शिक्षा प्रोत्साहन से वर्तमान सत्र 2024–25 में कक्षा 06 से 12 तक कुल 523 (356 छात्र व 167 छात्राएं) अध्ययनरत हैं। विद्यालय में 75 प्रतिशत कक्षाएं intractive white board के द्वारा संचालित हो रही हैं इसके साथ ही सभी कक्षा–कक्ष एवं विद्यालय) High Speed Jio 5G network/Wi-Fi से आच्छादित है जिससे छात्र प्रत्यक्ष रूप से लाभान्वित होते हैं। विद्यालय के सभी छात्र–छात्राओं के लिए सामान्य गणवेश के अतिरिक्त ट्रैक सूट व टी शर्ट की व्यवस्था की गयी है। विगत तीन वर्षों से क्विज प्रतियोगिता में राज्य स्तर पर हमारे विद्यालय ने प्रतिभाग कर सम्मानजनक स्थान प्राप्त किया है। NMMS की परीक्षा उत्तीर्ण कर 06 छात्र–छात्राएं इस वर्ष कक्षा 09 में अध्ययनरत हैं। इस वर्ष 09 छात्र–छात्राओं का मुख्यमंत्री मेधावी छात्र प्रोत्साहन छात्रवृत्ति योजना में चयन, इस वर्ष सीमान्त जनपदीय बाल विज्ञान कांग्रेस सीनियर वर्ग नाटक में विद्यालय को प्रथम व हिन्दी कविता में द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ एवं 03 छात्रों का चयन वॉलीवाल प्रतियोगिता में राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिभाग के लिए हुआ है।

हमारा पूरा विद्यालय सी0सी0टी0वी0 व फॉयर सेफ्टी के मानकों को पूर्ण करता है। छात्र–छात्राओं द्वारा प्रतिवर्ष पी0एम0श्री के सहयोग से आई0आई0टी0 रूड़की व अन्य संस्थानों का शैक्षिक भ्रमण का कार्य क्रियान्वित किया जाता है। एन0सी0सी0 (एस0डी0,जे0डी0) तथा एन0एस0एस0 के माध्यम से छात्र–छात्राओं के शारीरिक तथा बौद्धिक मूल्यों के विकास में सहायता मिल रही है। जिला स्तर के सहयोग से प्राप्त जनपद की प्रथम गणित लैब इस विद्यालय में शैक्षणिक सत्र 2021–2022 में स्थापित होने के पश्चात छात्र–छात्राओं में गणित विषय के प्रति रूचि में अभिवृद्धि परिलक्षित हुयी है। कक्षा 6 से कक्षा 12वीं के छात्रों में गणित लैब स्थापित होने के पश्चात विद्यालय के छात्रों में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिला है। दैनिक जीवन में व्यावहारिक रूप में गणित का अधिकाधिक उपयोग छात्रों में रचनात्मक विकास करने में सहायक सिद्ध हुआ है। प्रयोगशाला के उपकरणों के प्रयोग के पश्चात छात्रों को 2D एवं 3D की अवधारणा को समझने में आसानी हुयी है। विद्यालय सम्पूर्ण गुणवतता प्रबंधन की ओर बढ़ रहा है।

कुँवर सिंह गड़िया राजकीय प्राथमिक विद्यालय ब्यारा, चमोली **एफ.एन.एल. और आंकलन में समुदाय का सहयोग के सम्बन्ध में** प्रस्तुतीकरण दिया गया। किसी भी शैक्षणिक संस्था का सर्वांगीण विकास उसके पाँच आयामों पर आधारित होता है। यदि इसमें से कोई भी कमजोर पड़ जाता है तो उसका प्रभाव विद्यालय की सीखने–सिखाने की प्रक्रिया पर पड़ता है। विद्यालय का सर्वांगीण विकास अवरुद्ध होता है। ये पाँच आयाम निम्नवत हैं–विद्यालय का भौतिक स्वरूप व वातावरण, शिक्षक, छात्र–छात्राएँ, पुस्तकें तथा समुदाय एवं अभिभावक। हम अपने विद्यालय में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान (एफ.एल.एन.) के तहत कार्य कर रहे हैं जिसके तहत विद्यालय में अनेक गतिविधियों एवं प्रक्रियाओं को विद्यालय में संचालित किया जा रहा है।

एफ.एल.एन. के तीनों विकासात्मक लक्ष्य शारीरिक, सामाजिक–भावनात्मक एवं मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य की सम्प्राप्ति, निपुण भारत के लक्ष्यों की पूर्ति यथासमय प्राप्त करना है। हमारे द्वारा संचालित प्रमुख प्रक्रियाएं इस प्रकार हैं–सुबह की सभा में बच्चों की स्वच्छता का आंकलन स्वयं बच्चों द्वारा किया जाना, सुबह की सभा में बच्चों को किसी थीम पर निर्धारित समय में स्वतंत्र रुप से प्रत्येक बच्चे द्वारा कुछ शब्द या वाक्य बोलना, उपस्थिति को रोचक बनाने के लिए सप्ताह में प्रत्येक दिन अलग–अलग नाम रखकर उपस्थिति बोलने के लिए प्रेरित करना, उँगलियों के माध्यम से पैमाने की अवधारणा स्पष्ट कराना, स्वतन्त्र लेखन के तहत कविता, कहानियों का निर्माण कराना, डीकोडिंग और अवलोकन क्षमता, तार्किक क्षमता, अभिव्यक्ति, सृजनात्मक कौशल, प्रश्न निर्माण, सह पठन में स्वतन्त्र रुप से प्रत्येक बच्चे को समान अवसर उपलब्ध कराना। हमें इन प्रक्रियाओं से अच्छे परिणाम भी मिले रहे हैं।

विद्यालय के शैक्षिक विकास में जितना महत्व अध्यापक और बच्चों का होता है उतना ही महत्व समुदाय एवं अभिभावकों का भी होता है। विद्यालय स्तर पर एक तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन कर समुदाय एवं अभिभावकों के साथ एफ.एल.एन. के विकासात्मक लक्ष्य, निपुण भारत मिशन के निर्धारित लक्ष्यों तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों पर चर्चा–परिचर्चा की गयी और सभी अभिभावकों को प्रत्यक्ष रूप से सीखने सिखाने की प्रक्रिया के तहत एक पाक्षिक कार्ययोजना बनाकर सभी अभिभावकों को प्रत्येक दिन बच्चे के पढ़ने की गति आंकलन–प्रपत्र में हर रोज आंकलन का कार्य दिया गया जिससे अभिभावक प्रत्येक दिन अपने बच्चों के साथ प्रत्यक्ष रूप से जुड़े रहते हैं।

बच्चे को मातृभाषा में भी सीखने के अवसर उपलब्ध कराने के लिए हम दोनों अध्यापक मातृभाषा को सीखने सिखाने में प्रयुक्त करते हैं। लेकिन इसे अधिक प्रभावी बनाने के लिए हम समुदाय एंव अभिभावकों को भी विद्यालय में बुलाकर उनके बीच बच्चों के सम्मुख लोक गीत, कहानियाँ, आणा–पखाणा की प्रतियोगितायें कराते हैं। हमने इन सामग्रियों को फिर अपने पाठ्य पुस्तकों के कंटैन्ट से मिलान किया इससे बच्चों को काफी मदद मिली। बच्चों एवं अभिभावकों को भी पढ़ने हेतु समय–समय पर प्रोत्साहित किया जाता है। बच्चे अपनी रूचि के स्तर के अनुसार किताबें पढ़ते और समझ के साथ पढ़ी या सीखी गयी विषय वस्तु को साझा करते हैं जो कि एफ एल एन के निर्धारित लक्ष्यों की सम्प्राप्ति हेतु काफी महत्वपूर्ण है।

हमने बच्चों के आंकलन के लिए अभिभावकों को भी शामिल किया। इसके पीछे ये उद्देश्य था कि वे स्कूल स्तर पर होने वाली सारी प्रक्रियाओं का हिस्सा बन सके। वे समझ पाएँ कि उनके बच्चों को आखिर सीखने में कहाँ दिक्कत आ रही है और उसके लिए किस तरह का समाधान कर सकते हैं। वे अपने बच्चों का काम देखते और बच्चे अपने माता–पिता के सामने हिन्दी की किताब पढ़ते और फिर पढ़ी हुई विषय वस्तु का मतलब बताते हैं। इसी तरह गणित विषय में भी बच्चे

सवाल हल करके बताते हैं जिसका आंकलन स्वयं अभिभावक करते हैं। हमारे स्कूल में सभी बच्चे समझकर पढ़ लिख लेते हैं तथा समुदाय के सहयोग से हमें और बच्चों को बहुत मदद मिल रही है।

मदन लाल कपरवाण, राजकीय आदर्श उच्च प्राथमिक विद्यालय हरमनी, चमोली **छात्र–छात्राओं को पढ़ने–लिखने से जोड़ने के लिए सुबह की सभा का उपयोग** के सम्बन्ध में विचारों को साझा किया गया जो कि निम्नवत है। शिक्षण कार्य करने से पूर्व सभी विद्यालयों में सुबह की प्रार्थना सभा का आयोजन किया जाता है। जिससे छात्रों में एक नवीन सृजनात्मक कौशल का विकास होता है। छात्रों की शैक्षिक गुणवत्ता मे कमी को दूर करने के लिए सुबह की प्रार्थना सभा में विभिन्न क्रियाकलापों व गतिविधियों को जोड़ा गया जिससे छात्रों की शिक्षा में गुणवत्ता आ सके। हमने अपने विद्यालय में कुछ नवीन क्रियाकलाप व गतिविधियां की जिनसे छात्रों के अंदर का संकोच दूर किया जा रहा है। हमने देखा कि प्रार्थना सभा में छात्रों और छात्राओं की पंक्ति अलग–अलग लगती थी हमने उसमें सुधार कर मिश्रित पंक्तियाँ बनायी। पहले पहले छात्र–छात्रायें संकोच कर रहे थे लेकिन अब धीरे–धीरे सभी के अंदर की संकोच की भावना दूर होने लगी है।

प्रार्थना सभा का सम्पूर्ण कार्य छात्र–छात्राओं के आपसी तालमेल व गतिविधियों से किया जा रहा है। विद्यालय में प्रत्येक दिन वन्दना वाद्य यंत्रों के साथ की जाती है जिसमे हमने छात्रों को हिन्दी, गढवाली, व अंग्रेजी वन्दना का भी अभ्यास कराया है और सभी छात्र सीख रहें हैं। समूह गान का हिन्दी, गढवाली में अभ्यास कर छात्रों को प्रेरित किया जा रहा है। हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, और गढवाली में छात्रों को प्रतिज्ञा सिखाई जा रही है। छात्रों को स्थानीय, राज्य, देश व विदेश, खेल संबंधी और मौसम संबंधी समाचार से जोड़ा गया हैं, जिससे लगभग सभी छात्र अपनी बारी आने पर आगे आकर मौखिक व लिखित रूप में बोलते हैं। इससे छात्रों के अंदर अपने समाज की विभिन्न गतिविधियों व देश विदेश के क्रियाकलापों को जोड़ा गया है जिससे छात्रों में शिक्षा की गुणवता आ सके। साथ ही छात्रों का सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और बौद्धिक पहलुओं का भी विकास हो रहा है और छात्रों के अंदर आत्मविश्वास जागृत किया जा रहा है।

सामान्य ज्ञान में छात्रों द्वारा अपने विषय व अपनी कक्षा के आधार पर प्रत्येक विषय के जो पाठ पढ़ाए जा रहे हैं उनसे सामान्य ज्ञान के प्रश्न तैयार कर प्रार्थना सभा में सामूहिक रूप से तैयारी करते हैं। छात्र कहानियां पढ़कर अथवा स्वयं भी कहानियां बना कर प्रेरक प्रसंग सभा मे मौखिक रूप से बोल रहे हैं इससे भी छात्रों के पढ़ने लिखने व सुनने व बोलने के कौशलों का विकास हो रहा है। शिक्षा में गुणवता लाने के लिए छात्रों द्वारा प्रत्येक दिन अपनी–अपनी बारी पर सूक्तियाँ अनमोल वचन, दोहा, श्लोक, कविता आदि गतिविधियां हाव–भाव के साथ मंच पर बोलने का प्रयास किया जा रह है और लगभग 40 व 50 बच्चे धैर्य के साथ बोल लेते हैं और अन्य छात्र भी सीखने का प्रयास कर रहे हैं। बच्चों को आस–पास व बाहरी परिवेश से जोड़कर शैक्षिक वातावरण तैयार किया जा रहा है, हमारे विद्यालय में सारी गतिविधियां समूहों व कक्षाओं के माध्यम से अपनी बारी पर की जा रही है अन्य बच्चे भी धीरे–धीरे सीखने का प्रयास कर रहे हैं। उनको भी शिक्षक द्वारा आठवें वादन अथवा शारीरिक व्यायाम के वादन में सीखाने का प्रयास जारी है। इस समस्त कार्यक्रम में लगभग 30 से 45 मिनट लग जाते हैं ।

मंजू जेकब, पी.एम. श्री राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय बमोली, पौड़ी गढ़वाल **रीडिंग कार्नर एवं पुस्तकालय परस्पर नियोजन के अनुभव** के अपने विचार साझा किये। छात्र–छात्राओं को सीखने–सिखाने के लिए प्रेरित करना। प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों के लिए

महत्वपूर्ण एवं साथ ही चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। प्रस्तुत सार इस बात पर प्रकाश डालता है कि रीडिंग कॉर्नर एवं पुस्तकालय का परस्पर कार्यान्चयन कैसे छात्र–छात्राओं के बौद्धिक, शारीरिक, मानसिक एवं उनके अधिगम स्तर में सुधार ला सकता है। इसके लिए हमारे द्वारा अच्छी तरह से सुव्यवस्थित रीडिंग कॉर्नर का निर्माण किया गया जहां बच्चे स्वतंत्र रूप से अपने साथियों के साथ बैठकर पठन अभ्यास कर सकें। हमारे द्वारा सुनिश्चित किया गया कि रीडिंग कॉर्नर में बच्चे बैठकर आनन्दायक माहौल में पढ़ सकें इसके लिए रीडिंग कॉर्नर में उचित बैठक व्यवस्था बनाई गई जहां पुस्तकें आकर्षक और सभी बच्चों के पहुंच में हों। रीडिंग कॉर्नर में सभी पुस्तकों को बच्चों के स्तर के अनुसार अलग–अलग किया और कविता और पोस्ट–कार्ड भी रीडिंग कॉर्नर में बच्चों की रूचि बनाने हेतु रखी गई है, जहां पर कक्षा 3 व 4 के बच्चे अपनी मनपसंद की किताबें पढ़ते हैं और जिन बच्चों को घर के लिए किताबे उपलब्ध होती हैं वे रीडिंग कॉर्नर के बारे में समझने लगे हैं। रीडिंग कॉर्नर में बच्चे न सिर्फ कहानियां पढ़ते हैं बल्की उससे सम्बन्धित चित्र भी बनाते हैं और पढ़ी गई कहानियों पर आपस में बात–चीत भी करते हैं। कठिन स्थलीय बिन्दुओं को समझाने में शिक्षक बच्चों की सहायता करते हैं। कहानी कविता का वाचन व न्यूजपेपर रीडिंग प्रार्थना सभा में करवाई जाती है। इससे बच्चों के अन्दर पढ़ने, लिखने के प्रति एक जागृति उत्पन्न हुई है साथ ही पढ़ी गई कहानी कविताओं को बच्चों द्वारा प्रार्थना सभा में बड़े ही हाव–भाव के साथ सुनाया जाता है।

विद्यालय में पुस्तकालय बालमैत्रीपूर्ण हो जहां स्वतंत्र रूप से पुस्तकालय में बच्चों द्वारा मुखरवाचन, सहपठन, जोड़ों में पठन एवं स्वतंत्र पठन किया जाता हो। अगर पुस्तकालय, रीडिंग कॉर्नर एवं पढ़ने की घण्टी को समय विभाजन चक्र में शामिल किया जाय जो बच्चों के बीच पढ़ने और स्वतंत्र सीखने की समझ के साथ पढ़ने–लिखने व धारा प्रभाव पठन में बढ़ावा देता है और बच्चों की जिज्ञासा को बढ़ाने में उनकी मदद करता है।

बरखा सीरीज, एम०बी०टी०, बुलबुल, और अन्य पुस्तकें जो बच्चों से संबंधित हैं और जो पुस्तकें हमें विभाग से दी जाती हैं, सभी पुस्तकें शामिल की गई जिसका फायदा हमें यह देखने को मिला कि जैसे–जैसे बच्चे प्रतिदिन पुस्तकालय में आये तो उन्हें यह भी ज्ञान होने लगा कि उन्हें उनके स्तर के अनुसार पुस्तकें कहां से मिलेंगी और पढ़ने के बाद उन्हें कहां रखा जाना है। इस प्रक्रिया में बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास होने के साथ–साथ बच्चों में स्वानुशासन की भूमिका निभाने में भी पुस्तकालय ने एक बड़ी भूमिका निभाई है।

प्रभावी विद्यालयी प्रक्रियायें–जैसे पुस्तकालय और रीडिंग कॉर्नर जब एक साथ परस्पर कार्य करती है। इस तरह के निरन्तर प्रयास से बच्चों में सीखने समझने के प्रति रूचि उत्पन्न हुई है। स्वतंत्र लेखन, सृजनात्मक क्षमता, अभिव्यक्ति क्षमता में वृद्धि हुई है। सभी छात्र पुस्तकालय की पुस्तकों को पढ़ने में रूचि ले रहे हैं। ये प्रक्रियाएँ पारम्परिक कक्षा शिक्षण में आगे बढ़कर छात्रों के बीच अन्वेषण और नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा देती है। आज विद्यालय में 70 प्रतिशत छात्र अपनी कक्षा अनुरूप अधिगम स्तर पर हैं और शेष के साथ हमारे प्रयास प्रतिदिन जारी है।

Sunita Bhatanagar, Government Primary School Paniya Mehta, Nainital ने अपने विचारों को निम्न प्रकार प्रस्तुत किया गया।

There can be no denying of the fact that the English language has become one of the world's most important international languages. It is the language of most transactions, conversations and essential aspects of communication - important books, education, and even the computer

interface. In today's competitive world, the importance of English language cannot be ignored. Therefore, We have a strong desire to improve our students' English language skills, as we often wonder why these children cannot do well in English or use it properly in their day-to-day lives. As the head teacher of the school, it is my responsibility to enhance the English language skills of children from poor families in rural areas and whose parents are not very literate. I feel it is my duty to ensure that these children can also speak, write, and use English language properly, as it is their right. This has led me to thinking about improving my own English speaking, reading, writing, and grammar skills. In the beginning, it was quite challenging, with many obstacles. The children who are currently in 4th and 5th grades were in 1st and 2nd grades during the pandemic period, and at that time, they were only able to read and write in Hindi. So, it became more challenging to teach them English and make them enthusiastic to learn it. Their parents, being farmers and daily wage earners, were also not very literate, and could not devote time to help their children with English language or with homework. The indifference toward English language of the guardians and other villagers had a great impact on the children. Also, the children were not interested in doing homework or learning English, as they did not understand it. Keeping in view all these obstacles, I first made a work plan. I divided the students into 4 groups and also maintained a register to track further progress in the future. These groups were of: 1. Children who can't write or read simple English words 2. Children who can read and write simple words but cannot use them in their own sentences. 3. Children who can read and write English words and can also make simple sentences by using them but understand as a whole. 4. Children who can read and write and also understand simple sentences and spell simple words and can also follow instructions and commands like "go", "stand up", etc. To support this work, I also took ideas from the English subject resource persons of our partner organizations in the district and implemented these ideas in my school, which proved very fruitful. During various activities in the school like morning assembly, classroom conversation, group work game, period yoga, and Anandam activities, my staff and as a school head I always tried to use more and more English words, English instructions, and commands to motivate children for conversing in English. In the morning assembly, we also provided students Hindi newspapers, from which they translated a few words into English with some guidance. Every day in the last period in Bal Sabha in Pratibha Diwas, alongside other activities, I also initiated English activities such as rhymes, puzzle games, jumbled words, spell-out competitions, and story writing. Sometimes I provided different letters of the alphabet and asked them to make as many words as they could. The Sampark Kit provided by the Sampark Foundation has also been helpful during this process. The library and reading corner play a very crucial role in teaching learning English. There are various books in the library, in which short stories, picture books, angle books, rain books, and so many others are available. Some children who struggle with English are receiving help from peers, fostering teamwork among them.

All these efforts have greatly boosted children's self-confidence. They are now able to express themselves with improved communication, creativity, and leadership skills which are clearly noticeable. It is WOW! And I believe that if we continue to work hard, continue to make efforts then the children from remote areas, less privileged backgrounds can also enhance their understanding of English - speaking, reading and writing fluently with full self-confidence. I am very happy with this progress of the students in my schools. We will continue to work hard to achieve our goal, as it is rightly said: "All our dreams can come true if we have the courage to pursue them"

भावना भंडारी राजकीय प्राथमिक विद्यालय दीना, नैनीताल के द्वारा **विद्यालय नेतृत्व में आनन्दम का नवाचार** पर विचार साझा किये गये। राजकीय प्राथमिक विद्यालय, दीना, हल्द्वानी, जनपद नैनीताल के एक ग्रामीण परिवेश का विद्यालय है जिसमें 66 बालिकाएं और 61 बालकों सहित कुल 127 विद्यार्थी नामांकित है। विद्यालय में आने वाले अधिकतर विद्यार्थी ऐसे परिवेश से आते हैं जिनके पिता शराब पीकर मारपीट एवं अपशब्दों का इस्तेमाल करते है, जिससे परिवार में अशांति का माहौल बना रहता है।

वर्ष 2019 में मुझे आनन्दम पाठ्यचर्या की रूप रेखा तैयार करने वाली कार्यशाला में प्रतिभाग करने का अवसर मिला। फलस्वरूप आनन्दम पाठ्यचर्या एवं उसकी शिक्षण प्रक्रियाओं के प्रति मेरी बेहतर समझ विकसित हो पाई। इसमें मुझे एक उम्मीद की किरण दिखी जिससे मैं अपने विद्यालय की परिस्थितियों को बदल सकती हूँ। फिर मैंने अपने विद्यालय के शिक्षक साथियों से यह विचार साझा किया एवं एक कार्य योजना बनाई। हमने आनन्दम के साप्ताहिक समयसारणी के अनुसार 35 मिनट का प्रथम वादन सुनिश्चित किया। शुरुआत के 15 – 20 दिन साझा आनन्दम कक्षाएं स्वयं संचालित की जिसमें सभी शिक्षकों ने सक्रिय प्रतिभाग किया।

कई प्रकार के इमोजी को दीवारों पर पेंटिंग करवाया, जिससे विद्यार्थी अपनी भावनाओं को पहचान पाएँ और व्यक्त कर पाएँ। विद्यार्थियों के चित्रों को प्रदर्शित करने के लिए नन्हीं मुस्कान कार्यक्रम चलाया जिसमें विद्यार्थियों द्वारा बनाये चित्रों को दीवारों पर प्रदर्शित किया गया। विद्यार्थी आनन्दम की कक्षा में उत्साहपूर्वक प्रतिभाग करने लगे। आनन्दम ''माइण्डफुलनेस'' के स्तर से आरम्भ किया गया जिसमें सभी आरामदायक अवस्था में सहज होकर बैठते हैं, आँखों को बन्द कर आती–जाती साँसों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। यह सबके लिए एक नया अनुभव था, कोई आँखें बन्द करता तो कोई थोड़ी खोलता फिर आँख बंद कर लेता। धीरे–धीरे इस प्रक्रिया में विद्यार्थियों को अच्छा लगने लगा तथा उन्हें एक अलग शान्ति का अनुभव भी हुआ। तत्पश्चात विद्यार्थी विद्यालय के साथ–साथ घर में भी इस प्रक्रिया को करने लगे। इससे उनके व्यवहार में एक सकारात्मक परिवर्तन आया। विद्यालय में सौहार्द एवं प्यार का वातावरण विकसित हो पाया, जहां आकर हर कोई अपनी बात रख सके एवं एक दूसरे का सहयोग करते हुए आनन्दपूर्वक पठन–पाठन प्रक्रिया में प्रतिभाग कर पाए।

कक्षा चार की छात्रा गुनगुन पहले किसी से बात नहीं करती थी और कक्षा में कोई भी शिक्षक आता था तो सबसे पीछे चली जाती या बेंच के नीचे छुप जाती। शुरू में आनन्दम की गतिविधियों में वह बोलती ही नहीं थी। जब हमने काल्पनिक गेंद वाली गतिविधि एक बार कराई तो पहले तो वह अलग हो गई लेकिन फिर उसको उसमें आनन्द आने लगा। गुनगुन आनन्दम के गतिविधियों में हिस्सा लेने से आजकल बहुत खुश रहती है, और अन्य विद्यार्थियों के साथ मिलकर रहने लगी हैं। वह अब शिक्षकों से भी बात करने लगी है।

आजकल विद्यार्थियों में आपस में साझा करने की आदत बढ़ी है। अगर किसी के पास कोई चीज नहीं हैं तब अन्य विद्यार्थी स्वयं अपनी वस्तु उसे देते हैं। विद्यार्थी परिवार तथा व्यक्तिगत समस्याओं को भी शिक्षकों के सामने बिना किसी संकोच के रख पा रहे है। आनन्दम को अपने जीवन में कार्यान्वित करने के कारण विद्यार्थियों के साथ–साथ हमें भी अपने रिश्तों को बेहतर बनाने में सहयोग मिल रहा है। भोजनमाता को विद्यार्थी जब धन्यवाद और आभार बोलते हैं तो वह और प्यार से विद्यार्थियों को खाना खिलाती है। विद्यार्थी अपने मां–बाप की भावना को जानने लगे हैं, अपने से बड़ों की भावना समझकर उनका आदर करने लगे हैं। धीरे–धीरे विद्यार्थी समाज, प्रकृति, परिवार से भावात्मक रुप से जुड़ रहे हैं विद्यार्थियों का विद्यालय आने का उत्साह बढ़ गया है। विद्यार्थियों के अनुभव द्वारा उनमें मानवीय मूल्यों का विकास किया जा रहा हैं। विद्यालय में अधिगम प्रक्रिया के लिए एक बेहतर वातावरण बन गया है जिसका सकारात्मक परिणाम अकादमिक प्रदर्शन पर दिख रहा है।

School Leadership Club (SLC) D.Darshan SIEMAT/SCERT Raipur, Chhattishgarh

The Chhattisgarh School Leadership Academy (CGSLA) aims **to establish and empower leadership in schools through the formation of School Leadership Clubs (SLCs).** The SLC initiative is designed to promote leadership skills, encourage the dissemination of best practices, and foster a culture of continuous professional development among school leaders.

This concept note outlines the objectives, structure, implementation plan, and expected outcomes ofthe SLCs for presentation at the Leadership Seminarin Uttarakhand.

Objectives

1. Leadership Development: To enhance the leadership skills of school heads, teachers, and students.
2. Best Practices Dissemination: To facilitate the sharing and adoption of best practices in school management and pedagogy.
3. Professional Growth: To provide continuous professional development opportunities for schoolleaders.
4. Community Building: To create a network of school leaders for collaborative problem solving and support.

Structure of School Leadership Club (SLC)

1. Membership:

- SchoolHeads (Principals)
- SeniorTeachers
- Student Representatives
- Community Members

2. Leadership Roles:

- President: Typically the school head
- VicePresident: Asenior teacher
- Secretary: A teacher orastudent representative
- Members: Other teachers, students, and community members

3. Meetings:

- Monthly Meetings: To discuss progress, challenges, and strategies.
- Quarterly Workshops: Focused on specific leadership skills and best practices.
- AnnualConference: For all SLCs to network and share their achievements.

Implementation Plan

Phase 1: Planning and Awareness (Month 1-3)

- Conduct awareness programs for school heads and teachers.
- Develop guidelines and resource materials for SLC formation.
- Identify pilot schools for initial implementation.

Phase 2: Formation and Training (Month 4-6)

- Form SLCsin pilot schools.
- Provide training to SLC members on leadership skills and best practices.
- Organize initial meetings and workshops.

Phase 3: Monitoring and Evaluation (Month 7-12)

- Monitor the functioning of SLCs through regular reports and feedback.
- Evaluate the impact of SLC activities on school leadership and management.
- Make necessary adjustments based on evaluation findings.

Phase 4: Expansion (Year 2)

- Expand the SLC initiative to all schools in Chhattisgarh.
- Continue to provide support and training to new SLCs.
- Organize annual conferences to sustain momentum and engagement.

Expected Outcomes

1. Enhanced Leadership Skills: School heads and teachers will develop stronger leadership and management skills.
2. Improved School Management: Schools will adopt best practices leading to better administration and educational outcomes.
3. Professional Networking: A strong network of school leaders will emerge, facilitating collaboration and mutual support.
4. Student Empowerment: Students will develop leadership skills and actively participate in school management.

Conclusion

The School Leadership Club initiative by CGSLA represents a significant step towards empowering school leaders in Chhattisgarh. By fostering leadership skills, promoting best practices, and building a supportive community, SLCs will contribute to the overall improvement of school management and educational outcomes. The upcoming Leadership Seminar in Uttarakhand provides an excellent platform to introduce and share this innovative concept with a broader audience, paving the way for potential collaborations and further advancementsin school leadership development.

राम प्रकाश शर्मा, अटल उत्कृष्ट राजकीय आदर्श इण्टर कालेज आराकोट, उत्तरकाशी के द्वारा **विद्यालय में नवाचारी कार्यक्रम व उत्कृष्ट विद्यालयी प्रबन्धन कार्य** में प्रस्तुतीकरण किया गया।

वर्ष 2023 में बतौर प्रभारी प्रधानाचार्य कार्य प्रारम्भ करने पर मैनें निर्णय लिया कि विद्यालय में नवाचारी कार्यक्रम व उत्कृष्ट विद्यालयी प्रबन्धन एंव शैक्षिक गुणवत्ता संवर्द्धन पर विशेष रूप से कार्य करूंगा। इसके लिए विद्यालय में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के शैक्षिक एंव विद्यालय के भौतिक संसाधनों को समृद्ध किया गया। हमने सरकारी विद्यालय में शिक्षा की गुणवत्ता के लिए हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम का प्रचार व प्रसार करके व अभिभावकों को सरकारी विद्यालय की सुविधाओं व लाभों से अवगत करवाकर 2024 में छात्र

नामांकन संख्या में अत्यधिक वृद्धि सुनिश्चित की। इसके साथ–साथ छात्र– छात्राओं की उपस्थिति में सुधार के लिए शिक्षक व अभिभावक ''व्हाट्सएप ग्रुप'' बनाया ताकि अभिभावकों को अपने बच्चों की उपस्थिति की स्थिति का पता रहे। विद्यालय में सौन्दर्यीकरण के लिए विद्यालय प्रांगण में फुलवारी व सदैव हरे भरे रहने वाले पत्तेदार पौधों को लगाया गया।

विद्यालय प्रांगण में सौर ऊर्जा लाईट की व्यवस्था की गई और विद्यालय के कक्षा–कक्षों में रंग–रोगन करवाकर कक्षा–कक्ष में टाईल्स लगवायी गयी। फुलवारी व पौधों की देखरेख के लिए मेरे द्वारा व्यक्तिगत रूप से माली को रखा गया। इसके साथ स्थानीय एंव जनसहयोग के माध्यम से कक्षा–कक्षों में टाईल्स व प्रेक्षागृह में टाईल्स व रंग–रोगन, विद्यालय की चाहरदीवारी, प्रार्थना सभा के लिए लाउड स्पीकर एवं फर्नीचर को उपलब्ध करवाया गया।

निर्धन अध्यनरत छात्रों के लिए नेताजी सुभाष चन्द्र बोस बालक आवासीय छात्रावास को स्वीकृत कराया गया। विद्यालय में शिक्षक व कर्मचारियों के लिए ड्रेस कोड व आई.डी. कार्ड को अनिवार्य रूप से लागू किया गया। विद्यालय में अध्यनरत अत्यधिक निर्धन वर्ग के 5 छात्र–छात्राओं को मेरे द्वारा गोद लिया गया। इन छात्र–छात्राओं का पढ़ाई का सम्पूर्ण खर्च मेरे द्वारा वहन किया जाता है। परिषदीय परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले छात्र/छात्राओं को विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस के भव्य कार्यक्रम में अभिभावक, अन्य अतिथि एवं विद्यालय परिवार की उपस्थिति में सम्मानित एंव पुरुस्कृत किया जाता है। विद्यालय में कक्षा 6 से 12 तक के छात्र/छात्रायें जिस विषय में कमजोर है उन समस्त विषयों के लिए अतिरिक्त कक्षाओं का संचालन किया जाता है जिससे बच्चों की शैक्षिक गुणवत्ता में सुधार हो सके। विद्यालय में कला अध्यापक व मूर्तिकार शिक्षक से विभिन्न महापुरुषों की बड़ी बड़ी मूर्तियों का निर्माण करवाकर विद्यालय में मूर्ति संग्रहालय बनवाया गया। इन महापुरुषों की मूर्तियों को देख छात्र–छात्रायें उनके बारे में ज्ञान अर्जन करते है। विद्यालय में कक्षा 6, 7 व 8 के छात्र–छात्राओं को अनिवार्य रूप से कम्प्यूटरीकृत शिक्षा से प्रदान की जाती हैं। विद्यालय के प्रत्येक कक्षा–कक्ष एंव सम्पूर्ण विद्यालय में व्यक्तिगत खर्चे पर सी.सी.टी. वी. कैमरे लगवाये गये जिससे छात्र–छात्राओं की शैक्षणिक गतिविधि एवं छात्र–छात्राओं के अनुशासनात्मक गतिविधि पर निरन्तर निगरानी रखी जाती है और साथ ही सम्पूर्ण विद्यालय को सुरक्षित किया गया।

विद्यालय में आई.सी.टी. आधारित शिक्षण अधिगम कार्य करवाया जाता है शिक्षकों के द्वारा छात्रों के शिक्षण वीडियो एवं एनिमेशन तैयार करके कक्षाओं में वीडियो दिखाई जाती है जिससे छात्रों का अधिगम स्तर अच्छा किया जाता है और छात्र भी वीडियो को देखने में अधिक रूचि दिखाते है एवं वीडियो को लगनता एवं सहजता से देखते हुए सीखने का प्रयास करते हैं। छात्रों को कम्प्यूटर के माध्यम से शिक्षण कार्य करवाया जाता है। कंप्यूटर शिक्षण में छात्र अधिक रूचि दिखाते हैं और विद्या समीक्षा चैनलों के माध्यम से भी छात्र–छात्राओं को शिक्षण कार्य करवाया जाता है।

विद्यालय में सप्ताह के प्रत्येक शनिवार को वाद–विवाद, सामान्य ज्ञान, पेंटिंग प्रतियोगिताओं का आयोजन कर उनके बौद्धिक, रचनात्मक एवं कलात्मक स्तर बढ़ाने के प्रयास किये जाते हैं। छात्र–छात्राओं द्वारा इन प्रतियोगिताओं में बड़े उत्साह से प्रतिभाग किया जाता है। इन प्रतियोगिताओं में छात्रों का उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर उन्हें पुरस्कृत भी किया जाता है।

रविन्द्र कुमार, राजकीय प्राथमिक विद्यालय न०–4 रुड़की, हरिद्वार **विद्यालय इन्फ्रास्टक्चर के बदलाव के कारण छात्रों में सर्वांगीण विकास** में अपना प्रस्तुतीकरण किया गया। प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के लिए सबसे महत्वपूर्ण है – विद्यालय का बुनियादी ढांचा जो बच्चों को विद्यालय आने के लिए सदैव आकर्षित करता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए हमने

सबसे पहले बच्चों को अच्छी शिक्षा देने के लिए विद्यालय के वातावरण में एक अभूतपूर्व बदलाव किया। जब फरवरी 2021 में मैं इस विद्यालय का प्रधानाध्यापक बना तब विद्यालय में बहुत सुधार की आवश्यकता थी। स्कूल में बच्चों के लिये पढाई का माहौल बन सके और विद्यालय की छात्र संख्या भी बढ़ सकें इन सबके लिए आगे बढ़ कर काम करने की आवश्यकता थी। मैंने विद्यालय में एक अच्छा माहौल देने के लिए बहुत सारे पेड़–पौधे लगाये जिसका परिणाम है मेरा विद्यालय आज हरा भरा है। विद्यालय में हवादार व फलदार वृक्ष लगे हैं जिससे बच्चे फलों को खाकर उनका आनंद ले सके और कई प्रकार के फूलों के पौधे लगाये और उनको सुरक्षित रखने के लिए बच्चों को ही उनकी देखभाल करने को कहा गया जिसको बच्चे बहुत अच्छे से निभा रहे है। विद्यालय में बच्चो के लिए ताजा पानी पीने के लिए विद्यालय प्रांगण में कई जगह पानी के नल लगाए जिससे शुद्ध पीने का पानी मिल सके। विद्यालय में बच्चों के लिए स्वच्छ एवं साफ–सुथरे शौचालय बनाए गए।

विद्यालय की किचन में जो सभी सामान उपलब्ध करवाया गया जो एक किचन के लिये जरुरी होता है। बच्चो के खाने के लिए प्लेटो की व्यवस्था की गयी जिससे की बच्चों को खाना खाने के लिए प्लेट न लानी पड़े। बच्चों को अच्छा वातावरण देने के लिए सभी कमरों में रोशनी, पंखो, बेंचों, और मार्कर बोर्डो की व्यवस्था की गयी। कक्षाओं में बच्चों के लिए अच्छी अच्छी पेंटिंग लगायी गयी जिससे बच्चों में स्कूल के प्रति आकर्षण पैदा हो। विद्यालय प्रांगण की दीवारों पर जगह–जगह स्लोगन, बालिका शिक्षा, पर्यावरण सुरक्षा, जल संरक्षण, राष्ट्रभक्ति से ओत–प्रोत नारे, स्वच्छ भारत मिशन से सम्बंधित नारे व पोस्टर, राष्ट्रीय प्रतीकों आदि को दर्शाया गया है जिससे कि बच्चों में राष्ट्र के प्रति देशभक्ति व स्वच्छता के प्रति जागरुकता का विकास हो सके। बच्चों की शिक्षा के साथ–साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम भी करवाए जाते हैं और बच्चों के शारीरिक विकास के लिए खेल–कूद के सामान की भी व्यवस्था की गयी है जिससे बच्चों का शिक्षा के साथ–साथ सर्वांगीण विकास हो सके।

विद्यालय में एक ''मिनी बुक बैंक'' की व्यवस्था भी की गई है जिससे की छात्रों में अधिगम क्षमता व पढने में रूचि को बढ़ावा देने के लिए समय–समय पर भिन्न–भिन्न प्रकार की पुस्तकों को उपलब्ध कराया जाता है जिनमे कहांनियां, नैतिक शिक्षा व अनेक प्रकार की किताबों को सम्मिलित किया गया है और यदि किसी बच्चे से कोई किताब फट जाती है या गुम हो जाती है तो बच्चों को कुछ नहीं कहा जाता है जिससे कि बच्चों में किसी प्रकार का डर उत्पन्न न हो। बच्चे खुशी–खुशी विद्यालय आते हैं। हमारे विद्यालय में पढने वाले बच्चे प्रतिभा के बहुत धनी होते हैं, बस हमें बच्चों को काम करने का अवसर देना चाहिए। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुए इस वर्ष विद्यालय में बाल शोध मेले का आयोजन किया गया जिसमे विद्यालय के कक्षा 1 से कक्षा 5 तक के बच्चों ने बढ़–चढ़कर प्रतिभाग किया और बाल शोध मेले को अपने द्वारा बनाये गए सामान द्वारा बहुत आकर्षक बनाया।

इस बाल शोध मेले में विद्यालय के समस्त स्टाफ द्वारा बच्चों का बहुत सहयोग किया गया। छात्रों के शारीरिक व मानसिक विकास के लिये योग कार्यशाला–विद्यालय में छात्रों के शारीरिक व मानसिक विकास के लिये प्रतिदिन योग करवाया जाता है जिससे की छात्रों में अपने कार्यो को पूर्ण करने के प्रति जागरूकता उत्पन्न हो और उनका शरीर स्वस्थ रहे। विद्यालय इन्फ्रास्ट्रक्चर करने के बाद विद्यालय के बच्चों में एक बहुत बड़ा बदलाव आया, क्योंकि बच्चों की और सभी आवश्यकताओं की पूर्ति हो गयी। बच्चों में एक दूसरे के प्रति सहयोग की भावना बढ़ी, बच्चों में राष्ट्र के प्रति देशभक्ति की भावना बढ़ी, स्वच्छता के प्रति जागरूकता, शिक्षा के प्रति जागरूकता, पर्यावरण सुरक्षा का ज्ञान, जल संरक्षण के महत्व की समझ आदि के कारण विद्यालय की छात्र संख्या भी बढ़ी है।

रंजना बुटोला, राजकीय प्राथमिक विद्यालय सुक्की, उत्तरकाशी के द्वारा **सीखने–सिखाने में अभिभावकों की सक्रिय सहभागिता** के सम्बन्ध में प्रस्तुतीकरण किया गया। विद्यालय मुख्यतः चार घटकों से मिलकर बेहतर संचालित होता हैं। इसमें पहला घटक है शिक्षक दूसरा घटक है शिक्षार्थी तीसरा घटक है शिक्षण अधिगम की विषयवस्तु और प्रक्रियाएं तथा चौथा महत्वपूर्ण घटक है बच्चों के पालक, अभिभावक और उनका परिवेश जहां रहकर बच्चे की परवरिश होती है। बच्चों के सीखने में इस चौथे घटक की भूमिका भी बहुत महत्वपूर्ण हो जाती हैं।

इस परिवेश में शिक्षार्थी के समक्ष परिवेश की एक विशाल किताब खुली होती है। बच्चों को सब कुछ शिक्षक ही सिखा देगा ऐसा मानना इस अवसर को नजर अंदाज करना होगा।

राजकीय प्राथमिक विद्यालय सुक्की में प्रथानाध्यापक की भूमिका मिलने पर हमने पाठ्यचर्या को कुछ इस तरह देखा जिससे बच्चों की सभी क्षमताओं जैसे–बौद्धिक, सामाजिक, शारीरिक, नैतिक, और भावनात्मक पक्ष को उभारने के लिए किस तरह के अवसर हैं? पाठ्यचर्या में इसके लिए पर्यावरण अध्ययन, गणित, भाषा, खेलकूद कला जैसे विषय तो है ही पर व्यावहारिक शिक्षा के लिए समुदाय किस तरह भागीदार हो सकता है? यह मेरे लिए महत्वपूर्ण सवाल था। हमने इस ओर प्रयास करना आरम्भ किया। विगत वर्ष हमने विद्यालय के भौतिक वातावरण सुधारने, बच्चों को साफ–सुथरा विद्यालय भेजने, स्कूल की संस्कृति को निखारने में समुदाय का सहयोग लिया। इसमें समुदाय ने भी हमें भरपूर सहयोग दिया। अब हमारा विश्वास यहाँ जमने लगा कि इस दूरस्थ गाँव में समुदाय भी बच्चो के सीखने में मददगार हो सकता है। विशेष तौर पर हम जो भी स्कूल में बच्चो को सिखाते हैं उसकी मजबूती के लिए और व्यावहारिक रुप से बच्चे कैसे सीखें? इसमें समुदाय की भूमिका हो सकती हैं।

हमने नियमित रूप से आयोजित एस.एम.सी. की बैठकों व दिवस विशेष पर होने वाली सभाओं में विस्तार से चर्चा की। इन चर्चाओं में हमने उन बिन्दुओं को रेखांकित किया जहां पर समुदाय के लोग अपने बच्चे की सीखने में मदद कर सकते हैं जैसे हमने इस बात पर जोर दिया कि बच्चों के अपने चारों ओर के परिवेश को देखते समझते, अवलोकन करते हुये, खूब सारे सवाल होते हैं। बच्चों के इन सवालो पर बातचीत करें। आपके पास जो भी व्यावहारिक ज्ञान है वह ज्ञान बच्चों को भी दें बच्चों को भरपूर समय दें। अपने दुख–सुख, अपनी उपलब्धियां भी बच्चों के साथ शेयर करें। वे बहुत ही संवेदनशील होते है घर की हर बात से प्रभावित होते हैं।

इससे यह देखने को मिला कि शिक्षार्थियों में खोखली रटंत विद्या की जगह सोचने समझने, चर्चा में भाग लेने, बोलने, समझकर पढ़ने और लिखने का कौशल विकसित होता जा रहा है। जैसे उनके आस–पास, घटने वाली घटनाओं, दृश्य को देखने, समझने और उनको स्कूली अनुभवों के साथ जोड़कर देखने की योग्यता आती है। इसके साथ उनकी मातृभाषा व स्कूल की भाषा की कठिनाइयाँ व संकोच भी विलीन होता है। इसको जानने समझने में ICT जैसे गूगल, गूगल ट्रांस्लेटर का प्रयोग भी सही–सही अर्थों के लिए होता हुआ देखने को मिला। माना कि यदि बच्चों की जिज्ञासाओं को पंख लगते हैं तो उनकी खोजबीन भी तेज हो जाती हैं। जरूरी बात यही है कि बच्चे सवाल करे, उनके मन में जो सवाल है, उस दिशा में खोजबीन करें। इस तरह के एक्सपोजर के बाद स्कूली ज्ञान किताब में लिखी बातों को समझने व अपने अनुभवों के साथ जोड़ने की प्रवृति महसूस की जा सकती है।

हमने यह भी देखा कि समुदाय की संस्कृति का शिक्षा और सीखने–सिखाने की शैलियों पर अच्छा प्रभाव पढ़ता है जिसका कि हमने ऊपर की बातों में जिक्र किया है। इस प्रक्रिया में संस्कृति जो भूमिका निभाती है वह है कि संसाधनों को कैसे किफायत से प्रयोग किया जाता है। गाँव, परिवार में मेल जोल, सहकार जैसे कि एक दूसरे की मदद

करना, दुख–सुख साझा करना, समस्या पर बातचीत कर हल निकालना, जैसे त्यौहार उल्लासपूर्वक मनाना, नृत्य शैलियाँ, वातावरण के अनुसार वेशभूषा अन्य जगहों से अलग क्यों हैं, खान–पान की रूचियों को समझना, रीति–रिवाज को समझना, अच्छी प्रथाओं को सहेजना और बुरी प्रथाओं की समीक्षा करना जैसे दृष्टिकोण और मूल्य बच्चों में पोषित होते हैं। यह प्रक्रिया अभी जारी है इस प्रक्रिया के जो कुछ प्रारम्भिक लक्षण कहें या कि उपलब्धियाँ आरंभिक रूप में दिखने लगी हैं जैसे समुदाय के वरिष्ठ लोगों द्वारा बच्चों के साथ उनकी संस्कृति, सामाजिक व्यवहार, रीति–रिवाज प्रथाओं के बारे में अनेक तरह के सांस्कृतिक व्यवहारों के बारे में कथा कहानियों के जरिए बातचीत होने लगी हैं।

कुछ अभिभावक बच्चों के गृह कार्य में मदद कर रहे हैं। अपने साथ खेतों में ले जाकर सेब की बागवानी की बारीकियाँ, सेब उत्पादन के बाद उसके उपयोग, उनके व्यापार संबंधी जानकारियाँ साझा कर रहे हैं जबकि पहले वे समझते थे कि बच्चों की शिक्षा में इसका कोई उपयोग नहीं है। जानवरों के लिए सर्दी में खाने–पीने के इंतजाम, उच्च हिमालय में खेती के पैटर्न, फसलों की जानकारियाँ दे रहे हैं। जो लोग पर्यटन के व्यवसाय से जुड़े हैं वे भी अपने अनुभव बच्चों के साथ साझा कर रहे हैं।

सुक्की में काफी सारे होमस्टे भी संचालित होते है, तो उनका संचालन कैसे होता है? वहां रूकने वाले गेस्ट से बच्चों का संवाद, उनको देश–विदेश के लोगों से परिचित करवाता है। सीखने में घर व आसपास होने वाले क्रियाकलाप के जीवंत उदाहरण बच्चों के सीखने में काफी प्रभावी साबित हो रहे हैं। अंततः कुछ यही बातें समझ में आ रही हैं कि समुदाय से कटकर विद्यालय की तरक्की नहीं हो सकती और न ही समुदाय से जुड़े बिना स्कूल की पाठ्यचर्या को सही मायने मिल सकते है। बच्चों का सीखना और सीखे हुये ज्ञान को व्यवहार से जोड़ना तभी संभव है जब हम इसमें समुदाय को भी भागीदार बनाते हैं और जन आकांक्षाओं को भी विश्वास दिला पाते हैं।

इस संदर्भ में इसी क्षेत्र की एक छोटी सी कहानी है। हमारे एक शिक्षक साथी अक्सर स्कूल से अनुपस्थित रहने वाले एक बच्चे के घर बातचीत करने के लिए गए हुये थे। वे बच्चे से बातचीत कर रहे थे कि पढ़ जाएगा तो अच्छा होगा, समूह ग में भी भर्ती हो गए तो जीवन संभल जाएगा। यह बात दादा जी को बहुत बुरी लगी। उन्होंने पूछा कि समूह ग में कितने पैसे मिलते है? यही कोई 20–30 हजार होंगे, हमने पिछले सीजन में 70 लाख बागवानी से कमाए हैं, तो इसको यह मत समझाओ की समूह ग में भर्ती होना पढ़ने का लक्ष्य है। क्या इसको यह समझा सकते हो कि ये बागवानी को कैसे और अच्छी तरह करें। न भी करें तो इसको बनाए रखें। तो शायद यह घटना यही संकेत देती है की स्कूली शिक्षा महत्वपूर्ण है पर उसके साथ व्यावहारिक ज्ञान कितना जरूरी है। इसलिए भी कि स्थानीय ज्ञान और अनुभवों को स्कूली पाठ्यचर्या में समावेशित करना जरूरी है और यह काम समुदाय के बगैर कठिन है।

डॉ. रत्ना मिश्र, राजकीय प्राथमिक विद्यालय जस्सोवाला, देहरादून के द्वारा **प्रार्थना सभा तथा प्रातःकालीन गतिविधियों को सीखने–सिखाने में प्रभावी उपयोग** के बारे में बताया गया। किसी भी विद्यालय में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के आरम्भ होने से पूर्व होने वाली प्रार्थना सभा मात्र औपचारिकता नहीं बल्कि पूरे दिन के सम्पूर्ण विद्यालयी क्रियाकलाप के सुचारू रूप से संचालन हेतु एक सकारात्मक शैक्षिक माहौल की शुरूवात करती है। हमारे विद्यालय में 26 छात्र और 4 शिक्षक हैं। हमने छात्रों की अनियमित व न्यून उपस्थिति, अपनी बात को कहने में संकोच तथा याद की हुई बात को तुरन्त भूल जाना आदि समस्याओं के समाधान हेतु प्रातःकालीन गतिविधियों के लिए कार्य योजना बनाई। हमने छात्रों से कहा कि जो छात्र रोज समय से 5 से 10 मिनट पहले विद्यालय आयेगा उसको हम खेल

सामग्री जैसे–फुटबॉल, रस्सीकूद, बैटमिन्टन आदि खेलने को देंगे व नये–नये खेल खिलायेंगे। नियमित व समय पर विद्यालय आने वाले छात्रों को खेलते देखकर अन्य छात्र भी धीरे–धीरे समय पर विद्यालय आने लगे। शुरू में अध्यापकों द्वारा छात्रों को उचित लय के साथ प्रार्थना, प्रतिज्ञा व समूह गान सिखाये गये। प्रार्थना, दैनिक प्रतिज्ञा तथा समूहगान तीन दिन हिन्दी भाषा में, दो दिन अंग्रेजी भाषा तथा एक दिन संस्कृत भाषा में सिखाया गया। अंग्रेजी तथा संस्कृत में प्रार्थना तथा समूहगान हमने उनकी पाठ्य पुस्तकों से ही सिखाया।

मैंने व मेरे सहयोगियों ने देखा कि प्रत्येक कक्षा से कुछ ही छात्र आगे आते हैं, अधिकांश छात्र प्रार्थना सभा में उदासीन खड़े रहते हैं। इसके समाधान हेतु हमने एक कार्य योजना बनाई जिसके अनुसार प्रत्येक दिन कक्षा–5 से प्रत्येक छात्र अनुक्रमांक के अनुसार आज के समाचार लिखकर लायेगा तथा प्रार्थना सभा में सुनायेगा। समाचार स्थानीय परिवेश से लेकर गाँव, विकासखण्ड, जनपद प्रदेश तथा देश के हो सकते हैं। कक्षा 4 का छात्र अपनी बारी आने पर आज का विचार या नीतिवचन सुनायेंगे। कक्षा 3 के छात्र अनुक्रमांकानुसार सामान्य ज्ञान, पहाड़े आदि सुनायेंगे। कक्षा 2 के छात्र अपनी पाठ्यपुस्तक की हिन्दी तथा अंग्रेजी कविता या कहानी सुनायेंगे तथा कक्षा 1 के छात्र अपनी बारी आने पर किसी कविता या अपना तथा अपने माता–पिता का नाम बतायेंगे। तात्पर्य यह है कि प्रत्येक छात्र को सभा के सामने कुछ न कुछ सुनाना है। प्रार्थना सभा तथा दैनिक गतिविधियों के आधार पर सप्ताह का श्रेष्ठ छात्र चुना जायेगा, उसका नाम सप्ताह भर के लिए सूचनापट्ट पर लिखा जायेगा। इस प्रकार हमारी प्रार्थना सभा रुचिपूर्ण व सक्रिय हो गई। इसके पश्चात हमने अपनी प्रार्थना सभा में योग तथा व्यायाम को भी शामिल किया। व्यायाम ड्रम, लेजियम–डम्बल के साथ करवाया जाता है तथा योग के लिए पास के आयुर्वेदिक चिकित्सालय के योग प्रशिक्षक की मदद ली जाती है ।

प्रार्थना सभा को बेहतर बनाने में सहायक अध्यापकों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। जहाँ पर कोई छात्र रूक जाता है तो अध्यापक उसको प्रोत्साहित करते हुए आगे बढ़ाते हैं। छात्रों द्वारा जो आज का विचार बोला जाता है उसको अध्यापकों द्वारा सूचनापट्ट पर लिखा जाता है। अध्यापक छात्रों का नियमित मूल्यांकन कर सप्ताह के "आदर्श छात्र" का चयन करते हैं तथा यह निर्धारित करते हैं कि जिस दिन जिस भाषा में प्रार्थना होती है उसी भाषा में प्रातःकालीन समस्त गतिविधियाँ हों।

बेहतर प्रार्थना सभा से छात्रों में दिखने वाले बदलाव–बेहतर प्रार्थना सभा से छात्रों का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा आध्यात्मिक विकास होता है। व्यायाम तथा योग करने से छात्र स्वस्थ रहते हैं। वे समूह में कार्य करना तथा एक दूसरे की मदद करना सीखते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि छात्र नियमित व समय पर विद्यालय आने लगे हैं तथा बिना झिझक के निःसंकोच अपनी बात कहते हैं। इस प्रकार विद्यालय में "बाल मैत्रीपूर्ण" वातावरण बनता है।

प्रार्थना सभा को बेहतर बनाने के लिए हम सप्ताह में एक दिन स्थानीय बोली–भाषा (गढ़वाली, कुमाऊंनी, जौनसारी) में प्रातःकालीन गतिविधियाँ करवाने तथा समस्त क्रियाकलाप 'कक्षावार' के स्थान पर 'सदनवार' करवाने पर कार्य कर रहे हैं जिससे सभी छात्रों को सम्पूर्ण व समान नेतृत्व मिल सके।

रमेश चन्द्र निराला, राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय छिड़िया, चमोली के द्वारा **सामुदायिक सहभागिता का विद्यालय में क्रियान्वयन** के सम्बन्ध में बताया गया। छात्र कैसे बेहतर सीखे इसके लिए हम कई तरह की प्रक्रियाएँ करते हैं। हमने अपने विद्यालय में शैक्षिक प्रक्रियाओं के साथ ही सामुदायिक सहभागिता की मदद से एक बेहतर माहौल बनाने का प्रयास किया है ताकि समुदाय अपने बच्चों के साथ हम पर भी भरोसा कर सके। समुदाय को कैसे विद्यालय के साथ

जोड़ें, उसके लिए हमारे विद्यालय प्रबंधन ने इन बातों को बहुत गहराई से समझा। जैसेः– समुदाय में शिक्षकों के प्रति विश्वास जगाना, खुद शिक्षकों को विद्यालय के कार्यों में जुड़ाव रखना ताकि समुदाय स्वयं भी जुड़ने को तैयार हो। समुदाय के लोगों को विद्यालय में सम्मान देना, समुदाय को विद्यालय के कार्यों को करने में खुली छूट प्रदान करना, समुदाय के साथ–साथ जनप्रतिनिधियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं को विद्यालय कार्यों से जोड़ना तथा समुदाय को पत्र के माध्यम से विद्यालय कार्यक्रमों में आमंत्रित करना।

भौतिक संसाधनों से जूझ रहे छात्रों के लिए सामुदायिक सहभागिता एवं विद्यालय प्रबन्धन समिति के माध्यम से प्रार्थना सभा मंच निर्माण, मैदान समतलीकरण, अतिरिक्त कक्षा–कक्ष निर्माण, बालक–बालिका शौचालय निर्माण, किचन गार्डन निर्माण, विद्यालय के मुख्य भवन की छत निर्माण कार्य, जीर्ण–शीर्ण पड़े बालक – बालिका शौचालय सौंदर्यीकरण कार्य, विद्यालय परिसर में चाहरदीवारी निर्माण कार्य व ई–पुस्तकालय के तहत स्मार्ट टी.वी. एवं कम्प्यूटर के माध्यम से पढ़ने एवं भाषाई कौशल का विकास कार्यक्रम आदि कार्य संपादित किए गए हैं। उक्त कार्यों को संपादित करने में समुदाय द्वारा विद्यालय गतिविधियों में बढ़–चढ़ कर प्रतिभाग किया गया जैसे जन समुदाय की अपेक्षाओं पर शिक्षकों का खरे उतरना, शिक्षकों द्वारा भी स्वयं कार्य करने की शुरुआत में इच्छाशक्ति दर्शाना, शिक्षकों का समुदाय के प्रति विश्वास पात्र बनना, जनसमुदाय को विश्वास में लेना और समुदाय और विद्यालय का आपसी तालमेल और स्थानीय जनप्रतिनिधियों से लगातार समन्वय स्थापित करना आदि।

छात्रों में स्वच्छता का भाव विभिन्न प्रकार की बीमारियों से बचाव एवं रोकथाम का भाव उत्पन्न करने हेतु एस.एम.सी, यूथ एवं इको क्लब और सामुदायिक सहयोग से कक्षा–कक्षों, विद्यालय परिसर, विद्यालय के रास्तों आदि की सफाई व्यवस्था की गई। समुदाय के सहयोग से विद्यालय में नामांकन को बढ़ावा दिया गया। एक कैम्पेन के रूप में शिक्षकों और विद्यालय प्रबंधन समिति एवं जनसहभागिता के माध्यम से स्कूल चलो अभियान के तहत विद्या प्रवेश कार्यक्रम एवं प्रवेशोत्सव कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। छात्रों में अनेकता में एकता का गुण, संस्कृति का समावेश, भाषाई कौशलों का विकास तथा अभिनव कौशल विकसित करने हेतु समुदाय के माध्यम से विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम जैसेः– प्रतिभा दिवस, सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेलकूद, वार्षिकोत्सव विशेष दिवस, विशेष गढ़भोज का कार्यक्रम, जन्मोत्सव समारोह आदि कार्यक्रम विकसित करने हेतु समुदाय का सहयोग लिया जा रहा है। शिक्षकों और विद्यालय प्रबंधन समिति एवं जनसहभागिता के माध्यम से विद्यालय में आज तक 5 से 5.5 लाख तक की धनराशि का विगत वर्षों में निजी व्यय से तमाम निर्माण कार्य एवं अन्य कार्यक्रम किए गए हैं। समुदाय के उक्त कार्यों को जिलास्तर पर सराहना मिलने के कारण विद्यालय को वर्ष 2021–22 में बेस्ट एस.एम.सी अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। पुरस्कार बच्चों में आत्मविश्वास, सीखने की प्रवृत्ति का विकास करता है जो समुदाय के माध्यम से बच्चों को प्रेरित करता है।

छात्रों में समन्वय एवं लीडरशिप की भावना विकसित करने हेतु स्थानीय स्तर की "गवर्नेंस बॉडी" जैसे ग्राम पंचायत, क्षेत्र पंचायत, जिला पंचायत तथा विधायक एवं सांसद निधि आदि के माध्यम से विद्यालयी कार्य करवाए जा सकते हैं। विद्यालय में उपरोक्त मदों में वर्तमान सत्र 2023–24 तक 6.00 लाख तक के कार्य करवाए गए हैं। किसी भी विद्यालय के विकास में जनसमुदाय की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसलिए विद्यालय का विकास पूर्ण रुप से शिक्षकों के साथ–साथ विद्यालय प्रबंधन समिति एवं सामुदायिक सहभागिता से सम्भव है। जिस कारण बच्चों में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया उत्पन्न होती है और छात्र विभिन्न प्रकार की समस्याओं से मुक्त होकर शैक्षणिक गतिविधियों में बढ़–चढ़ कर भाग लेता है और छात्र का चौमुखी विकास होता है।

बच्चे बेहतर माहौल में पढ़ सके इसके लिए अधिक से अधिक समुदाय का सहयोग लिया जाता है साथ ही एस.एम.सी. बैठक में बच्चों की पढ़ने–लिखने, सीखने–सिखाने की प्रगति को भी साझा किया जाता है। इसकी प्रक्रिया में प्रायः बराबर एस. एम. सी. बैठकें आयोजित कर समस्त छात्रों का प्रोफाइल अभिभावकों के सम्मुख रखना, साथ ही एफ.एल.एन. की प्रगति, पुस्तकालय गतिविधि (पठन कौशल), पुस्तकों के स्तरानुक्रम में पठन कार्य, बाल मित्र पुस्तकालय की तमाम गतिविधियों की प्रगति, बाल मित्र पुस्तकालय से अभिभावकों को उनकी पसंद की पुस्तकें उपलब्ध कराना, एस.एम.सी. सदस्यों की मदद से घर–घर जा कर विद्यालय कम आने वाले बच्चों के माता–पिता को अपने बच्चों को नियमित रूप से विद्यालय भेजने के लिए जागरूक करना, गृह कार्य करवाने पर विशेष जोर व बराबर अभिभावकों को सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के प्रति जागरुक करते रहना। किसी बच्चे के लिए हम अलग से प्रयास करते हैं तो उसे मासिक बैठकों में साझा किया जाता है। जैसे एक विशेष आवश्यकता का छात्र जो अच्छे से बैठने में भी असमर्थ होने के कारण अधिगम प्रक्रिया में प्रतिभाग नहीं कर पा रहा था लेकिन आज शिक्षकों के प्रयास से वह छात्र बातचीत करने, पढ़ने–लिखने की प्रक्रिया में शामिल है। हमारे विद्यालय प्रबंधन का यह मानना है कि विद्यालय तब है जब बच्चे और उनके अभिभावकों का सहयोग है उन्हें नजर अंदाज कर हम अधिगम की प्रक्रिया को बेहतर तरीके से नहीं बढ़ा सकते हैं।

रेनु पाण्डे, राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय महरागाँव (प्रथम) नैनीताल के द्वारा **अनुसंधान से बाल कौथिग का सफर** पर अपने विचार साझा किये गये। प्रत्येक मनुष्य की जन्मजात प्रवृत्ति होती है कि कोई भी काम कैसे होता है और उसको करने व समझने–सीखने का आसान तरीका क्या हो सकता है? जैसे–जैसे वह उम्र के पड़ाव में आगे बढ़ता है उसकी जिज्ञासा और बढ़ती जाती है। इसी प्रकार प्रारम्भिक शिक्षा भी बच्चे की वह ठोस दहलीज है जो उसे घर के बाद मिलती है। विद्यालय में हमउम्र के अनेक साथी उनसे कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ते हैं। उनके बाल मन में कई प्रश्न उमड़ते हैं जिन्हें कुछ बच्चे बोलकर पूछ लेते हैं तो कई चुपचाप रहकर प्रश्नभरी निगाहों से देखते हैं। उनकी आँखें ही बता देती हैं कि वह कुछ पूछना तो चाह रहे हैं लेकिन झिझक के कारण पूछ नहीं पा रहे हैं। उनकी जिज्ञासु प्रवृत्ति को समझकर उनको सही मार्गदर्शन करना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है। मेरे सामने भी प्रतिवर्ष सत्र प्रारम्भ होने पर कुछ इसी प्रकार के प्रश्न आते हैं कि कैसे बाल कलाकारों को तराशा जाये।

आज के परिप्रेक्ष में देखा जाए तो बच्चों को काफी जानकारी तो घर से ही रहती है। बच्चे खिलौने के प्रति जल्दी आकर्षित होते हैं उन्हें छूना, उलट–पलटकर देखना, गिराना, तोड़ना आदि–आदि उनकी उत्सुकता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसी क्रम में मुझे लगा कि बच्चों को कुछ माडल–चित्र बनाकर दिखाया जाय तो वह रूचि लेते हुए उसे देखते हैं और यह छवि उनके मानस पटल पर स्थायी हो जाती है।

इसके लिए बच्चों को माडल बनाने हेतु कुछ सामान लाकर दिया। अन्य कक्षा के बच्चों ने भी अपने पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर माडल बनाने की सोची। विषयवार अपनी–अपनी रूचि के अनुसार बच्चों ने माडल का चुनाव कर उस पर कार्य करना शुरू कर दिया। तभी मन में विचार आया कि सभी बच्चे व अध्यापिकाएँ माडल बनाने में सहयोग कर रहे हैं तो क्यों न विद्यालय में एक बाल शोध मेले (नानतिनाक कौथिग) का आयोजन किया जाय। इसी क्रम में अजीम प्रेम जी फाउण्डेशन की भीमताल शाखा से चर्चा की तो उन्होंने भी बच्चों के कार्य की सराहना की और शोध मेले की सहमति को मूर्त रूप देने में सहयोग प्रदान किया।

जैसा कि शब्द कौथिग (मेले) से ही लगता है कुछ वृहद आकार में बच्चों का कार्यक्रम किया

जाय। इसके लिए शिक्षकों नें विभिन्न समूह बनाकर बच्चों को विषय चुनने में सहायता की। बच्चों ने हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, संस्कृत, सभी विषयों को ध्यान में रखकर शिक्षिकाओं के साथ बातचीत कर माडल बनाने शुरू कर दिये। बच्चों ने सुनीता की पहिया कुर्सी, कम्प्यूटर का माडल, राज्य में पाये जाने वाली जड़ी–बूटी, पहाड़ी दालों इत्यादि के बारे में माडल बनाये। हिन्दी–अंग्रेजी के तुकान्त शब्दों के माडल बनाये तो उन्हें पहचान भी हुई और वह उन्हें अपने पाठ्यक्रम से जोड़ने में सफल हुए। कक्षा दो व तीन के बच्चों ने विभिन्न वर्णों में लगने वाली मात्राओं के माडल बनाने में सहायता की। मेले को सफल बनाने के आस–पास के विद्यालयों को भी आमंत्रित किया था ताकि वह भी इस सीखने–सीखाने की प्रक्रिया में भाग ले सकें।

मेले के दिन 6–02–2024 को प्रातःकाल से ही बच्चों में एक अलग ही खुशी की लहर दौड़ रही थी। सर्वप्रथम सभी अध्यापिकाओं और विद्यालय के छात्र–छात्राओं का रजिस्ट्रेशन किया गया। विभिन्न विद्यालय से आये छात्र–छात्राओं व अध्यापिकाओं का भी रजिस्ट्रेशन किया गया। विद्यालय को मेले की तरह सजाया गया तथा नाटक, कविता, गीत, पहेली इत्यादि अनेक कार्यक्रमों का संचालन किया गया।

मेले के कुछ प्रमुख कार्यक्रम में सर्वप्रथम राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय महरागाँव के छात्र–छात्राओं ने माँ सरस्वती की वन्दना व स्वागत गीत प्रस्तुत किया। इसके पश्चात विद्यालय के छात्र–छात्राओं ने 'पेड़ हमारी जिन्दगी' और 'पानी एक, काम अनेक' नाटक कर दर्शकों का मन मोह लिया। कतिपय छात्रों ने पहेलियाँ, स्वरचित कविताओं की प्रस्तुति कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ा दी। कक्षा 5 के छात्रों ने बाजार में बिकने वाली विभिन्न पैकेट बन्द वस्तुओं के बारे में जानकारी दी। उनकी उपयोगिता, वह कब बनी, कैसे बनती है, उनका प्रयोग और क्या वह स्वास्थ्यवर्धक है या नहीं इसका विस्तार से वर्णन किया। बच्चों ने डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के सफल नेतृत्व में किस प्रकार हमारे संविधान की रचना हुई का भी सफल मंचन कर वाहवाही बटोरी। प्राचीन समय में संचार के क्या साधन थे और वर्तमान में कितना तकनीकी बदलाव आ गया है। प्राचीन संचार के साधन जैसे–पोस्ट कार्ड, अन्तर्देशीय लिफाफा व आज के संचार साधन–मोबाइल, इंटरनेट, ई–मेल के रूप में एक सेकेण्ड में विश्वव्यापी घटनाओं को जाना जा सकता है, बताया गया।

विभिन्न विद्यालयों से आये अध्यापक–अध्यापिकाओं, अभिभावक व अन्य गणमान्य अतिथियों ने बच्चों के आत्मविश्वास पूर्ण प्रस्तुति को देखकर प्रसन्नता व्यक्त की और उनका उत्साहवर्धन किया। इसी क्रम में आमंत्रित किये गए यूनिवर्सिटी के छात्रों द्वारा CLP (कम्प्यूटर लिटरेसी प्रोग्राम) के अतिरिक्त 'दिशा' कार्यक्रम प्रारम्भ किया है जिसकी विस्तृत जानकारी दी गई।

इस शोध मेले को कराने का परिणाम यह निकला कि सरकारी विद्यालयों के प्रति जो अभिभावकों की सोच बन रही थी उसमें बहुत बदलाव आया। कार्यक्रम के अन्त में अभिभावकों ने विद्यालय से सम्बन्धित जानकारी भी जाननी चाही। उन्हें विद्यालय के बच्चों का आत्मविश्वास, बच्चों द्वारा प्रस्तुत किये गये नाटक, कविता, पहेली, कहानी में दिखा कि बच्चे किस प्रकार हिन्दी के साथ–साथ अंग्रेजी का नाटक भी हाव–भाव के साथ बिना किसी झिझक के प्रस्तुत कर रहे थे। अनुसंधान कर मेले की शोभा बढ़ाने के लिए जो चित्र, माडल, कविता के बारे में पूछने पर बेझिझक उत्तर दे रहे थे। इस कार्यक्रम को करने में समुदाय का भी पूर्ण सहयोग रहा तथा यह विश्वास हुआ कि बच्चे अगर स्वयं करेंगे तो उनका ज्ञान स्थायी रहेगा और केवल एक सही दिशा दिखाने की आवश्यकता है जो कि एक कुशल शिक्षक के द्वारा ही किया जा सकता है।

सुरेन्द्र सिंह बिष्ट, कविता बहुगुणा, राजकीय इंटर कॉलेज डोभालवाला, देहरादून के द्वारा

रिंगाल एवं स्याही से परम्परागत लेखन विद्या की ओर के बारे में विचार साझा किये गये। हमारे पूर्वजों द्वारा लेख को सुन्दर एवं सुडौल बनाने के लिए परम्परागत रिंगाल की कलम का प्रयोग किया जाता था। कोविड संक्रमण काल में लगभग दो वर्ष विद्यालय बंद होने के कारण बच्चों की लिखावट पर भी इसका असर पड़ा। प्रधानाचार्य के रुप में जब मुझे छात्रों की उत्तर पुस्तिकाओं के अवलोकन से महसूस हुआ कि छात्रों के लेख में सुधार की अत्यधिक आवश्यकता है, क्योंकि उनके लेख में अस्पष्टता, व्याकरणिक त्रुटियां एवं स्वच्छता का अभाव देखा गया। तब मुझे बचपन की यादें ताजा हो गई जब हमारे गुरूजन हमारे लेख में सुधार हेतु रिंगाल की कलम एवं स्याही से लिखवाते थे, जिससे हमारे लेख में गुणात्मक सुधार हुआ था। इसी परिदृश्य ने मुझे अपने विद्यालय में छात्रों को रिंगाल की कलम एवं स्याही का प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया। उक्त नवाचारी प्रयोग को धरातल में उतारने हेतु मैंने सर्वप्रथम अपने अध्यापक एवं अध्यापिकाओं से वार्ता की एवं इसके महत्व को समझाने की कोशिश की। सभी विद्वान शिक्षक एवं शिक्षिकाओं ने मेरी बात पर मंथन करते हुए अपने पूर्व के अनुभव एवं वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए अपनी सहमति प्रदान की एवं इसे अपने विद्यालय में सुचारू रूप से संचालित करने हेतु एक कार्ययोजना तैयार की। विद्यालय शहरी क्षेत्र में होने के कारण यहाँ रिंगाल मिलना संभव नहीं था। उक्त कार्य योजना के क्रियान्वयन हेतु सुदूरवर्ती पहाड़ी क्षेत्रों से रिंगाल मंगवाई गई। सौभाग्य से हमारे विद्यालय में व्यावसायिक शिक्षण का कार्य भी संचालित होता है जिसका लाभ हमें रिंगाल की कलम बनाने में प्राप्त हुआ। व्यावसायिक प्रयोगशाला में शिक्षकों द्वारा बच्चों को रिंगाल की कलम बनाने में पारंगत किया गया। रिंगाल की कलम चूंकि बच्चों को प्रथम बार पकड़ाई जा रही थी। इसे दृष्टिगत रखते हुए रिंगाल की कलमों की आकर्षित बनाने हेतु उन पर डिजाइनिंग का कार्य भी किया गया जिससे छात्र कलमों की तरफ आकर्षित हो सकें। कार्ययोजना के तहत कक्षा 6 से 12 के छात्रों का प्री–टेस्ट लिया गया। इस परीक्षा के तहत छात्रों का आंकलन व्याकरणीय शुद्धता, समय प्रबन्धन, लेख एवं विराम चिन्हों के आधार पर किया गया। तत्पश्चात छात्रों को समूहों में विभाजित करके अभ्यास कार्य प्रारम्भ किया गया। कलम निर्माण एवं डिजाइनिंग के पश्चात कलम को छात्रों के हाथों तक पहुँचाना था। जिसके लिए समय विभाजन चक्र में कक्षा 6, 7 व 8 के लिए एक अतिरिक्त वादन की व्यवस्था की गयी। भाषा अध्यापकों को इस वादन में छात्रों के लेख सुधार हेतु उत्तरदायित्व सौंपा गया जिसे अध्यापक एवं अध्यापिकाओं द्वारा मनोयोग से सम्पादित करवाया गया। पहले–पहले छात्रों को उक्त कार्य हेतु मुश्किलें भी आई लेकिन धीरे–धीरे सब सामान्य होता चला गया। शैक्षिक सत्र 2022 में परिषदीय परीक्षाएं प्रारम्भ हुई, चूँकि हमारे विद्यालय में परिषदीय परीक्षा केन्द्र न होने के कारण विद्यालय में पठन–पाठन संचालित होता रहता है।

उस दौरान हमारे विद्यालय के शिक्षक साथियों एवं बी0एड0 प्रशिक्षुओं के अथक प्रयास से विद्यालय के छात्रों को रिंगाल की कलम एवं स्याही से लिखने का अभ्यास करवाया गया। जिसके गुणात्मक परिणाम सामने आये।

नवीन शैक्षणिक सत्र 2022–23 प्रारम्भ होते ही मैंने कलम से लिखवाना कक्षा 6 से 12 तक की भाषा की कक्षाओं में अनिवार्य कर दिया जो अनवरत जारी है। इस नवाचारी प्रयोग की कार्यशाला का उद्घाटन माननीय शिक्षा मंत्री, उत्तराखण्ड एवं माननीय वित्त मंत्री, उत्तराखण्ड द्वारा किया गया। तत्पश्चात कार्ययोजना समयान्तर्गत पूर्ण करने के बाद सभी छात्रों की पश्च परीक्षा करवायी गयी, जिसके परिणाम पूर्व परीक्षा से अधिक बेहतर देखने को मिले। विभागीय अधिकारियों द्वारा छात्रों के सुलेख का अवलोकन करने के पश्चात इस नवाचारी प्रयोग को सम्पूर्ण प्रदेश में लागू करने पर भी बात हुई। मेरे विद्यालय द्वारा संचालित कलम और स्याही के इस नवाचारी

प्रयोग का चयन प्रादेशिक स्तर पर सम्पादित बाल चौपाल प्रदर्शनी के माध्यम से हुआ जिसमें विद्यालय के छात्रों के द्वारा शिक्षकों के मार्गदर्शन में सराहनीय कार्य किया गया।

मेरे मानस पटल पर अक्सर गाँधी जी के शब्द उभर आते हैं कि "लेख का सुन्दर न होना, अधूरी शिक्षा है।" वास्तव में लेख व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रदर्शित करता है। अतः बच्चों में लिखने की प्रवृत्ति को विकसित करना ही होगा। इसके लिए विद्यालय एक महत्वपूर्ण प्लेटफार्म है।

त्रिभुवन सिंह राठौर, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय घसाड़ पिथौरागढ़ के द्वारा **वंदना सभा से प्रभावशाली शैक्षिक वातावरण का निर्माण** में प्रस्तुतीकरण किया गया। प्रत्येक विद्यार्थी अपनी अंतर्निहित शक्तियों के साथ विद्यालय–संस्था से जुड़ता है। वह अपनी विविधतापरक मनःस्थितियों व उदीयमान चिंतन से विद्यालय को प्रभावित करता है। स्वयं भी विद्यालय के प्रेरक शैक्षिक वातावरण से अत्यंत प्रभावित होता है।

अपनी अध्ययन यात्रा में एक विद्यार्थी विद्यालय के संबंध में एक विशिष्ट छवि बनाता है, उसी के अनुरूप वह अनुकूलित होकर व्यवहार करने लगता है। यही कारण है की वंदना सभा को विद्यालय का दर्पण कहा गया है।

एक प्रभावशाली व प्रेरक वंदना सभा से विद्यालय की दैनिक–चर्या का प्रारंभ होता है। हम अपने विद्यालय में इस सभा को गतिशील व अभिप्रेरक बनाने के लिए अनेक स्तरों पर कार्य करते हैं। यथा–ईश वंदना, समूह गीत–गायन, समाचार वाचन, सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी, दैनिक पंचांग कथन, प्रेरक प्रसंग, आज का विचार आदि वंदना सभा के ऐसे आयाम है जिनका संचालन स्वयं विद्यार्थी स्वतः स्फूर्त भाव से करते हैं। हम यह प्रयास करते हैं कि शिक्षा, करियर, लोक–संस्कृति, संस्कार, पर्यावरण, समाज, पशुपालन, बागवानी, मिट्टी शिल्प क्राफ्ट, स्वास्थ्य शिक्षा, मीडिया, सैन्य सेवा, नारी सशक्तिकरण, यातायात, आपदा प्रबंधन, योग–ध्यान आदि क्षेत्रों में विशिष्ट कार्य करने वाले प्रेरक व्यक्तियों को अपनी वंदना सभा का हिस्सा बनते हैं।

अपने–अपने कार्यक्षेत्र में विशिष्ट कार्य करने वाले व्यक्तित्व जब हमारी वंदना सभा में आकर विद्यार्थियों से संवाद करते हैं तो एक अभिप्रेरक शैक्षिक परिवेश का सृजन होता है। जब एक सफल व्यक्ति अपनी सफलता की कहानी को प्रेरक बनाकर प्रस्तुत करता है तो विद्यार्थियों के मानस पटल पर उसकी अमिट छाप होती है। वंदना सभा में आए हुए अतिथि द्वारा जीवंत की गई "सक्सेस स्टोरी" को विद्यार्थी अपने जीवन में उतारते हैं। इसका लाभ कक्षा–शिक्षण व संपूर्ण अधिगम प्रक्रिया पर होता है। समय–समय पर हम अपने शिक्षक साथियों को भी क्रमशः वंदना सभा का मंच देते हैं जहां पर वे समसामयिक घटनाक्रम पर, सरकार की शैक्षिक उन्नयन नीतियों, लोकाचार पर मार्गदर्शन देते हैं। इसका प्रत्यक्ष प्रभाव बाल मनोविज्ञान पर पड़ता है।

वंदना सभा में सीखने के सूत्र...

विद्या अर्जन का कार्य बहुत श्रेष्ठ कार्य है। विद्या ही विद्यार्थियों को विभूतियों की ओर ले जाती है। वंदना सभा बच्चों में अनुशासन, एकाग्रता, चिंतन–मनन, सदाचार, सुनागरिकता व मानवीय मूल्यों का बीजारोपण करती है। सीखने–सिखाने की अंतहीन प्रक्रिया में जिस एकाग्रता, अनुशासन व आचरण की आवश्यकता होती है, वह सब एक प्रभावशाली वंदना सभा दे सकती है।

हमने यह अवलोकन किया है व समय–समय पर हमारे अनुभव में भी यह आया है कि एक गतिशील व समावेशित वंदना सभा विद्यालय के पठन–पाठन को दिवसपर्यंत गतिशील बनाए रखती है। विद्यार्थियों को जिन बिंदुओं पर प्रेरक उदबोधन मिलता है, वे उन्हें अपनी पुस्तकों में, पुस्तकालय में, घर– परिवार – समाज में खोजने लगते हैं। इससे उनकी खोजी प्रवृत्ति का विकास होता है।

यही विकासमान अभिरुचि उन्हें सफलता का द्वार दर्शन कराती है। इन सभी बिंदुओं का यह परिणाम है कि हमारे बच्चे नियमित विद्यालय आना चाहते हैं। विद्यालय के विषय में उनकी सकारात्मक सोच विकसित होती है। उनकी खोजी वृत्तियों का परिहार होने लगता है। उनमें अध्ययन आदतों का निरंतर विकास होने लगता है। हम अपने विद्यालय में एक टीम भावना से अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान देकर उपर्युक्त गतिविधियों को कार्य रूप में परिणत करते हैं।

उमादत्त नौटियाल, राजकीय प्राथमिक विद्यालय चामी टिहरी गढ़वाल के द्वारा **प्रार्थना सभा तथा प्रातःकालीन गतिविधियों का सीखने सिखाने में प्रभावी उपयोग** के सम्बन्ध में विचार साझा किये गये। सुबह की प्रार्थना सभा अधिगम का एक सशक्त माध्यम है। प्रार्थना सभा में विद्यार्थी तरो ताजा होकर अपने दिन की शुरुआत करते हैं और कुछ सीखने के लिए आतुर रहते हैं। मैं अपने विद्यालय में एकल अध्यापक हूं। ऐसे में मैंने विद्यार्थियों को अपने सहयोगी के रूप में रखा। उन्हें कार्य विभाजन में दायित्व दिया। विद्यार्थियों को उनके स्तरानुसार कार्यों का प्रमुख बनाया। इसमें स्वच्छता प्रमुख, अनुशासन प्रमुख, वंदना प्रमुख, सांस्कृतिक प्रमुख, उद्यान प्रमुख, चिकित्सा प्रमुख, खोया–पाया प्रमुख, जयंती प्रमुख आदि। अन्य विद्यार्थियों को भी उनकी कक्षा के दायित्व देकर सहयोगी बनाया। यह विद्यार्थी अपने दायित्व का निर्वहन बहुत ही जिम्मेदारी से करते हैं, जैसे स्वच्छता प्रमुख अपनी पूरी टीम के साथ सभी विद्यार्थियों को साथ लेकर प्रार्थना से पूर्व विद्यालय के आंगन में पड़े हुए कूड़ा करकट, पत्तियों एवं कागजों को एकत्रित कर उन्हें डस्टबिन में डाल कर उसका निस्तारण कर देते हैं, साथ ही गमले और फुलवारी में लगे पौधों को पानी देते हैं। शेष आगे की दिनचर्या के लिए विद्यार्थी अपने–अपने कार्य को बड़ी जिम्मेदारी के पूरा करते हैं। इससे उनके अंदर नेतृत्व करने की क्षमता का विकास होता है एवं अपने कार्य करने से जो उनको संतोष मिलता है यही ऊर्जा उन्हें सीखने की प्रक्रिया में बहुत मदद करती है। सप्ताह के अंतिम दिवस शनिवार को यह बच्चे बाल सभा करते हैं। इसमें सप्ताह भर की गतिविधियों पर चर्चा करते हैं तथा अगले सप्ताह अधिक बेहतर ढंग से कार्य करने के लिए कार्य योजना तैयार करते हैं। इसके लिए चिन्हित क्षेत्रों पर बातचीत करते हैं तथा अपने सुझाव को पंजिका में अंकित करते हैं। यह बच्चे इसको सांस्कृतिक रूप भी देते हैं तथा बाल सभा में विद्यार्थी अपनी पसंद के अनेकों खेल जैसे अंताक्षरी, पहेलियाँ, हिंदी, अंग्रेजी शब्दों की रेल आदि खेल खेलते हैं। सप्ताहभर में प्रार्थना सभा के संचालन के लिए निर्धारित दिवस के बच्चे अपना संचालन प्रारंभ करते हैं

प्रत्येक दिवस की प्रार्थना अलग और समूह गान अलग–अलग होते हैं एवं अंत में विश्व कल्याण मंत्र ''सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामया सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मां कश्चित दुख भाग भवेत'' पूर्ण प्रार्थना कराई जाती है। विद्यालय में छोटी किंतु बहुत ही महत्वपूर्ण निरंतर चलने वाली गतिविधि जिसमें विद्यार्थी प्रतिदिन नई कविता, कहानी, प्रेरक प्रसंग सुनाते हैं। सुनाई हुई कविता को दीवार पुस्तिका में स्थान दिया जाता है। अपने नाम के साथ में विद्यार्थियों को यह गतिविधि बहुत अच्छी लगती है। इसके साथ ही विद्यार्थी प्रतिदिन अपने जिले एवं प्रदेश के समाचारों का वाचन करते हैं उसके बाद कुछ सामान्य ज्ञान जानकारियां रखी जाती है।

प्रार्थना में सभी विद्यार्थियों को अपनी अभिव्यक्ति करने का पूरा अवसर मिलता है। प्रार्थना हारमोनियम, ढोलक के साथ में कराई जाती है जिससे प्रार्थना आनंदमय बन जाती है। दूसरी नियमित होने वाली गतिविधि व्यायाम एवं पद संचालन है। जिसे बांस ड्रम के साथ में करते हैं इसके साथ में विद्यार्थियों की ड्रेस, नाखून, बाल स्वच्छता की जांच करके अपेक्षित निर्देश देकर

विद्यार्थी संचालन गीत बोलते हुए अपनी कक्षाओं को प्रस्थान करते हैं। इस पूरी प्रक्रिया में यदि किसी विद्यार्थी को सम्बोधित करना हो तो उन्हें उनके नाम से संबोधित किया जाता है। विद्यार्थियों को यथा सम्मान मिले इसका पूरा ध्यान रखा जाता है कि किसी भी प्रकार की ऐसी भाषा का प्रयोग न हो कि विद्यार्थी अपने को अपमानित महसूस करे। सदैव ही प्रोत्साहन की भाषा और शब्दों का निरंतर प्रयोग होता है। प्रार्थना सभा में कही गई कविताएँ, कहानी, प्रेरक प्रसंग एवं बोध कथाएँ न केवल विद्यार्थियों में अनुशासन संस्कार एवं चरित्र निर्माण का कार्य करती हैं बल्कि उनके समृद्ध शब्द कोष का निर्माण भी करती हैं जो अभिव्यक्ति में व्यक्त होती है।

विद्यालय की अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावपूर्ण बनाने के लिए विद्यालय की दीवारों को प्रिंट रिच से आच्छादित किया गया। विद्यालय का हर कोना प्रिंटरिच से आच्छादित किया। पानी के उपयोग से संबंधित तथा सावधानियां को वर्णित किया। बागवानी में पौधों के नाम की पटिका एवं उनसे संबंधित जानकारियां उपलब्ध करवाई। उत्तराखंड सरकार ने एफ.एल.एन से सम्बन्धित स्लोगन प्रतिज्ञा एवं लक्ष्य को विद्यालय के मुख्य दीवारों पर अंकित किया। विद्यालय की बाहर दीवारों को आकर्षक कार्टूनों से सुसज्जित किया जो बच्चों के बाल मन को आकर्षित करेंगे।

विद्यालय में उपस्थिति हमेशा 95 से 100 प्रतिशत के बीच बनी रहती है। यदि कोई विद्यार्थी किन्हीं कारण से किसी दिन उपस्थित नहीं हुआ तो मैं स्वयं ऐसे विद्यार्थियों के घर उसकी जानकारी के लिए जाता हूं। यदि बिना कारण के बच्चा घर में घूम रहा है तो उसे सहज करते हुए विद्यालय में पठन के लिए लाता हूं। इस तरह से कोई विद्यार्थी अनावश्यक घर में नहीं रहता। विद्यालय के पास अपना पर्याप्त खेल का मैदान है जो समुदाय की सहायता से बना है। विद्यार्थी इसका उपयोग बैडमिंटन, कबड्डी, खो–खो आदि खेलो को खेलने के लिए करते हैं। मेरा विद्यालय भी निपुण विद्यालय बना है।

उपेन्द्र कुमार भट्ट, राजकीय प्राथमिक विद्यालय बनौली, चम्पावत के द्वारा **नामांकन वृद्धि के लिए समुदाय और शिक्षकों के सामूहिक नवाचार** के सम्बन्ध में प्रस्तुतीकरण दिया गया। बच्चों के सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं को सरल, सुगम तथा सुग्राह्य, बनाने के लिए विद्यालय में छात्र संख्या का होना नितान्त आवश्यक होता है। जब कुछ वर्ष पूर्व मेरा स्थानांतरण राजकीय प्राथमिक विद्यालय डसियाचामी से राजकीय प्राथमिक विद्यालय– बनौली (वर्तमान) विद्यालय में हुआ तो छात्रों के न्यूनतम नामांकन की समस्या पैदा हो गई थी। उदाहरण के लिए 2015–16 में मात्र सात छात्र नामांकित थे। छात्र कम होते हैं तो मनोवैज्ञानिक रूप से शिक्षक और शिक्षण दोनों प्रभावित होते हैं, जिस कारण बच्चों को सामूहिक गतिविधियों, ''पियर लर्निंग'' या अन्य पाठ्यसहगामी क्रियाकलापों के अवसर नहीं मिल पाते थे क्योंकि बालसखाओं की समूह में या समूह से सीखने की प्रवृति जन्मजात होती है।

विद्यालय नामांकन वृद्धि के लिए विद्यालय द्वारा क्षेत्रों में भ्रमण कर नवाचारी कार्यक्रमों जेसे घर–घर जाकर माता–पिता से बातचीत करना और उनके हस्त शिल्प जैसे – (रस्सी /टोकरी /झाडू बनाना/ मिस्त्री कार्य) कार्यो को समाज में उनके योगदान के नजरिए से शामिल करना, प्रतिभा दिवस के दिन जो जिस कार्य में निपुण है। उनके अनुभवों को कक्षा शिक्षण में शामिल करना, सम्मान देना तथा बातचीत के अवसर प्रदान करना, एक प्रधानाध्यापक के रुप में प्रत्येक कार्य बैठको में हर परिवार से लोगों को बुलाना, विद्यालय में नियुक्त शिक्षकों के प्रति अभिभावकों का विश्वास पैदा हो सके, इसके लिए शिक्षकों की योग्यताओं और उनके कौशलों को अभिभावकों के साथ साझा करना और विद्यालय कक्षा शिक्षण हेतु सप्ताह में कक्षा कक्ष में अभिभावक को आमन्त्रित करना इसके अतिरिक्त मासिक राष्ट्रीय पर्वो के माध्यम से सभी अभिभावकों को लगातार विद्यालय से जोड़ा गया और गहनता से चर्चा परिचर्चा होती

रहती है। विद्यालय नवाचारों को एस.एम.सी. बैठकों में भी लगातार साझा किया जाता है।

सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में पारदर्शिता बनी रहे, जो भी आवश्यक प्रयास होते हैं वो पूरे मानोयोग से किये ज़ा रहे हैं–जैसे अध्यक्ष विद्यालय प्रबंधन समिति / ग्राम प्रधान / व जनता की मौजूदगी में निर्माण कार्य करवाना। विद्यालय अनुदानों से सम्बंधित कार्यो का ठीक से विभागीय नियमानुसार दस्तावेजीकरण करना तथा फोटोग्राफ आदि को भविष्य हेतु सुरक्षित रखना, एस.एम.सी. के सदस्यों द्वारा वार्षिक सामाजिक आडिट प्रस्तुत करना इत्यादि। इन महत्वपूर्ण वजहों / कारणों से स्कूल के प्रति अभिभावकों के विश्वास और उत्साह में अभूतपूर्व परिवर्तन देखे गये। विशेष तौर पर वि०प्र०स० बैठकों को अभिभावक केन्द्रित करना, अभिभावकों को उनके पाल्यों की प्रगति से परिचित करवाना, विद्यालय मदों की धनराशि को कैसे, क्यों और किस पर खर्च किया जा रहा है इस बात में उन्हें शामिल करना, सप्ताहान्त क्षेत्र भ्रमण अनिवार्य रूप से करना। शिक्षार्थियों को दिए जाने वाले कार्यो में अभिभावकों के लिए निर्देशों को शामिल करना, दूर के अभिभावकों को उनके पाल्यों की प्रगति के बारे में दूरभाष या ऑनलाइन छात्र अभिभावक व शिक्षक संवाद जारी रखना प्रत्येक छात्र / छात्रा का स्कूल में रिकॉर्ड रखना ताकि अभी कोई छात्र किस स्तर पर है या किस स्तर पर ध्यान देने की काम करने की जरुरत है, इसकी वस्तु स्थिति को माता–पिता के साथ साझा करना इसके अतिरिक्त विद्यालय के प्रत्येक छात्र–छात्रा को प्रधानाध्यापक द्वारा वर्ष भर निःशुल्क स्टेशनरी प्रदान करने से छात्रों के नामांकन में वृद्धि हुई तथा सरकारी योजनाओं जैसे मध्यान्ह भोजन (PM POSHAN)/ मिल्क (मुख्यमंत्री आँचल अमृत योजना) / पोषाहार निःशुल्क – पुस्तक गणवेश कंप्यूटर की उपलबध्ता आदि से रूबरू कराया जाता है। विद्यालय सत्र में कम से कम सप्ताह में एक बार एक अभिभावक को विद्यालय में बुलाया जाता है, जिसके पीछे का उदेश्य स्थानीय स्तर पर किये जाने वाले कार्यो, श्रम के महत्व व श्रम की गरिमा जैसे मूल्यों को बच्चों के बीच स्थापित करना होता है। इस दिन वह विद्यालय में आकर जो जिस कार्य में दक्ष होता है वह उसे छात्रों के बीच रखता है, और अपने को सम्मानित भी समझता है और छात्रों में विभिन्न दक्षताओ के प्रति रूचि जाग्रत होती है। वे उन कार्यों को अपने दैनिक जीवन में भी प्रयोग कर रहे हैं। इसके अलावा विद्यालय के शिक्षकों द्वारा छुट्टी या छुट्टियों में प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु अभिभावकों की सहमति पर अतिरिक्त शिक्षण कराया जा रहा है।

विद्यालय के शैक्षिक, भौतिक व सृजनात्मक कार्यो से प्रभावित होकर अभिभावकों द्वारा अपने छात्रों का नामांकन हमारे विद्यालय में कराया गया जिसके परिणामस्वरूप दो छात्रों का (1 बालक 1 बालिका) चयन जवाहर नवोदय विद्यालय, 1 छात्र का चयन राजीव नवोदय विद्यालय, 1 छात्र का चयन मुख्यमंत्री मेधावी छात्रवृत्ति तथा 1 छात्र का चयन मुख्यमंत्री उदयीमान खिलाड़ी हेतु हुआ है। वर्तमान में हमारी छात्र संख्या 42 तक पहुंच गयी है सरकारी निधि का प्रयोग करते हुए समस्त क्षेत्र की जनता की भागीदारी के कारण विद्यालय में चाहरदीवारी, शौचालय, प्रार्थना सभा स्थल, कंप्यूटर, टी०वी० आदि विभिन्न संस्थाओं से प्राप्त कर, विद्यालय में आई.सी.टी. का प्रयोग किया जा रहा है। इस कारण विद्यालय के छात्रों का सर्वांगीण विकास हो रहा है और छात्र जिला व राज्य स्तरीय प्रतियोगितायो में प्रतिभाग कर विद्यालय के नाम को रोशन कर रहे हैं। इन उपलब्धियों के कारण आज समस्त विद्यालय परिवार अपने को गौरवान्वित महसूस कर रहा है।

Infrastructure and Human Resources in Quality Education Delivery in Uttarakhand: *By Dr. Vinod Dnyum & Ravinder Bhandari.* A Case Analysis of Atal Utkrisht Schools. Atal Utkrisht (AU) Schools are established to

provide high-quality school education to children belonging to economically marginalised and disadvantaged groups in the state of Uttarakhand. The scheme was implemented in 2021-22, and two AU schools were targeted to be established in each block. Hence, 189 AU schools (across the 13- districts) were established to fulfill the idea of afordable, high-quality education. English medium instructions and affliation with the CBSE board were the key policy changes implemented as a part of this scheme. To understand the current state of AU Schools in achieving its goal of delivering quality education, a mixed-method study was designed usinga survey and field study. The survey was designed to conduct a detailed examination of the infrastructure, resources, and educational quality of Atal Utkrisht Schools in the state. These survey results were further validated through comprehensive field visits to a sample of AU Schools across various blocks, using qualitative techniques such as participant observations and semi-structured interviews with key stakeholders. These disparities have profound implications for educational equity and access, necessitating targeted interventions to bridge the gap. The paper concludes with actionable recommendations for policymakers and educational administrators to enhance the infrastructure and overall quality of education in Atal Utkrisht Schools.

मनजीत सिंह रावत, प्राथमिक विद्यालय मनेरी, उत्तरकाशी द्वारा **शिक्षा के नित नए आयाम गढ़ता एक आदर्श राजकीय विद्यालय** के सम्बंध में प्रस्तुतीकरण किया गया। राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय मनेरी विकासखण्ड भटवाड़ी, जनपद उत्तरकाशी का एक सुदूरवर्ती विद्यालय है। विद्यालय वर्ष 2016 में आदर्श विद्यालय के रूप में स्थापित हुआ व यहां एक प्रधानाध्यापक और पांच सहायक अध्यापकों के पद सृजित हुए जिसमें हिन्दी, अंग्रेजी, सामान्य अध्ययन, गणित, विज्ञान के शिक्षकों की विषयवार विभागीय परीक्षा के द्वारा नियुक्ति की गयी। विद्यालय में शिक्षण हेतु विभिन्न नवाचारी व रचनात्मक गतिविधियों का प्रयोग शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं को रूचिकर बनाने के लिए किया जा रहा है, जिसमें आई.सी.टी. आधारित शिक्षण, प्रोजेक्टर, ऑडियो विजुअल डिवाइस, टी.वी.एल. ई.डी. का कक्षा–कक्ष में प्रयोग व विद्युत की नियमित आपूर्ति के लिए इनवर्टर की सुविधा भी विद्यालय में सामुदायिक सहयोग से उपलब्ध है। समुदाय ने विद्यालय में 43 इंच के 2 एल.ई.डी. टी.वी. भी प्रदान किये हैं जिससे आई.सी.टी. का प्रयोग शिक्षण में निरन्तर से किया जा रहा है। पर्याप्त भौतिक एवं शिक्षण में सहायक सामग्री की उपलब्धता विद्यार्थियों के सीखने के प्रति रुचि के विकास से उनकी सीखने की दक्षताओं के विकास में सहूलियत हुई है।

रचनात्मक गतिविधियों में इंग्लिश स्पीकिंग डे., प्रतिभा दिवस, हर वर्ष बालशोध मेला, वार्षिक उत्सव कार्यक्रम आदि अनेक रोचक कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं जिसके कारण सत्र 2024–25 में विद्यालय की छात्र संख्या 150 हो गयी है जिससे सरकारी विद्यालय में प्रति समाज में विश्वास पैदा हो रहा है। हमारे सेवित क्षेत्र में 4 निजी अंग्रेजी, हिन्दी माध्यम से संचालित विद्यालय है जहां विगत के वर्षों में छात्र संख्या में व्यापक कमी आयी है। विगत तीन वर्षों से एक अध्यापक कम है, जिससे हमने नामाकंन प्रक्रिया इस सत्र में बंद कर दी है। हमारे विद्यालय से वर्ष 2016 से 2023 तक 33 छात्रों का चयन जवाहर नवोदय विद्यालय धुनगिरी पुरोला, 9 छात्र–छात्राएं राजीव गांधी नवोदय विद्यालय चिन्यालीसौड़, एक छात्रा का चयन सुरेन्द्र राकेश आवासीय विद्यालय हरिद्वार एवं एक छात्र का चयन देश के प्रतिष्ठित सैनिक स्कूल घोड़ाखाल नैनीताल के लिए हुआ है।

अबेकस प्रतियोगिता – मानसिक संक्रियाओं व मस्तिष्क विकास हेतु वर्ष 2019 से जनपद व राज्य स्तर पर आयोजित हो रही है। इस प्रतियोगिता में भी विगत पांच वर्षों से हमारे विद्यालय की छात्र–छात्राएँ जनपद स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करते आ रहे हैं। हमारा विद्यालय सत्र 2023–24 में निपुण विद्यालय घोषित हो चुका हैं। हमारे विद्यालय में 4 से अधिक गांव के बच्चे दूर–दूर से शिक्षण हेतु आते हैं जो कि शिक्षकों के कठिन परिश्रम के प्रति समुदाय के विश्वास को दर्शाता है। विद्यालय में सामुदायिक सहयोग में सभी अभिभावक, जन प्रतिनिधि, ग्राम प्रधान, क्षेत्र पंचायत सदस्य, ब्लॉक प्रमुख व स्थानीय विधायक और उच्च अधिकारियों का विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों व आयोजनों में नियमित सहभागिता से विद्यालय का स्तर भी बढ रहा है।

ममता गुप्ता, राजकीय प्राथमिक विद्यालय गिनती गांव, नैनीताल के द्वारा **"विद्यालय व्यवस्था, नामांकन वृद्धि तथा उच्च शैक्षिक संप्राप्ति में समुदाय की भूमिका"** के सम्बंध में विचार प्रस्तुत किये गये। विद्यालय में नामांकन वृद्धि हेतु किए गये प्रयासों को साझा किया गया है:–वर्ष 2018 में कार्यभार ग्रहण करने के समय विद्यालय की छात्र संख्या 8 थी। विद्यालय भवन जर्जर स्थिति में शैक्षिक स्तर विद्यालय का सामान्य से नीचे था। टूटा–फूटा शौचालय, प्रांगण, चाहरदिवारी विहीन सेवित क्षेत्र के बच्चे भी नजदीकी पब्लिक स्कूल में नामांकित थे। विद्यालय में नामांकित बच्चे अत्यधिक निम्न आर्थिक स्थिति वाले परिवारों के थे।

कार्यभार ग्रहण करने के उपरांत शिक्षकों के साथ मिलकर कार्य करते हुए सर्वप्रथम स्थानीय सशक्त बुद्धिजीवी व्यक्तियों, ग्राम प्रधान, वार्ड मेंबर व विद्यालय में पढ़ रहे छात्रों के माता–पिता को लेकर के एक सशक्त विद्यालय प्रबंधन समिति का गठन किया। सर्वप्रथम यह बात रखी गयी कि बिना स्थानीय सहयोग के जर्जर स्थिति युक्त, सरकारी विद्यालय को एक अच्छे आदर्श विद्यालय की रूप में संकल्पना नहीं की जा सकती। उपस्थित लोगों के साथ विद्यालय विकास योजना का निर्माण किया जिसमें एक आदर्श विद्यालय की संकल्पना को लेकर विद्यालय भवन की स्थिति को आकर्षक, प्रिंट–रिच वातावरण, सुरक्षित वातावरण के लिए चाहरदीवारी तथा अत्याधुनिक शौचालय की व्यवस्था को प्रस्तावित कर स्थानीय विधायक व सांसद महोदय से संपर्क कर और विभागीय अधिकारियों का सहयोग लेकर विद्यालय को मिलने वाले अनुदानों को वरीयता के क्रम से विद्यालय की आवश्यकताओं को पूरा करने का कार्य किया गया। सांसद निधि, स्वयंसेवी संस्थाओं से संपर्क कर उक्त समस्त निर्माण कार्यों को पूरा कराया गया।

सरकारी विद्यालय में छात्रों को दी जाने वाली सुविधाओं का पम्फलेट छपवा कर, सूचीबद्ध कर बच्चे के नामांकन हेतु घर–घर जाकर संपर्क किया गया जिसके फलस्वरुप अप्रैल 2019 को विद्यालय की छात्र संख्या 8 से 84 हुई। 84 छात्र संख्या होने पर तत्काल प्रबंधन समिति ने अपने प्रस्ताव से गांव की ही योग्य बालिकाओं को स्वयंसेवी शिक्षक के रूप में विद्यालय को उपलब्ध कराया। विभाग ने भी विद्यालय में एक अन्य शिक्षक को नियुक्त किया। इसी क्रम में विद्यालय प्रबंधन समिति ने छात्र नामांकन को बढ़ाने हेतु, छोटे बच्चों को प्री–प्राइमरी की क्लासेस देने के लिए प्री–प्राइमरी कक्षाओं का संचालन किया। इन कक्षाओं के संचालन हेतु गांव से ही शिक्षित बच्चों का सहयोग लेकर व्यवस्था बनाई।

प्री–प्राइमरी कक्षा में इस सत्र में 35 बच्चों का नामांकन हुआ। विद्यालय के शैक्षणिक स्तर को सुधारने के लिए विद्यालय में शिक्षण का माध्यम हिंदी व अंग्रेजी दोनों का ही रखा गया तथा विद्यालय में कंप्यूटर शिक्षा के लिए एल.टी. फाउंडेशन से संपर्क कर एक कंप्यूटर लैब स्थापित कर, एक कम्प्यूटर शिक्षक को कंप्यूटर शिक्षण हेतु व्यवस्था में रखा गया है। इस तरह विद्यालय प्रबंधन ने अगले सत्र में विद्यालय की छात्र संख्या को 110 तथा प्री–प्राइमरी में 55 छात्रों को

नामांकित किया। समुदाय द्वारा कक्षा–कक्ष का निर्माण, परिसर व कक्षा कक्षों को सी.सी.टी.वी., कैमरे, वाटर फिल्टर, स्मार्ट टीवी, स्मार्ट बोर्ड एवं स्वच्छता के लिए स्वच्छक जैसी व्यवस्थाएं विद्यालय को उपलब्ध कराई गई। विद्यालय का सकारात्मक शैक्षिक माहौल के फलस्वरुप, छात्र आयोजित विभागीय प्रतियोगिताओं में व अन्य प्रतियोगिताएं, राजीव गांधी नवोदय चयन, जवाहर नवोदय चयन, सैनिक स्कूल चयन, मैथ विजार्ड, स्पेलिंग जीनियस, सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेल प्रतियोगिताओ में स्कूल के बच्चे अपना उच्च प्रदर्शन करने लगे। नामांकन बढ़ता गया। विद्यालय प्रबंधन समिति गिनती गांव ने इन बच्चों के नामांकन को स्वीकारा व इनके आने जाने के लिए बस की व्यवस्था की ।

विद्यालय में छात्र संख्या के अनुपात में विभाग द्वारा शिक्षण व्यवस्था की गई तथा शिक्षकों की कमी होने पर विद्यालय प्रबंधन समिति स्वयंसेवी शिक्षक उपलब्ध कराकर छात्रों के शिक्षण को प्रभावित नहीं होने देती है। वर्तमान में विद्यालय निपुण विद्यालय की सभी शर्तो को पूरा करता है। विद्यालय में कक्षा शिक्षण के अलावा संगीत शिक्षण, खेल शिक्षण, वाद्य यंत्र बजाना एवं प्रतियोगी परीक्षाओं की अलग से तैयारी कराई जाती है। वर्तमान में विद्यालय की छात्र संख्या कक्षा 1 से 5 तक 204 है और प्री–प्राइमरी में 80 बच्चे नामांकित हैं। विद्यालय गत सत्र 2023–2024 में ही 20 छात्र राजीव नवोदय विद्यालय, चार छात्र जवाहर नवोदय विद्यालय, तीन बालिकाएं हिम ज्योति आवासीय विद्यालय देहरादून तथा एक छात्र विद्याज्ञान विद्यालय बुलंदशहर में प्रवेश प्राप्त कर चुके हैं। वर्तमान में विद्यालय एक आदर्श विद्यालय के सभी आदर्श मानकों को पूरा करते हुए, एक अच्छा नामांकन युक्त, अच्छा प्रबंधन एवं पर्याप्त शिक्षक संख्या जैसे मानकों को पूरा करते हुए शिक्षण व्यवस्था सम्पन्न विद्यालय के रुप में अग्रसर है।

मीनाक्षी उनियाल, राजकीय आदर्श प्राथमिक विद्यालय ललोटना, टिहरी गढ़वाल के द्वारा **''प्रारम्भिक शिक्षण में प्रभावी शैक्षणिक प्रक्रियाएं''** में प्रस्तुतीकरण किया गया। 2017 में विद्यालय में कार्यभार ग्रहण करने के समय विद्यालय में दो कक्षा–कक्ष व शौचालय उपलब्ध थे तथा छात्र संख्या 33 थी जो कि हमारे प्रयासों से बाद में बढ़कर 77 हो गई है। नामांकन में वृद्धि के चलते कक्षा–कक्ष के न होने पर बच्चों की बैठक व्यवस्था सही ढंग से नहीं हो पा रही थी। अतः हमने समुदाय की बैठक कर विद्यालय की समस्याओं से अवगत कराया। परिणाम स्वरूप विद्यालय तथा एस. एम. सी. अध्यक्ष के प्रयासों से विद्यालय में मैदान, विधायक निधि व जिला प्लान से एक–एक कक्षा–कक्ष, ग्राम प्रधान जी द्वारा विद्यालय के चारों तरफ चाहरदिवारी व टीन शेड निर्माण व, 2 शौचालय व स्मार्ट बोर्ड व प्रोजेक्टर लगाया गया।

बुनियादी भाषाई दक्षता संवर्धन हेतु कक्षा एक व दो के बच्चे तुकबंदी गीत, रोचक रूप से एक्शन के साथ अल्फाबेट सम्बंधी गाने, बच्चा संगीत वर्णमाला में ध्वन्यात्मक जागरूकता, विभिन्न जानवरों की आवाजें निकालना व पहचान, कक्षा में रखी गई वस्तुओं को बजाना व उनकी पहचान, विभिन्न वर्णो की ध्वनि निकालना व उनकी पहचान, वर्णों को बोलते समय चेहरे के हाव–भाव और ध्वनि को सुनना, देखना व उसका अनुसरण करना, एक ही प्रकार की ध्वनि वाले शब्दों का उच्चारण करना, समय–समय पर विद्यालय में अभिभावकों को बुलाकर उनके बच्चों की कॉपियों की जाँच व उनके अभिभावकों द्वारा अपने बच्चों की कॉपी उनका लेख देखकर अलग करना, अभिभावक अपने बच्चों को कहानी बोलते हैं और बच्चे उस कहानी को लिखते हैं जिसमें प्रथम, द्वितीय व तृतीय आने वाले अभिभावक को पुरस्कृत किया जाता है। सीखने की विधि में कला व शिल्प का प्रयोग करवाया जाता है जैसे काटना, वर्णमाला के वर्णों को रंगना, क्ले वर्क, रंगोली चित्र बनाकर वर्णों के आगे चिपकाना। यह गतिविधि मनोरंजक है। रंगों के नाम, फूलों के नाम फलों का नाम, सिखाने में इस गतिविधि का उपयोग किया

जाता है। इसके अलावा बड़ी कक्षाओं में मधुबनी पेंटिंग, वर्ली पेंटिंग, मॉडर्न आर्ट, भी बच्चों को सिखाई जाती है।

हम एक सप्ताह में चार या पांच दिन वर्णों को सीखते हैं। माह में 10 वर्ण तथा उनका अभ्यास करवाया जाता है। चित्रों के माध्यम से पढ़ना, वर्णों को जोड़कर पढ़ना, किसी कहानी पर बातचीत करना, अपने आस–पास की वस्तुएं दिखाकर उनसे बातचीत करना जैसे शब्द देकर वाक्य बनाना, विभिन्न प्रकार की गतिविधियां जैसे खजाना ढूंढना में नाम के अक्षर ढूंढकर वर्ण पर गोला बनाएं, वर्णों का मिलान, चित्र के साथ वर्ण को मिलाना, कई अक्षरों में एक अक्षर ढूंढना, किसी वस्तु को पहचान कर उसमें वर्णमाला का लेवल लगाना तथा उनके पसंदीदा सामाजिक खेल, पशु–पक्षियों के खेल तथा छोटे–छोटे रोल प्ले, आदि करवाए जाते हैं। अच्छी चीजें डिस्प्ले बोर्ड पर लगायी जाती हैं।

हर वर्ष विद्यालय में पोषण माह मनाया जाता है जिसमें सभी माताएँ अपने पारंपरिक व्यंजन बनाकर लाती है। बच्चों को सब्जियों, अनाजों, फलों में पाए जाने वाले न्यूट्रिशन के बारे में बताया जाता है। इसके अतिरिक्त अन्य कई क्रियाकलाप कराये जाते है, जो कि व्यावहारिक एवं बच्चों की रोजमर्रा की जिन्दगी एवं आस–पास के पर्यावरण से सम्बंधित होते हैं। इन सभी गतिविधियों के बेहतर परिणाम प्राप्त हुए जैसे छात्र–छात्राओं के नामांकन में वृद्धि, छात्र–छात्राओं के लेखन व पठन कौशल में सुधार, छात्रों की अभिव्यक्ति क्षमता में बढ़ोतरी, छात्राओं के सहपाठी एवं शिक्षकों के साथ अंतर्संबंधों में प्रभावशाली बदलाव, गृह–कार्य करने की प्रवृत्ति में सुधार, विद्यालय में उपस्थिति प्रतिशत में बढ़ोतरी आदि बदलाव विद्यालय के वातावरण में सीखने को सकारात्मक बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं ।

डॉ. नंदी शर्मा एवं डॉ. आराधना गुप्ता रा०इ०का० संधीपुर हरिद्वार के द्वारा **अल्पसंख्यक समुदाय को बालिकाओं में माध्यमिक शिक्षा का प्रसार** के सम्बंध में प्रस्तुतीकरण किया गया। राजकीय कन्या इण्टर कॉलेज, संधीपुर अल्पसंख्यक समुदाय क्षेत्र में स्थित है जहाँ बालिका शिक्षा की स्थिति अति न्यून थी। बालिकाएं प्राथमिक शिक्षा व मदरसा में प्राप्त शिक्षा के बाद पढ़ना छोड़ देती थी। मार्च 2014 में मुख्यमंत्री घोषणा के द्वारा अल्पसंख्यक बालिकाओं के लिए राजकीय कन्या इण्टर कॉलेज की शुरूआत के समय कक्षा–9 की 5 बालिकाओं से जूनियर हाईस्कूल गढ़ी संधीपुर के प्रांगण में कक्षा संचालन शुरू हुआ। तत्कालीन विद्यालय अनेक समस्याओं से जूझ रहा था। जैसे भवन का अभाव, छात्राओं के लिए फर्नीचर का अभाव, विद्युत व्यवस्था व पंखों का अभाव, न्यून बालिका नामांकन, निम्न अकादमिक उपलब्धि, समुदाय का सहयोग न करना, छात्राओं द्वारा सहपाठ्य गतिविधियों में प्रतिभाग न करना, कम छात्र संख्या के कारण विद्यालय अनुदान या अन्य धनराशि का अति न्यून होना, विद्यालय में अनेकों बार चोरी हो जाना, वाह्य संस्था द्वारा सहयोग न मिलना, अनुशासनहीनता, सरकारी शिक्षा व सम्पत्ति के प्रति सम्मान की भावना न होना, समुदाय का बालिका शिक्षा के प्रति जागरूक न होना, तथा महिला शिक्षकों के प्रति सम्मान की भावना का अभाव व उन्हें कमतर आंकना आदि।

सितम्बर 2016 में विद्यालय में प्रवक्ता पद पर नियुक्ति पूर्ण होने पर समस्याओं के समाधान हेतु प्रधानाचार्य व अन्य शिक्षिका साथियों के साथ हम सब ने टीमवर्क प्रारम्भ किया। विद्यालय भवन हेतु भूमि के लिए ग्राम प्रधान से वार्ता शुरू की। ग्राम प्रधान ने कार्यवाही करते हुए अपने समाज के गणमान्य व्यक्तियों के सहयोग से विद्यालय को तीन बीघा भूमि दान की गयी। परिणामस्वरूप समुदाय में महिला शिक्षकों के प्रति सम्मान की भावना जाग्रत हुई। छात्राओं के बैठने के लिए फर्नीचर हेतु स्थानीय फैक्ट्री द्वारा 50 सेट फर्नीचर विद्यालय को प्राप्त हुआ। विद्युत व्यवस्था, कक्षा–कक्षों हेतु पंखों की व्यवस्था शिक्षिकाओं ने

स्वयं की धनराशि से की। नामांकन वृद्धि हेतु शिक्षिकाओं ने समूह बनाकर घर–घर जाकर सम्पर्क किया। अकादमिक उपलब्धि में वृद्धि हेतु, विज्ञान प्रयोगों हेतु अगस्त्य फाउंडेशन द्वारा 2016 में मोबाइल वैन के माध्यम से विज्ञान प्रयोगशाला विद्यालय तक पहुंचाई गई, अतः अगस्त्य फाउंडेशन की मोबाइल वैन विज्ञान प्रयोगशाला के द्वारा छात्राओं को वैज्ञानिक प्रयोग करवाये गये।

विश्व महिला दिवस 8 मार्च 2019 के अवसर पर ग्राम प्रधान के सहयोग से ग्रामीण महिला सम्मान का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य विकास अधिकारी हरिद्वार को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया। प्रथम बार सार्वजनिक मंच से ग्रामीण महिलाओं को सम्मान मिलने पर विद्यालय के प्रति समुदाय का विश्वास बढ़ा। बालिका शिक्षा का महत्व समझने लगे। ग्रीष्मकालीन अवकाश में इंगलिश स्पीकिंग कोर्स प्रारंभ किया गया।

छात्राओं की अनुशासनहीनता व अनुपस्थिति पर विद्यालय प्रबन्धन समिति की बैठकों में चर्चा का परिणाम यह हुआ कि छात्राओं की अनुपस्थिति में कमी होती गयी। नवीन विद्यालय भवन में प्रवेश से पूर्व ही चोरी की वारदातों को रोकने के लिए सी0सी0टी0वी0 कैमरे व निर्माण संस्था से विद्यालय चाहरदीवारी का निर्माण करवाया गया। आज बालिकाएं कक्षा 12 वीं उत्तीर्ण कर उच्च शिक्षा प्राप्त करने की ओर अग्रसर हैं। इनमें से छात्राएँ आंगनबाड़ी केन्द्र में सुपरवाइजर, कार्यकत्री, सहायिका, स्वास्थ्य विभाग में ए.एन. एम. या नर्स के रूप में कार्यरत हैं।

प्रदीप सिंह बिष्ट, कुसुम भट्ट, राजकीय इण्टर कॉलेज कण्डारा, रुद्रप्रयाग द्वारा **"विद्यालय में नवाचारी कार्यक्रम आयोजन"** के सम्बंध में अपने विचारों को निम्नवत् प्रस्तुत किया गया। शोध परियोजना विद्यालय में किए गये नवाचारी प्रयासों पर आधारित अनुभवों का विवरण प्रस्तुत करती हैः– विद्यालय दिवस की शुरुआत प्रत्येक दिन शानदार प्रार्थना सभा से होती है, जिसमें विभिन्न भाषाओं में प्रार्थना, समूह गान के साथ–साथ लयबद्ध होकर राष्ट्रगान एवं सामान्य ज्ञान, नैतिक वचन, दैनिक समाचार आदि गतिविधियां सम्मिलित रहती हैं, जिसमें विद्यालय के समस्त छात्र–छात्राओं की प्रतिभागिता सुनिश्चित रहती है।

गणित विषय अधिकांश छात्र–छात्राओं को बहुत नीरस एवं कठिन लगता है। विशेषकर बालिकाओं के पास गणित का विकल्प होने के कारण कक्षा 9वीं में गणित विषय में बालिकाओं की संख्या बहुत न्यून होती है। इस हेतु विभिन्न नवाचारों का प्रयोग, टी.एल.एम. का प्रयोग और अतिरिक्त समय देकर विषय को रुचिकर बनाया गया, जिसके साक्ष्य विद्यालय में वीडियो और फोटो में उपलब्ध हैं।

छात्र छात्राओं की रचनात्मक एवं सृजनात्मक क्षमताओं का विकास हो, इसके लिए सबसे बेहतर मंच विद्यालय की पत्रिका होती है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए दीवार पत्रिका तैयार की जाती है जिसमें बच्चों की हस्तलिखित मौलिक रचनाएं होती हैं। इसके अलावा हमारे पारम्परिक रीति–रिवाजों की जानकारी, पारम्परिक खाद्यान्न, पारम्परिक बर्तन और सामान, मातृभाषा के शब्दकोश, शब्दार्थ आदि दीवार पत्रिका की शोभा को बढ़ा रहे हैं। साथ ही ऑडियो और वीडियो के माध्यम से अभिव्यक्ति का भी विकास हो रहा है।

विभिन्न राष्ट्रीय कार्यक्रमों जैसे मतदान आदि हेतु स्वरचित गीत, स्लोगन तैयार कर जन–जागरुकता अभियान चलाया जाता है। ऐसी गतिविधियों में छात्र–छात्राओं के साथ–साथ सामुदायिक सहभागिता भी रहती है। ऐसी सभी फोटो, वीडियो, आडियो, सोशल मीडिया एवं सामुदायिक रेडियो स्टेशन के माध्यम से जन सामान्य तक प्रचारित एवं प्रसारित की गई हैं। ऑनलाइन और आफलाइन समर कैंप में विभिन्न

गतिविधियों द्वारा छात्र–छात्राओं द्वारा अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित किया गया। कला उत्सव, विज्ञान महोत्सव, सीमांत पर्वतीय बाल विज्ञान महोत्सव आदि में छात्र–छात्राओं द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन कर राज्य स्तरीय प्रतियोगिता हेतु अपना स्थान सुनिश्चित किया जा रहा है। जनपद स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त कर राज्य स्तरीय प्रतियोगिता हेतु अपना स्थान सुनिश्चित किया है। अतः कहा जा सकता है कि विद्यालय में शैक्षणिक और शिक्षणेत्तर गतिविधियों से छात्रों का सर्वांगीण विकास हो रहा है।

राम बाबू विमल, पिंकी पंवार, अटल उत्कृष्ट राजकीय इंटर कॉलेज सौड़ा सरोली, देहरादून द्वारा **कैलीग्राफी के माध्यम से हस्त लेखन को प्रभावी बनाने के सम्बंध में** निम्नवत् विचार साझा किए गये। शोध परियोजना विद्यालय द्वारा अपनाई गयी अभिनय लेख–सुधार प्रक्रिया पर आधारित हैं। जिसका विषय, "कैली ग्राफी से हस्त लेखन है"। आज मोबाइल और कंप्यूटर के युग में जब से काम डिजिटल होने लगा तब से सुलेखन की आदतें कम होती जा रही है। काम तो लैपटॉप पर करना है तो हैं राइटिंग सुधारने से क्या फायदा। बच्चों के साथ नित नई–नई चीजों को करना व सीखना–सिखाना अच्छा लगता है। विद्यालय में गत तीन वर्षों से कैलीग्राफी को कक्षा 6 से 9 तक के सभी बच्चों को सिखा रहे हैं। जब पहली बार मेरे पूर्व विकासखण्ड के उप–खंड शिक्षा अधिकारी ने कैलीग्राफी में लिखे निमंत्रण–पत्र को देखा तो उन्होंने प्रेरित किया कि इसको बच्चों को सिखाया जाना चाहिए। तब से ही हमने कैलीग्राफी को लेकर बच्चों के साथ काम करना शुरू कर दिया। इसके उपरान्त अटल उत्कृष्ट रा०इ०कॉ० सौड़ा सरोली में वर्ष 2021 में इसे सिखाना शुरू किया।

बच्चों को इसके लिए तैयार करना एक बड़ी चुनौती थी। सिखाने के लिए जब हमने सबकी कॉपी में एक–एक लैटर लिखा तो कम से कम 25 दिन से ज्यादा एक एल्फाबेट्स को लिखने में लगा। जो लिखने में पहले से कमजोर थे, लेकिन जिनका लेख थोड़ा ठीक था उन्होंने एल्फाबेट्स जल्दी सीख लिए। दूसरे चरण में स्माल एल्फाबेट्स भी इसी तरह से सिखाया। ये सारा कार्य अंग्रेजी वाली कॉपी में करवाया गया और पेन्सिल से लिखवाया गया। जब ऐसा लगा कि अक्षरों की बनावट ठीक हो गयी है तब जेल पेन अथवा फांउटेन पेन की मदद से लिखवाया गया। सबसे पहले एल्फाबेट्स, उसके बाद शब्द और फिर वाक्यों तक बच्चों को लिखवाकर प्रैक्टिस करवायी। विद्यालय में लगभग 60 बच्चों को इसे सिखाया जा रहा है। अभी लगभग 30 बच्चे इसे बिल्कुल सही तरीके से कर पा रहे हैं। इन बच्चों ने पहले अंग्रेजी कॉपी में लिखना सीखा, फिर इनको लेन ए–4 साइज वाले रजिस्टर पर सी.डी. मार्कर आदि से भी लिखवाने का प्रयास किया जिसको बच्चे अब बहुत लिखते हैं। इन्हें कैलीग्राफी में इनके नाम, इनके परिवार के सदस्यों के नाम व सुविचार भी लिखवाकर प्रैक्टिस करायी जाती है।

इतना हो जाने के बाद इसमे हमने एक–नवाचार किया कि रिंगाल मंगवाकर उसकी कलम तैयार करवायी और 30–40 काली व नीली स्याही मंगाकर विद्यालय में रखी, जब भी कोई वादन खाली होता रिंगाल की कलम से भी लिखवाते हैं। मैंने ये देखा है कि अगर बच्चों के साथ मेहनत की जाए तो कोई काम ऐसा नहीं है जो नहीं हो सकता। इसी क्रम में वर्ष 2024 में डायट देहरादून में डी.एल.एड. प्रशिक्षणार्थियों को हिन्दी व अंग्रेजी कैलीग्राफी सिखायी। जून 2024 से राजीव गाँधी नवोदय विद्यालय ने दस दिवसीय समर कैम्प आयोजित किया गया जिसमें हमने इन दस दिनो तक वहाँ बच्चों को कैलीग्राफी के बारे में बताया और सिखाया।

हमारा अनुभव यह रहा है कि इसको करने से बच्चों के अन्दर एक आत्मविश्वास पैदा होता है। बच्चा एक नई कला को सीखता है। इसके द्वारा उसका एक अलग ही प्रभाव पड़ता है। उसका लेख भी बहुत सुन्दर और प्रभावशाली हो जाता है। सकारात्मकता आती है। हमको इसको करवाने

और इसके लिए अतिरिक्त समय देने के लिए विद्यालय के पूर्व एवं वर्तमान प्रधानाचार्य ने पूर्ण सहयोग और समर्थन किया और समय–समय पर प्रेरित भी करते हैं। इससे हमारे विद्यालय के कक्षा 8 से 9 तक के बच्चे भी अब इससे लाभान्वित हो रहे हैं।

सुमन बिष्ट, राजकीय प्राथमिक विद्यालय इजरुवा मानारी, अल्मोडा द्वारा **नवाचारी गतिविधियों के प्रयोग द्वारा शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के सम्बंध में** प्रस्तुतीकरण किया गया। कक्षा–कक्ष में नवाचारी गतिविधियों के प्रयोग का मुख्य उद्देश्य छात्र–छात्राओं को निपुण भारत मिशन के लक्ष्यों की प्राप्ति की ओर ले जाना, उनमें समझ के साथ पढ़ने और लिखने का कौशल विकसित करना, एक प्रभावी सम्प्रेषक बनाना और संख्यात्मक ज्ञान (गणित) से सम्बंधित विभिन्न अवधारणाओं की समझ और कौशल विकसित करना है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु हमने बच्चों के साथ भाषा के विभिन्न घटकों जैसे–मौखिक भाषा का विकास, ध्वनि जागरूकता, समझ के साथ पठन, धारा प्रवाह पठन, स्वतंत्र लेखन आदि तथा संख्या ज्ञान (गणित) के विभिन्न घटकों जैसे–संख्या पूर्व अवधारणा, गिनती की अवधारणा, अंकों की समझ आदि पर कार्य करना प्रारम्भ किया। इसके लिए हम दोनों शिक्षिकाओं ने कक्षा–कक्ष में कुछ नवाचारी गतिविधियों के माध्यम से भाषा व गणित को आसान व रोचक तरीके से सीखने का प्रयास किया।

भाषा शिक्षण की प्रक्रिया को प्रभावी बनाने हेतु सर्वप्रथम हमारे द्वारा विद्यालय के विद्यार्थियों को दो समूहों–कक्षा एक व दूसरी का एक समूह व कक्षा 3, 4 और 5 का एक समूह बनाया गया। भाषाई दक्षता हेतु दोनों ही समूहों के लिए शिक्षण में नवाचारी गतिविधियों को सम्मिलित किया गया। जिसके अंतर्गत तुकबंदी, कविता, कहानी, गीत और अभिनय के माध्यम से सिखाने का प्रयास किया गया क्योंकि बच्चे तुकबंदी और कविता के माध्यम से जल्दी सीखते हैं। इसके पश्चात दूसरी गतिविधि ध्वनि जागरूकता के अन्तर्गत ध्वनियों को पहचानने का कौशल विकसित होता है। यथा जानवरों की आवाजें निकालना, चुटकी बजाना, ढोलक बजाना, मेज बजाना, ताली बजाना आदि से परिचय कराया गया। विभिन्न वर्णो की ध्वनि निकाल कर उनकी पहचान करवाई जाती है। एक ही प्रकार की ध्वनि वाले शब्दों का बार–बार उच्चारण कराया जाता है।

विद्यालय में प्रतिमाह होने वाली विद्यालय प्रबंधन समिति की बैठक में छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धियों को जिससे बच्चे आसानी से वर्णों की और वर्णों की ध्वनि की पहचान कर पाते हैं। स्कैप फोल्डिंग के अन्तर्गत I do, We do, You do के माध्यम से वर्णों और ध्वनियों की पहचान कराई गई।

पढ़ने की गतिविधि के अंतर्गत कक्षा–1 व 2 के बच्चों से चित्र दिखाकर बातचीत करना, स्वर, व्यंजन व अमात्रिक शब्दों के फ्लैश कार्ड व चित्रों के माध्यम से इसी तरह रंगीन चित्रों को देखकर उनके बारे में बताते हैं। विभिन्न प्रकार की गतिविधियां जैसे वर्ण ढूंढना, वर्ण मिलाना, लोगो, ग्राफिक पठन, दिए गए शब्दों में किसी एक अक्षर को ढूंढना, कहानी सुना कर कहानी पर बातचीत आदि। इसी प्रकार कक्षा 3, 4 और 5 के बच्चों से दिए गए शब्दों से कहानी निर्माण, अधूरी कहानी पूरी करना, चित्र देखकर कहानी बनाना, विभिन्न प्रकार के खेल और अभिनय आदि गतिविधियाँ की जाती हैं। साथ ही भाषाई कौशल के विकास हेतु प्रार्थना सभा में कहानी, कविता, सामान्य ज्ञान, समाचार आदि को सम्मिलित किया जाता है। कक्षा शिक्षण में बच्चों की सीखने की प्रक्रिया को रोचक और प्रभावी बनाने के लिए एल०टी०एम० का प्रयोग किया जा रहा है।

गणित शिक्षण को प्रभावी बनाने हेतु अपनाई गई प्रक्रिया के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की कविताओं और खेल के माध्यम से–अंकों और गिनती को सिखाया जा रहा है। विभिन्न प्रकार के

खिलौनों, सम्पर्क किट के माध्यम से भी बच्चों को संख्या ज्ञान कराया जा रहा है। बच्चों को गिनती, जोड़, घटाना, गुणा, भाग गणित की अन्य अवधारणाओं को समझाया जा रहा है। माचिस की तीलियों, कंकड़ों, वस्तुओं को गिनकर, विभिन्न प्रकार के मॉडल, चार्ट व गणित किट के प्रयोग से बच्चे आसानी से स्वयं करके गणित की विभिन्न अवधारणाओं को समझ पा रहे हैं। हमारे द्वारा गणित की विभिन्न अवधारणाओं जैसे संख्या पूर्व अवधारणा, अंको की समझ, गिनती की समझ, जोड़, घटाव की समझ आदि को विभिन्न प्रकार के चार्टस, कविताओं व एल०टी०एम० के माध्यम से समझाया जा रहा है। अबेकस के प्रयोग से भी बच्चे खेल–खेल में जोड़ और घटाना, छोटा–बड़ा, कम–ज्यादा, हल्का–भारी, दूर–पास, आरोह–अवरोही संख्याएं तथा गणित के अन्य सवालों को आसानी से सीख व समझ रहे हैं।

विद्यालय में प्रतिमाह होने वाली विद्यालय प्रबंधन समिति की बैठक में छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धियों को अभिभावकों के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता है। विभिन्न नवाचारी पहल के परिणामस्वरूप छात्र–छात्राओं के पठन व लेखन कौशल में वृद्धि हुई है। कक्षा 2 के बच्चे भी अपनी पाठ्य पुस्तक व पुस्तकालय की पुस्तकें पढ़ना व उनसे सम्बंधित बातचीत कर पा रहे हैं। गणित में भी कक्षा 2 के बच्चे 5 अंकीय संख्या को पढ़ व लिख पा रहे हैं। तीन अंक के हासिल वाले जोड़ व घटाना कर पा रहे हैं। एक अंक के गुणा व भाग भी कर पा रहे हैं। बच्चों की अभिव्यक्ति क्षमता, प्रश्न पूछने व प्रश्नों के उत्तर ढूंढने का कौशल विकसित हुआ है। स्वयं करके सीखने से बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ा है। एल०टी०एम० का निर्माण करने के कारण बच्चों में समूह में काम करने की भावना व सहयोग की भावना का विकास हो रहा है। बच्चों में चिंतन, स्मरण और तर्क शक्ति का विकास हो रहा है। इन विधियों के प्रयोग के बाद 16 में से 13 बच्चों ने भाषा व गणित में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त कर लिया है और तीन बच्चे इन लक्ष्यों को प्राप्त करने की ओर अग्रसर हैं।

डॉ. सुनीता भट्ट, राजीव गाँधी नवोदय विद्यालय देहरादून **विषय आधारित फीडबैक बॉक्स** के सम्बंध में निम्न चर्चा की गई है। विभिन्न अध्यापक प्रशिक्षण, शोध, सर्वेक्षण, पाठ्यक्रम आदि के दौरान अनुभव हुआ कि छात्रों के शैक्षिक उन्नयन एवं सम्पूर्ण विकास के लिए कई कार्यक्रम आयोजित एवं सम्पादित किये जाते हैं, किन्तु सारे कार्यक्रम एवं गतिविधियों का प्रभाव बच्चों तक नहीं पहुँच पाता। राजीव गाँधी नवोदय विद्यालय, देहरादून में वर्ष 2021 में प्राचार्य पद पर नियुक्ति के पश्चात विद्यालय ने इसी चुनौती पर कार्य करने का निर्णय लिया और पाया कि प्रत्येक बच्चे की सीखने की गति, तरीका एवं समय अलग–अलग होता है। कक्षा शिक्षण में समय की बाध्यता एवं औपचारिक मूल्याकंन के पश्चात भी प्रत्येक छात्र–छात्रा की टॉपिक की शंकाओं का समाधान या तो हो नहीं पाता है अथवा देर से होता है, जिससे धीरे–धीरे वह बच्चा अन्य साथियों की तुलना में पीछे रह जाता है। इस चुनौती के समाधान के लिए प्रथम चरण में कक्षा 6 से कक्षा 8 तक के छात्र–छात्राओं के लिए किसी नियत दिन, नियत कक्षा के विषय विशेष पर अनिवार्यतः सभी बच्चों के द्वारा निर्भय एवं निःसंकोच रुप से अपनी शंकाओं, आशंकाओं को लिख कर बॉक्स में डाले जाने हेतु कहा गया। जिसे कक्षा से बाहर सम्बन्धित विषयाध्यापक शिक्षक के सम्मुख खोलकर प्रत्येक बच्चे की शंकाओं का व्यक्तिगत समाधान एवं निर्धारित समय पश्चात समीक्षा किया जाना प्रारम्भ किया गया। छात्रों की अध्ययन के प्रति व्यक्तिगत समस्याओं का निराकरण तत्समय करने से उनकी विषय के प्रतिरुचि उत्पन्न हुई, इसके साथ ही बच्चों की क्षमता एवं रुचि के अनुरुप विभिन्न गतिविधियां करने के सुझाव दिये गये जिसका प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रुप से प्रभाव बच्चों के व्यवहार में दृष्टिगत हो रहा है एवं पढाई के साथ–साथ शिक्षक–छात्र के बीच सम्बन्धों में भी सुधार आ रहा है।

बच्चों के द्वारा दिये गये सुझाव के अनुसार विद्यालय में अंग्रेजी व हिन्दी की भाषायी त्रुटियों के

समाधान, गणितीय आधारभूत संकल्पनाओं का स्पष्टीकरण, के लिए माह अप्रैल, मई तथा अर्द्धवार्षिक व वार्षिक आंकलन के पश्चात पूर्व कक्षा की विषयगत समस्याओं के समाधान हेतु कक्षा शिक्षण किया जाता है। भाषा में सुधार तथा व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम के reading, writing skill, increase in vocabulary अभिव्यक्ति कौशल भाषायी दक्षता अभिवृद्धि हेतु प्रथम चरण में प्रत्येक शिक्षक द्वारा प्रतिदिन कक्षा 6, 7 एवं 8 के न्यूनतम तीन छात्र–छात्राओं को अपनी क्षमतानुसार किसी भी टॉपिक पर एक अथवा आधा पृष्ठ लिखकर बिना पढ़े बोलने का अभ्यास कर प्रार्थना सभा में वाचन किया जाता है।

छात्र–छात्राओं की Reading Habit को बढ़ाने के लिए विद्यालय में एक लाइब्रेरी को समृद्ध किया गया है। जिसमें विभिन्न लेखकों की पुस्तकें, प्रतियोगी परीक्षाओं की पुस्तकें तथा प्रतिदिन तीन समाचार पत्र (एक अंग्रेजी तथा दो हिन्दी) लाइब्रेरी में उपलब्ध कराये जाते हैं तथा प्रत्येक बच्चे को गृह कार्य के साथ लाइब्रेरी में नियत समय पर पढ़ना आवश्यक है। डिजिटल लैब में आई.सी.टी. के प्रयोग पर बल दिया जा रहा है। प्रोजैक्ट तैयार करना एवं प्रस्तुतीकरण किया जाता है।

बाल चौपाल–आवासीय विद्यालय जूनियर छात्र– छात्राओं की विभिन्न प्रकार की समस्याओं के निदान एवं मनोबल में बढाने हेतु रात्रि में भोजन के पश्चात बाल–चौपाल का आयोजन किया जाता है, ताकि छात्र–छात्रायें निःसंकोच होकर अपनी बात कह सकें। वह अपने को सहज व सुरक्षित महसूस कर सकें। बच्चे अपनी शैक्षिक, भावनात्मक, साथियों की समस्याओं को साझा करते हैं और छात्रावास में रहने के मानसिक दबाब से दूर रहते हैं।

सुनील जोशी, प्रदीप सती राजकीय इंटर कॉलेज गुनियाल गाँव, देहरादून **छात्र विकास कार्यक्रम–एक समग्र प्रयास** में अपना प्रस्तुतीकरण किया गया। आज भारत में डिजिटलीकरण जीवन के लगभग हर पहलू में व्याप्त है। सरकारी स्कूल, जो विशेष रूप से आर्थिक रूप से कमजोर पृष्ठभूमि के लोगों को सेवा प्रदान करते हैं, शिक्षा की इस नई तकनीकी को अपनाने में पिछड़ रहे हैं। शैक्षणिक दृष्टिकोण में यह असमानता न केवल सरकारी स्कूलों में छात्रों के सीखने और विकास में बाधा डालती है, बल्कि शैक्षणिक प्रदर्शन और अवसरों में भी गहरी खाई पैदा करती है। इस तात्कालिक आवश्यकता को पहचानते हुए सामुदायिक सहयोग से बाल विकास–एक समग्र प्रयास कार्यक्रम का जन्म हुआ। इसका उद्देश्य छात्रों के लिए यह सुनिश्चित करना है कि वे न केवल स्कूली पढ़ाई पूरी करें, बल्कि अपनी शैक्षिक यात्रा को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए आवश्यक जीवन कौशल और संसाधनों से भी सुसज्जित हो सकें।

जनवरी 2022 में विद्यालय में प्रधानाचार्य का कार्यभार ग्रहण किया तो पाया कि इंटरमीडिएट स्तर पर विज्ञान प्रयोगशाला नहीं थी, कम्प्यूटर शिक्षा हेतु प्रावधान नहीं था, पर्याप्त कक्षा–कक्ष, कार्यालय, शौचालय आदि की भारी कमी थी। मैंने इसकी चर्चा शिक्षको के साथ व विद्यालय के पी०टी०ए० अध्यक्ष, पूर्व प्रधान, क्षेत्र की बी०डी०सी० सदस्य, एक अनुभवी आई.टी. और प्रबंधन सलाहकार महिला निवासी आदि से की। सभी के द्वारा अध्ययनरत छात्रों के विकास हेतु कार्ययोजना तैयार करने का निर्णय लिया गया। इस कार्यक्रम के प्रमुख लक्ष्य इस प्रकार हैं। कक्षा 6वीं से 12वीं तक डिजिटल शिक्षण विधियों को लागू करना, छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन को बढ़ाना, स्वास्थ्य और पोषण को बढ़ावा देना, कैरियर मार्ग दर्शन और उच्च शिक्षण संस्थानों में प्रवेश की पेशकश तथा कमजोर पारिवारिक पृष्ठभूमि के छात्र–छात्राओं को उच्च शिक्षण संस्थानों में प्रवेश हेतु वित्तीय सहायता। उपर्युक्त मिशन को लागू करने के लिए, हमारे विद्यालय में अनेक गतिविधियाँ संचालित हो रही हैं।

डिजिटल शिक्षण की सुविधा के लिए हमारे विद्यालय में एक उन्नत ऑनलाइन सॉफ्टवेयर प्रोग्राम का उपयोग किया जा रहा है, जिसमें कक्षा 6वीं से कक्षा 12वीं तक के सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को शामिल किया गया है। यह सॉफ्टवेयर शिक्षकों को जटिल अवधारणाओं को दृश्य रूप से प्रस्तुत करने में सक्षम बनाता है। यह डिजिटल शिक्षण समाधान छात्रों को स्व–निर्देशित सीखने हेतु सशक्त बनाता है।

शैक्षणिक सफलता के लिए उचित पोषण के महत्व को पहचानते हुए कक्षा 9–12वीं तक के छात्रों को नियमित मध्याह्न भोजन प्रदान किया जाता है जिससे छात्रों के स्वास्थ्य और पढ़ने की क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। नजदीक में रह रहे सीनियर सिटीजन स्वयंसेवी डॉक्टरों की मदद से विद्यालय में नियमित स्वास्थ्य जांच की सुविधा और चिकित्सा परामर्श प्रदान करके हम अपने छात्रों के स्वास्थ्य और कल्याण को प्राथमिकता देते हैं। विद्यालय ने वित्तीय संकट ग्रस्त छात्र–छात्राओं की पहचान कर उनको मासिक वित्तीय सहायता प्रदान करने का भी निर्णय लिया जो अन्य कार्यक्रमों की तरह सीनियर सिटीजन्स के द्वारा प्रायोजित किया जा रहा है। इस तरह से हम बाल–श्रम में प्रवेश करने के जोखिम वाले छात्रों, विशेष रूप से वे जो अनाथ हैं या एकल माता–पिता परिवारों से आते हैं, को वित्तीय सहायता प्रदान कर रहे हैं।

छात्रों को भविष्य के लिए तैयार करने के लिए कैरियर परामर्श प्रदान करते हैं जो उनकी व्यक्तिगत रुचियों और शक्तियों के अनुरूप होता है। यह प्रक्रिया प्रत्येक कक्षा 12 के छात्र की योग्यता, प्रदर्शन और क्षमता के गहन मूल्यांकन के साथ प्रारम्भ होती है। हमारा कार्यक्रम विभिन्न उच्च शिक्षा संस्थानों से जुड़ता है, जिसमें पॉलीटेक्निक, कौशल–आधारित शिक्षण केंद्र और विश्वविद्यालय तथा आर्थिक रूप से वंचित बच्चों की शिक्षा में सहयोग करने के लिए समर्पित गैर सरकारी संगठन शामिल हैं। इस व्यापक दृष्टिकोण के माध्यम से, हम छात्रों को न केवल अपने भविष्य की कल्पना करने के लिए बल्कि अपने शैक्षणिक और कैरियर लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में कार्यवाही योग्य कदम उठाने के लिए भी सशक्त बनाने का प्रयास करते हैं।

इस कार्यक्रम के द्वारा अब तक हासिल किए गए अनेक महत्वपूर्ण मील के पत्थर साझा करने पर हमें गर्व है। अभी तक डिजिटल शिक्षण हेतु 12 डेस्कटॉप कंप्यूटर, 1 स्मार्ट टीवी, कुर्सियाँ एवं मेज सहित पूर्णतः सुसज्जित कंप्यूटर लैब की स्थापना (एक मुश्त खर्चः 2.50 लाख, आवर्ती व्यय 1 से 1. 50 लाख प्रति वर्ष) हो चुकी है। प्लेसमेंट के तहत सीआईएमएस, देहरादून में कंप्यूटर एप्लीकेशन पाठ्यक्रम और माइक्रोबायोलॉजी पाठ्यक्रम में 2 छात्र, ऑफिस मैनेजमेंट कोर्स में बी.एस नेगी महिला पॉलीटेक्निक में 3 छात्राएँ, 1 छात्र अग्निवीर कार्यक्रम के अंतिम प्रवेश की तैयारी कर रहा है (बजट रूपये 3.00 लाख 3 वर्षो के लिए) मई 2024 से वित्तीय सहायता के रूप में 16 छात्रों को मासिक भुगतान मिलना शुरू हो गया है (रुपये 600.00 से रुपये 2000.00, मासिक खर्च रुपये 20000.00 प्रति माह)। पौष्टिक भोजन के लिए कक्षा 9 से 12 वीं तक लगभग 150 विद्यार्थियों को मध्याह्न भोजन दिया जा रहा है (मासिक खर्च रुपये 20 से 25 हजार प्रति माह)। स्कूल में वार्षिक स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया गया है। अभी तक 8 बच्चों को इलाज के लिए सरकारी अस्पताल भी रेफर किया गया है।

संक्षेप में, प्राथमिक विद्यालयों के साथ एक निर्बाध शैक्षिक श्रृंखला बनाना और सामुदायिक सहयोग को बढ़ावा देना हमारे कार्यक्रम के स्थायित्व और स्थिरता सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण कदम हैं। इन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करके, हम एक मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र बना सकते हैं जो छात्रों को न केवल उनके शैक्षणिक प्रयासों में बल्कि उनके समग्र विकास और कल्याण में भी सहायता करेगा तथा साथ मिलकर, हम अगली पीढ़ी को चुनौतियों से उबरने और अपने सपनों को हासिल करने के लिए सशक्त बना सकते हैं।

सावित्री जोशी, राजकीय प्राथमिक विद्यालय नागथात, देहरादून **भाषायी शिक्षण के लिए किये जा रहे शिक्षकों के सामूहिक शैक्षणिक प्रयास** के बारे में बताया गया। इस संदर्भ बिंदु पर चर्चा करके हम शिक्षकों के सामूहिक रूप से कार्य करने से बच्चों के सीखने–सिखाने के परिणाम से परिचित होंगे, इससे ज्ञात होगा कि जब विद्यालय का वातावरण समरसता का होगा, शिक्षक–शिक्षक, शिक्षक–शिक्षार्थी सामूहिक रूप से सीखने की प्रक्रिया में शामिल होते हैं, कठिनाई स्तर सुधरता चला जाता है। बच्चों की अधिगम क्षतिपूर्ति हेतु विद्यालय में एक ऐसी कार्ययोजना बनाई गई जिसके द्वारा शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों ही सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में सहजता से शामिल हो सकें। इसके लिए आपसी विचार–विमर्श से सबसे पहले विद्यालय आने से छुट्टी तक के समय का विभाजन, एवं कार्य नीति का निर्धारण किया गया जिसमें माता–पिता से संपर्क कर उन्हें सहयोग के लिए बोला गया। बच्चों को उनके स्तर के अनुसार समूह में बांटकर शिक्षण कार्य, सीखने के अलग–अलग स्तर, वर्ण पहचान, शब्द एवं वाक्य पर स्थित बच्चों के अलग–अलग समूह बनाकर कार्य किया गया। इसमें माता–पिता का सहयोग जरूरी है, उनको बताया गया। सीखने की प्रक्रिया प्रार्थना सभा से छोटी–छोटी कविता–कहानी, सामान्य ज्ञान की बातें, आस–पास की बातें और बच्चों से पूछना, बुलवाना से शुरूआत, जिससे बच्चों में मौखिक अभिव्यक्ति का विकास हुआ।

कक्षा शिक्षण में विद्यासेतु द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार शिक्षण, जिसमें निर्धारित पाठ–योजना को एक क्रम से सिखाना, जिससे बच्चों को पढ़ने–लिखने में रूचि उत्पन्न हुई, साथ ही अन्य छोटी–छोटी कहानी–कविता भाषा सिखाने से संबंधित पुस्तकों का उपयोग, जो पुस्तकालय व रीडिंग कॉर्नर में उपलब्ध हैं, उनको शिक्षक द्वारा पढ़ना व बच्चों को शामिल कर उन्हें प्रेरित करना, जिससे उनमें पढ़ने की आदत का विकास हो रहा है। भाषायी कौशल विकास हेतु–पढ़ने एवं लिखने के लिए दो–तीन या चार पंक्तियों की कविता बोलना, लिखना एवं अध्यापक द्वारा बताया जाना, तुकांत शब्दों, पंक्तियों, वाक्यों का प्रयोग, जिससे बच्चों में स्वयं से कविता, तुकांत शब्दों द्वारा लेखन–पठन के कौशल विकसित हो रहे हैं। एल.टी.एम. एवं प्रायोगिक कार्य शिक्षक–छात्रों द्वारा मिलकर बनाया, जिससे बच्चा स्वयं करके, सीख रहा है। बच्चों के बनाये गए एल.टी.एम. एवं कार्यो का प्रदर्शन बच्चों द्वारा स्वयं बड़े समूह जैसे अभिभावको के समक्ष उसका प्रदर्शन, बोलना समझाना, जिससे बच्चों में आत्मविश्वास तथा आत्म–सम्मान की भावना विकसित हुई। आई0 सी0 टी0 के माध्यम से बच्चों को जिस भी कौशल से सम्बन्धित कार्य कराया जाना है, उसको प्रोजेक्टर व टैबलैट के माध्यम से पहले दिखाना, बच्चों से करवाना, और अंत में उनकी छोटी–छोटी वीडियो बच्चों को दिखाना, स्वयं को जब बच्चे कार्य करते हुये देखते हैं तो अति उत्साहित रहते हैं, उनमें सीखने की रूचि बढ़ती जाती है, स्वयं को सुधारने की भावना विकसित होती है। इस प्रकार भाषा के प्रमुख कौशल सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना कक्षा–शिक्षण के दौरान साथ–साथ चलता रहता है।

वर्तमान समय में कक्षा 3, 4 व 5 के बच्चों में से 10 बच्चे अपनी कक्षा स्तर का अच्छे से समझ पा रहे हैं, और कक्षा स्तर से थोड़ा आगे चल रहे हैं। 18 बच्चे अपनी कक्षा अनुरूप कार्य कर रहे हैं, शेष 12 बच्चे कक्षा स्तर तक पहुंचने के लिए प्रयासरत हैं, जिनको नवाचार, अतिरिक्त समय एवं उपचारात्मक शिक्षण द्वारा सिखाने का प्रयास किया जा रहा है। शिक्षक–विद्यार्थियों का आपसी तालमेल, अभिभावकों के साथ सामंजस्य जो शिक्षकों को बच्चों तक पहुचने में, उनकी कठिनाई का स्तर जानने में सफल रहा, उपचारात्मक शिक्षण में सहायक सिद्ध हुआ। कक्षा–शिक्षण, जिसके कारण सहजता से विषयवार बच्चों के सीखने के कौशल प्राप्त किये गए। इस प्रकार बच्चों के सीखने में तारतम्य एवं सहजता की स्वाभाविक प्रवृत्ति का विकास हो रहा है।

रेखा बोहरा, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, मौनपोखरी, चम्पावत **भाषा शिक्षण में नवाचारी अनुप्रयोग** के सम्बंध में बताया गया। बच्चों को समझ के साथ पढने तथा लिखने में सक्षम बनाना, प्रश्न पूछने व बनाने के लिए प्रेरित करना, छात्रों को अभिव्यक्ति के मौके देना, रचनात्मकता को बढ़ाना, समूह में कार्य करना, कल्पना शक्ति का विकास आदि कौशलों के साथ काम करने की प्रक्रिया में किसी स्कूल के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों को काफी चुनौतियो का सामना करना पडता है। हमारे सामने भी इसी प्रकार की चुनौती थी कि बच्चे का कक्षा–1 में सीधे प्रवेश होना, उनको विद्यालय के माहौल में ढालना, पेंसिल पकड़ना सिखाना साथ ही कक्षा अनुसार सीखने के प्रतिफल को निश्चित समयावधि में पूर्ण करना। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए सर्वप्रथम हमने प्रत्येक कक्षा के बच्चों का लर्निंग लेवल जांच कर उनके अलग–अलग समूह बना लिए और फिर योजनानुसार उनके साथ काम किया।

अपने विद्यालय में हमने बच्चों में भाषा की समझ के साथ, धारा प्रवाह पठन की ओर ध्यान दिया। हम दो अध्यापकों का निरंतर ये प्रयास है कि प्रत्येक कक्षा का बच्चा अपने स्तर के लर्निंग आउट कम को प्राप्त कर पाए, इसके लिए हमने कक्षा में कुछ नवाचारी प्रयासों से बच्चों के बीच काम किया। प्रार्थना सभा में बच्चों को स्वरचित कहानी, कविता, समाचार बोलने के मौके देना व साथ ही प्रतिदिन अपनी पूरी दिनचर्या को भी लिखने को कहा। जिससे छात्रों में आत्म विश्वास, अभिव्यक्ति एवं उनके लेखन कौशल में सुधार हो सके। कक्षा 1, 2 के बच्चों को प्रतिदिन भाषा के सातों आयामो में कार्य करवाया गया, तुकबंदी के शब्दों से नए–नए शब्द बनाना, छोटे–छोटे वाक्यों (डिडीकोडेबल टैक्स्ट) द्वारा कहानी के फ्लैस कार्ड को पढ़ने का अभ्यास कराया जिसको प्रत्येक बच्चा पढ़ सके। कक्षा–कक्ष में शब्दों के चार्ट टंगे है जिन पर बच्चों की नजर पड़ती रहे। कक्षा 3, 4 व 5वीं से बच्चे कहानी, कविता स्वयं बनाने का प्रयास कर रहे हैं इसे एक पत्रिका का रूप दिया गया है। विद्यालय को एक प्रिंट–रिच वातावरण के रूप में तैयार किया है जिसे छात्र देख समझ कर सीखने का प्रयास करते हैं। कक्षा–कक्ष में स्मार्ट टीवी द्वारा भी पाठ के संबोध, कहानी, कविता नए–नए शब्द, अभ्यास प्रश्नों को सभी छात्र रोचक तरीके से करते है। बच्चों से पाठ्य पुस्तक के पाठ में नाटक, रोल प्ले आदि को भी करवाया गया जिससे वे पाठ में आये प्रत्येक संबोध को आसानी से समझ पाए व आपसी चर्चा परिचर्चा में भाग ले सकें। बच्चों को प्रश्न बनाने व पूछने के भी मौके प्रदान किये गए। भाषा सीखने में पुस्तकालय का भी अहम रोल है। विद्यालय में पूरे सप्ताह की समय सारणी बनी हैं। प्रतिदिन भोजन के बाद 30 मिनट लाइब्रेरी को भी दिया गया है। लाईब्रेरी में 800 के लगभग पुस्तकें है। बच्चों की बाल प्रबन्धन पुस्तकालय कमेटी बनी है, जिसे वो स्वयं संचालित करते है। बच्चों द्वारा अपनी मन पसंद पुस्तके पढ़ना, कहानी सुनाना, उसमे प्रश्न पूछना, पियर लर्निंग ग्रुप बनाकर कार्य करना, कहानी के चित्रों को बनाना। इसमे बच्चों के धारा प्रवाह पठन में भी काफी सुधार देखने को मिला है। विद्यालय में प्रतिभा दिवस, बालसभा, खेलकूद, बालमेला अन्य गतिविधियो से भी छात्रों को भाषा सीखने में मदद मिली है। अभिभावकों को भी शामिल कर छात्रों की उपलब्धियों को साझा किया जाता है।

बच्चों को स्वयं करने के मौके देकर उनमें सीखने के प्रति रूचि तो उत्पन्न हुई ही है साथ ही वह आसानी से संबोधों को सीख पाये हैं व समझ के साथ धारा प्रवाह पढ़ने के कौशल का विकास हुआ है। बच्चों में झिझक, डर दूर हुआ है और आत्म विश्वास बढ़ा है। तर्क व प्रश्नों को पूछने के कौशल का विकास उनमे देखा गया है। प्रत्येक बच्चे में सभी प्रतिभायें नहीं होती पर हर बच्चे में कुछ ना कुछ प्रतिभा अवश्य होती है जिसे वे समूह में कार्य करके सीखते हैं। अभिभावकों से निरंतर संवाद कर बच्चों की उपस्थिति नियमित करने की कोशिश की गयी है, जिससे छात्रों के लर्निंग लेबल में सुधार देखने को मिला है। उनमें विद्यालय आने के प्रति भी रुचि देखी गयी है। आज हम कह

सकते है कि हमारे 75 से 80 प्रतिशत बच्चे समझ के साथ धारा प्रवाह पठन कर पा रहे है। इस प्रकार अपने अभिनव प्रयोगों द्वारा बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में हमारा निरंतर प्रयास जारी है।

रुचि पुंडीर, राजकीय प्राथमिक विद्यालय पौधा, देहरादून **घुमंतु परिवार के छात्रों की शिक्षा** के सम्बंध में बताया गया। 12 सितंबर 2022 को राजकीय प्राथमिक विद्यालय पौधा, ब्लाक – सहसपुर, देहरादून, में पांच गुर्जर छात्रों का नामांकन मुक्ति आंदोलन के अंतर्गत पुलिस विभाग द्वारा कराया गया। विगत कुछ वर्षों से कुछ गुर्जर परिवार पौधा ग्राम के पास जंगलों में रह रहे हैं। विद्यालय से इनका दूर–दूर का परिचय ना था। अपनी संस्कृति, वेशभूषा, बोली, के साथ आए छात्र विद्यालय के वातावरण से अनभिज्ञ थे। जंगल से लगे गांव की सड़कों पर चलने में असहज थे। गाँव उनके लिए एक बड़े शहर से कम ना था।

नामांकन के बाद विद्यालय में इन छात्रों का पहला दिन–पुराने छात्र उन्हें देखकर उनसे दोस्ती के लिए, बात करने के लिए उत्सुक थे, किंतु नए छात्र कुछ सहमे से थे कि कहाँ बैठना है, क्या करना है, कुछ मालूम नहीं, सब कुछ नया। सभी अध्यापकों के द्वारा बातचीत का दौर प्रारंभ हुआ। अभिभावक उन्हें अध्यापकों को सौंप कर कुछ देर खड़े होकर देखते रहे, अध्यापिका द्वारा उन्हें प्रार्थना सभा की पंक्ति में खड़ा कराया गया और समझाया गया कि जैसे अन्य छात्र कर रहे हैं वह भी प्रयास करें। विद्यालय के क्रियाकलाप एवं वातावरण उनके लिए नया था। पुस्तक, कॉपी, पेंसिल से अनभिज्ञ, प्रधानाध्यापिका की मेज के पास खड़े हो गए, तब एक सहायक अध्यापिका उन्हें हाथ पकड़ कर अपने साथ ले गई और उनको गतिविधि कराने लगी, चॉक देकर रनिंग बोर्ड पर उनसे कुछ आड़ी तिरछी लाइन बनवाने का प्रयास किया। इच्छा तो नहीं थी उनकी पर कोशिश करने लगे। उनको तो बस घर जाना था। उन सभी का नामांकन कक्षा एक में हुआ था। सभी छात्रों से उनका परिचय कराया गया। कक्षा में बैठाने पर वे बार–बार बाहर आ रहे थे कि हमको घर जाना है। आपस में थोड़ी–सी बातचीत की, फिर उन्हें टीवी के माध्यम से कविता पाठ कराया गया तो उनकी थोड़ी रुचि बढ़ी। सभी को पेंसिल से कॉपी पर लिखते हुए देखा तो उन्हें भी लिखने का मन हुआ। हमने कुछ कॉपी और पेंसिल उपलब्ध कराई और उन्हे कक्षा शिक्षण में शामिल किया।

मध्यांतर में वह खाना नहीं खाना चाहते थे, कि हम सिर्फ रोटी ही खाते हैं। यह भी एक चुनौती थी जो कि धीरे–धीरे दूर की गयी। अब वे अन्य बच्चों के साथ मध्यांतर में बैठकर खाना खाने लगे हैं। परिवर्तन का दौर शुरू हुआ। निपुण अभ्यास पुस्तकें बच्चों के लिए बहुत सहायक साबित हुई। कक्षा एक की अध्यापिका के द्वारा उन पर विशेष ध्यान दिया गया। आज उनमें पढ़ने–लिखने के साथ–साथ व्यवहार परिवर्तन भी हो रहा हैं। झिझक, भय खत्म कर स्वयं अकेले आना जाना प्रारंभ हुआ। सामान क्रय कर वे घर ले जाने लगे। विद्यालय में हो रही अन्य गतिविधियों में भी वे प्रतिभाग करने लगे हैं। अब विद्यालय में उनकी उपस्थित शत–प्रतिशत रहती है। खुशी की अनुभूति तो तब मिली जब इन बच्चों की माता जी के द्वारा मेरे (प्रधानाध्यापिका) हथेली में 40 रूपये रखकर कहा गया कि यह आपका ईनाम है। आपने हमारे बच्चे लायक बना दिये। उन्हें पढ़ना–लिखना, बातचीत करना आना–जाना सिखा दिया।

गुर्जर समुदाय जंगलवासी घुमंतू प्रवृत्ति के लोग होते हैं किंतु आज सत्र 2024–25 में विद्यालय में 20 छात्र गुर्जर समुदाय से नामांकित है। गर्मी के मौसम में ये परिवार ठंडे इलाकों में चले जाते हैं किंतु गत वर्ष से कुछ परिवार अपने छात्रों की पढ़ाई के लिए यहीं रुकने लगे हैं। इस समुदाय के लोग शिक्षा के महत्व को समझने लगे हैं। छात्र खुशी–खुशी विद्यालय आने लगे, रोज

सुबह उठकर स्वयं तैयार होकर विद्यालय जाने को आतुर होते हैं। आज विद्यालय उनके लिये एक आनंदालय हैं।

आज हमारे विद्यालय में सभी संसाधन उपलब्ध हैं, पुस्तकालय, आईसीटी का नियमित प्रयोग, प्रिंट–रिच एनवायरमेंट, गतिविधि आधारित शिक्षा, खेल–खेल में सीखना–सिखाना विभिन्न प्रतियोगिता, छात्र एवं अभिभावकों को विद्यालय की ओर आकर्षित कर रहा है। नई शिक्षा नीति, निपुण भारत आदि जैसे कार्यक्रम विद्यालय को नई दिशा एवं दशा प्रदान करते हैं। गुर्जर छात्रों को मुख्य धारा से जोड़ने में विद्यालय के सभी से अध्यापकों का विशेष प्रयास रहा हैं ।

राजेन्द्र कुमार चौधरी, राजकीय इंटर कॉलेज कासमपुर, हरिद्वार **छात्र नामांकन संसाधन एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा** के सम्बंध में बताया गया। पीएम श्री राजकीय इंटर कॉलेज कासमपुर अल्पसंख्यक समुदाय क्षेत्र होने के कारण जहां बालिकाएं कक्षा 5 तक वहीं बालक कक्षा 8 के उपरांत या तो मदरसे में अध्ययन हेतु चले जाते थे अथवा अभिभावक बच्चों को काम सीखने के लिए किसी अन्य मिस्त्री, फैक्ट्री आदि जगह पर छोड़ देते थे। शुरुआत के समय यहाँ कक्षा 9 से कक्षा 12 तक ही कक्षाएं संचालित हो रही थी, तत्कालीन विद्यालय अनेक समस्याओं से जूझ रहा था।

वर्ष 2017 में प्रभारी प्रधानाचार्य के रूप में अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए विद्यालय के शिक्षकों के साथ मिलकर विद्यालय का पंचांग तैयार किया, जिसमें प्रत्येक सप्ताह एवं माह संपन्न की जाने वाली गतिविधियों को सम्मिलित किया गया। आस–पास के गांवों में नामांकन कैंपों का आयोजन कर, छात्रहित की विभिन्न योजनाओं की जानकारी अभिभावकों को उपलब्ध कराई गई। विद्यालय में बेटी–पढ़ाओ, बेटी–बचाओ थीम के आधार पर मुशायरा का आयोजन, शिक्षा चेतना अभियान जैसे कार्यक्रमों में छात्रों के साथ–साथ महिलाओं को भी आमंत्रित किया गया। जिलाधिकारी महोदय की अनुमति से कम्युनिटी मोबिलाइजेशन हेतु रथ यात्रा चलाई गई। इसका परिणाम यह हुआ कि विद्यालय में छात्रों के साथ–साथ छात्राओं के नामांकन में भी वृद्धि हुई।

नामांकन में वृद्धि के साथ–साथ हमारी दूसरी वरीयता अनुशासन एवं पठन–पाठन को सुचारू रूप से संचालित करने पर थी। हैवेल्स कंपनी का सहयोग लेकर सभी छात्र–छात्राओं हेतु फर्नीचर की व्यवस्था, उप जिलाधिकारी एवं समुदाय के सहयोग से वाटर कूलर एवं वॉटर प्यूरीफायर की व्यवस्था, एवं हेल्थ एवं हाइजीन को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों को जागरूक किया गया। सुविधा–सुलभ शौचालय निर्माण, समस्त व्यवस्थाएं, बालिकाओं हेतु सेनेटरी वेंडिंग मशीन विद्यालय में लगवाई गई ताकि छात्रों के साथ–साथ छात्रों की नियमित उपस्थिति सुनिश्चित की जा सके।

अभिभावकों के साथ अनुभवों को साझा किया जाने लगा तथा अभिभावक भी अब विद्यालय की गतिविधियों में अपना सकारात्मक सहयोग देने लगे। इसके उपरांत हमारी वरीयता प्रयोगात्मक विषय हेतु प्रयोग सामग्री उपलब्ध कराना था, इसके लिए विभाग तथा समुदाय का सहयोग लेकर विभिन्न विद्यालयों से पुराने एवं खराब उपकरण लिए गए जिनको भौतिक विज्ञान प्रयोगशाला में पुनः उनकी मरम्मत करते हुए उनको सुचारु किया गया। विद्यालय में पुस्तकालय में पुस्तक बैंक की स्थापना में विभाग एवं शिक्षकों द्वारा उपलब्ध कराई गई पुस्तकों के नियमित स्वाध्याय से परीक्षाफल एवं शिक्षा गुणवत्ता में सुधार हुआ। विद्यार्थियों को नियमित रूप से खेलने हेतु खेल सामग्री उपलब्ध कराई गई, जिसका परिणाम हुआ कि प्रत्येक वर्ष राष्ट्रीय स्तर पर विद्यार्थियों के द्वारा प्रतिभाग के रूप में सामने आया। विद्यार्थियों हेतु विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं एवं स्कॉलरशिप हेतु तैयारी, विद्यालय में पांच स्मार्ट कक्षाएं स्थापित करना, अटल टिंकरिंग लैब की स्थापना, समस्त सुविधाओं से सुसज्जित होने के कारण पीएम श्री विद्यालयों की सूची में सम्मिलित कर लिया गया।

आपदा से बचाव के उपाय बताने हेतु जिला आपदा प्रबन्धन टीम के द्वारा आपदा सुरक्षा प्रशिक्षण, सडक सुरक्षा, नशामुक्ति हेतु चित्रकला प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता तथा रैलियों का विद्यालय स्तर से लेकर जनपद स्तर तक आयोजन करना, अटल टिकरिंग लैब के माध्यम से यूनीक आइडिया पर कार्य करने का अवसर प्रदान करना, ई–कन्टेंट एवं आई. सी. टी. का उपयोग कर विषय संबंधी संप्रत्ययों के थ्रीडी एवं कार्यकारी मॉडल निर्माण कराना, प्रयोगशाला में आई.सी.टी. का उपयोग कर विषय संबंधी संप्रत्ययों के थ्रीडी मॉडल कार्यकारी वर्किंग मॉडल तैयार कराना, तकनीकी ज्ञान में वृद्धि के लिए घरेलू परिपथ निर्माण, इनवर्टर, स्टैबलाइजर एलईडी बल्बों को ठीक करना सिखाया गया ।

विगत वर्षो में अर्द्ध वार्षिक परीक्षा या प्री बोर्ड परीक्षा के बाद परीक्षा के आधार पर कमजोर विद्यार्थियों की पहचान की गयी, फिर विद्यालय समय के उपरान्त व शीतकालीन अवकाश में उपचारात्मक शिक्षण किया गया। उपचारात्मक शिक्षण हेतु भी आई.सी.टी. व शिक्षण अधिगम सामग्री का उपयोग किया गया। उक्त सभी प्रयासों के उपरान्त विद्यालय में अधिगम–शिक्षण गतिविधियों के सुचारू एवं प्रतिबद्धता से युक्त होने के कारण विद्यालय नये आयाम स्थापित कर रहा है।

संजीव कुमार शर्मा, एम. पी. हिन्दू इण्टर कॉलेज रामनगर, नैनीताल के द्वारा **विद्यालय रूपान्तरण आवश्यकता एवं कारण** पर विचार रखे गये। वर्ष 2022 में बतौर प्रधानाचार्य कार्य प्रारम्भ करने पर एक विचार मन में आया कि क्यों सरकारी विद्यालयों की छात्र संख्या गिर रही है और क्यों प्राइवेट स्कूल की तरफ एक अंधी दौड शुरू हुई है। उन छात्रों का क्या होगा जो शिक्षा हेतु महंगी फीस नहीं दे पायेंगे। मेरी समझ में जो कारण आये उनमें सरकारी स्कूल का कमजोर इन्फ्रास्ट्रक्चर और कम संख्या में शिक्षक एवं न्यून छात्र संख्या का होना था। इन्फ्रास्ट्रक्चर इतना कमजोर न हो कि शिक्षक और छात्र निराश हो जायें और कोई चुनौती ही स्वीकार न कर सकें। इसके लिए सभी स्टेक होलडर्स के साथ बैठक की गई जिसमें शिक्षक साथी, छात्र, अभिभावक एवं प्रबन्ध समिति शामिल हुए। एक मत से निर्णय लिया गया कि हम दौड में शामिल होते हैं और एक प्रतिस्पर्धी वातावरण तैयार करते हैं, प्रतिस्पर्धा दोनो कोनों पर करेगें शिक्षण में और इन्फ्रास्ट्रक्चर में भी।

शुरुआत कक्ष पुनरुद्धार से की, एक आदर्श कक्षा मॉडल के रूप में बनायी गयी–जिसमें कक्षा में बेहतर रंग रोगन, पंखें, लाईट, फर्नीचर, व्हाइट बोर्ड, पोडियम आदि लगाया गया। छात्रों और अभिभावकों ने इसे सराहा और फिर यह कार्य अन्य 34 कक्षों में किया गया। लगातार नया फर्नीचर बनवाया गया और सभी कक्षाएं स्वच्छ एवं आकर्षक तैयार की गई। इसके उपरान्त अध्यापक कक्ष का जीर्णोद्वार किया गया, एक सुन्दर स्टाफ रूम बनाया गया। अब बारी थी लैब्स की 30 कम्प्यूटर से सुसज्जित कम्प्यूटर लैब और साथ ही विज्ञान प्रयोगशाला को नया रूप दिया गया। अन्त में कार्यालय और रिकॉर्ड रूम में स्थापित किया गया। प्रधानाचार्य कक्ष को भी नया रूप प्रदान किया गया । इसके उपरान्त 25 कैमरों की मदद से स्कूल को सुरक्षित बनाया गया। विधायक निधि से एक टीन शेड भोजन (मिड डे मील) के लिए बनवाया जिसमें पंखे आदि लगवा कर भोजन करने को व्यवस्थित किया गया। स्कूल में टॉयलेट्स ब्लॉक न केवल बनवाये गये बल्कि उनकी सफाई पर विशेष ध्यान दिया गया। प्रयोगात्मक परीक्षाओं की अवधि में परीक्षकों के रुकने के लिए गैस्ट रूम का निर्माण कराया गया। पीने के पानी के लिए 6 वाटर कूलर 6 वाटर प्यूरीफायर लगवाये गये और ड्रिंकिंग वाटर स्टेशन बनवाये गये। ऑटोमैटिक जनरेटर खरीदा गया और सुनिश्चित किया गया कि यह बिजली जाने पर तुरन्त चले। नगर पालिका से अनुरोध कर प्रार्थना स्थल पर टाईल्स लगवाई गयी। विद्यालय

में जीर्ण–शीर्ण ऑडिटोरियम की मरम्मत आदि करा कर नया रूप प्रदान किया गया। विद्यालय में स्थित पार्कों का नवीनीकरण व सौन्दर्यीकरण किया गया। अजीम–प्रेम जी फाउंडेशन के साथ मिलकर एक टीचर्स ट्रेनिंग सैन्टर बनाया और लाइब्रेरी स्थापित की गई जिससे छात्र और शिक्षक पढ़ सकें।

विद्यालय में लगभग 2200 छात्र–छात्रायें शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। 2023 के बोर्ड परीक्षा में 8 छात्र मैरिट में आये। अनुशासन बेहतर हुआ। इस वर्ष बोर्ड का रिजल्ट 97 प्रतिशत हुआ। प्रवेश के लिए लम्बी कतार लगी। कक्षा 9 में 570 छात्र प्रविष्ट हुए जो प्रवेश परीक्षा के माध्यम से चयनित हुए। समाज में सरकारी विद्यालय के प्रति छवि के परिवर्तन आया। यात्रा अभी भी जारी है, इस विश्वास के साथ कि विद्यालय के परिवर्तन आखिर एक दिन विद्यालय को रूपान्तरण कर पायेंगे।

सरोज नेगी, राजकीय प्राथमिक विद्यालय हुडोली गाँव, उत्तरकाशी **प्रार्थना सभा, पुस्तकालय और बच्चों का सीखना** के सम्बंध में बताया गया कि–मैं पिछले लगभग तीन वर्षों से राजकीय प्राथमिक विद्यालय हुडोली गाँव में एक शिक्षिका के रूप में कार्यरत हूँ। विद्यालयी प्रक्रियाओं में काम स्कूल की दहलीज पार करने के साथ ही शुरू हो जाता है। प्रार्थना सभा से हमारे विद्यालय की शुरुआत होती है। जिसके बाद हम व्यायाम करते हैं, उसके बाद हम कक्षा–कक्ष की प्रक्रियाओं में बढ़ जाते हैं। प्रधानाध्यापिका और एक शिक्षक होने पर बहुत सी जिम्मेदारियां एक साथ आ जाती हैं। जैसे बच्चों के अधिगम स्तर का ध्यान रखना और इन पर काम करते रहना, विद्यालय की व्यवस्थागत चीजें साथ ही देखना, प्रशासनिक डाकें, सूचनाएं आदि बनाना और संप्रेषित करना इत्यादि। यह काम और कठिन हो जाते हैं जब आप विद्यालय में अकेले शिक्षक होते हैं और बच्चों की संख्या भी 21 से अधिक होती है। दिन को या अपने काम को व्यवस्थित रूप से नियोजित करने और इसके नियमितता में लाने की गहुत जरूरत होती है।

इसी विचार के साथ अपने विद्यालय में सुनियोजित प्रयासों और नियमितता को ध्यान में रखकर सीखने हेतु प्रभावी योजना बनाकर कार्य प्रारम्भ किया गया। इसके लिए विद्यालय में कुछ प्रक्रियाएं शुरू की गई जैसे प्रार्थना सभा का सीखने में उपयोग, कक्षा–कक्ष का उचित प्रबंधन, पुस्तकालय का सीखने के लिए उपयोग, रीडिंग कार्नर जैसी व्यवस्था सुचारु रूप से चलाना, शाम की सभा आयोजित करना आदि। इनमें से मैं विद्यालय की सभाएं जैसे प्रार्थना सभा और शाम की सभा के साथ–साथ पुस्तकालय का उपयोग पर थोडा प्रकाश डालना चाहूंगी।

प्रार्थना सभा वो समय होता है जब विद्यालय में ताजगी होती है, हर बच्चा भरपूर ऊर्जा, आशा और उत्साह से भरा होता है। इसी ऊर्जा, उत्साह और आशा का सही उपयोग करके एक शिक्षक पूरे दिन होने वाले क्रियाकलापों की सकारात्मक नींव डाल सकता है। क्योंकि किसी भी दिन की शुरुआत अगर सही ढंग से और सकारात्मकता के साथ होती है तो उसके परिणाम हमेशा ही संतोष देने वाले होते हैं। प्रार्थना सभा, विद्यालयी प्रक्रियाओं का सबसे सुखद अनुभव भी देती है। हर बच्चा एक दूसरे से संवाद स्थापित करता हैं, सीखे हुए का प्रस्तुतीकरण बहुत ही विश्वास के साथ करता है। मेरे विद्यालय में भी हमेशा प्रयास किया जाता है कि विद्यालय का प्रत्येक बच्चा इस प्रक्रिया में सक्रिय रूप से अपनी प्रतिभागिता सुनिश्चित करें। इसी तरह शाम की सभा भी नियमित प्रक्रिया का हिस्सा है। दिनभर में अलग–अलग गतिविधियों से जब बच्चे बोझिल से होने लगते हैं तो बच्चों को नयी ऊर्जा देने के लिए कुछ कहानियाँ, कविताओं, आस–पास की खबरों, गणित के पहाड़े, स्वतंत्र अभिव्यक्ति आदि के मौके दिए जाते हैं।

पुस्तकालय का समय बच्चों के लिए बहुत उपयोगी समय होता है। इसके लिए एक समर्पित पढ़ने की घंटी तय की गयी है। इसका समय मध्यांतर के बाद आधा पौना घंटे का है। यह ध्यान रखा जाता है कि बच्चे इसे नियमितता में लाने के

लिए हमें कुछ व्यवस्था की जरूरत पड़ती हैं जैसे पुस्तकों का रख–रखाव, बच्चों के लिए उनकी स्तर की किताबें चुनना, समय का प्रबंधन करना, पढ़ने और लिखने में इसका उपयोग करना आदि। बच्चों को पढ़ने की आदत में ढाला जाए और इस आदत के जरिये बच्चे कुशल पाठक बनने की तरफ अग्रसर हो सके, उनका भाषाई विकास हो सके। सुगमकर्ता के रुप में बच्चों के साथ पढ़ी गई विषयवस्तु पर बातचीत करना हम शिक्षकों ने अनिवार्यतः सुनिश्चित किया है। जिसके अब बच्चों में परिणाम भी दिखने लगे हैं जैसे बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति में विकास, पढ़ने में धाराप्रवाहिता और समझ के साथ पढ़ना, लिखने में अपने अनुभवों को शामिल करना जैसे कुछ कौशल हैं जो दिखाई दे रहे है।

शाम की सभा भी सुबह की सभा के समान महत्वपूर्ण है सुबह की सभा जहाँ बच्चों को कुछ नया सीखने के लिए ऊर्जा देती है। पूरे दिन की गतिविधियों का पूर्वावलोकन करने, खेल और मस्ती के साथ कुछ सीखने में बहुत मददगार होती। इसके साथ शाम की सभा कहानी सुनना सुनाना, बच्चों द्वारा रोल प्ले करना, शब्द, कविता, और गीत अन्ताक्षरी करवाई जाती है। शब्द अर्थ, विलोम शब्द, गाँव के प्रधान, डॉक्टर, किसी व्यवसाय पर बातचीत के साथ शाम की सभा में कभी–कभी खेल गतिविधियाँ करवाई जाती हैं। इस पूरी प्रक्रिया में विद्यालय में बनाए गए समूहों की जिम्मेदारी होती है। शिक्षकों की उनके साथ दिशानिर्देशक की भूमिका रहती है। बच्चों के साथ कार्य करते हुए यह समझ आया कि शुरुआती कक्षाओं में बच्चों को अधिक समय देने की आवश्यकता होती है, जिससे बच्चों के साथ पर्याप्त वार्तालाप हो सके।

सतेन्द्र भंडारी, के द्वारा *राजकीय प्राथमिक विद्यालय तल्ला अगस्त्यमुनि, रुद्रप्रयाग* **विद्यालय में संसाधनों का विकास एवं प्रबंधन** के बारे में बताया गया कि शुरुआत में, जब मैंने एक शिक्षक के रूप में विद्यालय ज्वाइन किया, तो विद्यालय भवन बच्चों के बैठने के योग्य भी नहीं था। बच्चों की शिक्षा कैसे शुरू की जाए, इस पर विचार करते समय, यह निर्णय लिया कि इस मुद्दे को गाँव के सभी लोगों के सामने रखा जाए। इस प्रकार एक संस्था का पता चला जो सरकारी विद्यालय भवन निर्माण में सहायता करती है। उनसे संपर्क कर विद्यालय भवन का निर्माण करवाया और साथ ही 4 नाली जमीन भी खरीदी गई। विद्यालय एक सामाजिक संस्था है, यह सिर्फ किताबों में ही पढा था। लेकिन जब इसे वास्तविकता में समुदाय के साथ मिलकर किया गया, तो पता चला कि यदि उद्देश्य सही हो, तो समाज हर संभव मदद करता है। भवन निर्माण के बाद, हमने लर्निंग सामग्री को इस प्रकार व्यवस्थित किया कि वह बच्चों की पहुंच में रहे और उस पर कक्षा में और कक्षा के बाद चर्चा की जा सके। इससे बच्चों को वास्तविक अनुभव मिल सके। बच्चों को सिखाने में मदद मिलने के बाद, हमने विद्यालय में दीवार पेंटिंग करवाई और भाषा एवं गणित से संबंधित अधिकतम विषय वस्तु प्रिंट कर दी।

बच्चों की सुरक्षा और सीखने के सभी संसाधन विद्यालय में जुटाए गए, जिससे विद्यालय का वातावरण शिक्षण और सीखने के लिए उपयुक्त हो सका। सभी संसाधनों का इस प्रकार प्रबंधन किया जाता है, जिसमें बच्चों का सीखना केंद्र में हो और सभी संसाधन बच्चों द्वारा संचालित हों। समुदाय, लगभग सभी विभागों के अधिकारी, शिक्षक, और बच्चे सभी विद्यालय से संबंधित संसाधनों के रखरखाव, उपयोग और विकास के लिए जिम्मेदार हैं। कक्षा में उपयोग होने वाले शैक्षिक सामग्री और उपकरण जैसे कि ब्लैकबोर्ड, चार्ट, मॉडल, और प्रयोगशाला उपकरण आदि को व्यवस्थित ढंग से रखा गया है। इससे बच्चों को विषयवस्तु को समझने में आसानी होती है। विद्यालय में एक पुस्तकालय की स्थापना की गई है, जिसमें विभिन्न विषयों की किताबें, पत्रिकाएं और अन्य पढ़ने की सामग्री उपलब्ध है। पुस्तकालय का संचालन बच्चों द्वारा किया जाता है, जिससे उनकी जिम्मेदारी और प्रबंधन क्षमता का विकास होता है। सप्ताह में 5 घंटे अपनी रुचि की पुस्तक पढ़ने के लिए दी जाती है।

नर्सरी और वनस्पति उद्यान विद्यालय की भूमि पर एक नर्सरी का निर्माण किया गया, और इसे एक प्रक्रिया के रूप में संचालित किया गया। इस दौरान बच्चों को सिखाया गया कि कैसे बीज से पौधा बनता है और इसके लिए किन चीजों की आवश्यकता होती है। जब पौधे थोड़े बड़े हो जाते हैं, तो गाँव के लोगों को बुलाकर इन्हें आस–पास के जंगलों में लगवाया जाता है। विद्यालय में एक मछली तालाब भी बनवाया गया है, जिससे जल में पाए जाने वाले जीवों के बारे में सिखाने में आसानी होती है। बच्चे तालाब में मछलियों की देखभाल करते हैं और उनके जीवन चक्र को समझते हैं।

विद्यालय में विभिन्न प्रकार की वनस्पति, फूल, और औषधीय उपयोग के लिए जड़ी–बूटियाँ भी लगाई गई हैं। बच्चों को इन पौधों के महत्व और उपयोग के बारे में सिखाया जाता है, जिससे उनका पर्यावरण के प्रति प्रेम और समझ बढ़ती है। ई–लर्निंग और डिजिटल संसाधन आज के समय में सभी क्षेत्र में तकनीक एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है, और सार्वजनिक शिक्षा भी इससे अछूती नहीं है। हमारे विद्यालय में ई–लर्निंग के सभी संसाधन उपलब्ध हैं, और हम उनका उपयोग आवश्यकता के अनुसार करते हैं। विद्यालय में कंप्यूटर लैब की स्थापना की गई है, जिसमें बच्चों को डिजिटल शिक्षा प्रदान की जाती है।

इंटरनेट और ऑनलाइन संसाधन विद्यालय में इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है, जिससे बच्चों को ऑनलाइन शैक्षिक सामग्री और वीडियो लेक्चर का उपयोग करने में सुविधा होती है। इसके माध्यम से बच्चों को आधुनिक शिक्षा के साथ जोड़ा जाता है और उनकी ज्ञान की सीमा का विस्तार होता है। इस प्रकार, विद्यालय में संसाधनों का विकास और प्रबंधन करने के लिए हमने अनेक पहल की है, जिससे बच्चों की शिक्षा और सीखने का अनुभव समृद्ध हुआ है। समाज और समुदाय की भागीदारी से, हमने विद्यालय के लिए एक समृद्ध और प्रेरणादायक वातावरण का निर्माण किया है। विद्यालय में सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। माता–पिता, अभिभावक, और स्थानीय समुदाय के सदस्य नियमित रूप से विद्यालय के कार्यक्रमों में शामिल होते हैं। इससे बच्चों की शिक्षा में समुदाय की सक्रिय भूमिका सुनिश्चित होती हैं। शिक्षकों के नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिससे वे नवीनतम शिक्षण तकनीकों और शैक्षिक विधियों से अवगत रहते हैं। इससे शिक्षकों की क्षमता में वृद्धि होती है और वे बच्चों को और बेहतर तरीके से शिक्षित कर पाते हैं।

विद्यालय में विभिन्न शैक्षिक गतिविधियाँ और प्रयोगात्मक शिक्षण का आयोजन किया जाता है। बच्चों को कक्षा में पढ़ाई के साथ–साथ विभिन्न प्रयोगों और गतिविधियों के माध्यम से सिखाया जाता है। इससे बच्चों की जिज्ञासा और सृजनात्मकता में वृद्धि होती है। बच्चों के शैक्षिक प्रदर्शन का नियमित मूल्यांकन किया जाता है और उन्हें फीडबैक दिया जाता है। इससे बच्चों की कमजोरियों का पता चलता है और उन्हें सुधारने का मौका मिलता है। इसके साथ ही, बच्चों की प्रगति पर ध्यान दिया जाता है और उनकी उपलब्धियों की सराहना की जाती है। इस प्रकार, इन प्रभावी शैक्षणिक प्रक्रियाओं के माध्यम से हम प्राथमिक शिक्षा में विद्यालयी नेतृत्व को सशक्त बना रहे हैं और बच्चों के समग्र विकास के लिए प्रयासरत हैं ।

सीमैटद्वारा वर्ष 2024–25 में सम्पादित कार्य

क्र.सं.	प्रशिक्षण / कार्यशाला का नाम	प्रतिभागियों की संख्या
1	प्रधानाध्यापक एवं प्रधानाचार्यों हेतु विद्यालयी नेतृत्व प्रबंधन पर 02 दिवसीय ऑनलाइन बैठक	110
2	शासनादेश संग्रह प्रकाशन एवं सम्पादन	सीमैट संकाय
3	निदेशालय अकादमिक, शोध एवं प्रशिक्षण की वार्षिक पत्रिका रत्नमाला का प्रकाशन	सीमैट संकाय
4	एस.एल.डी.पी. के अंतर्गत विद्यालय प्रमुखों हेतु स्व अधिगम माड्यूल निर्माण	15
5	एन.ई.पी.–2020 पर राष्ट्रीय सेमीनार हेतु 01 दिवसीय बैठक	15
6	एस0एल0डी0पी0 के अन्तर्गत एक माह सर्टिफिकेट कोर्स।	27
7	एस.एल.डी.पी. के अंतर्गत 01 माह प्रशिक्षण प्राप्त प्रधानाचार्यो का एक दिवसीय प्रोजेक्ट आकलन कार्यशाला	27
8	संस्थान की वार्षिक पत्रिका नवोन्मेष का प्रकाशन	सीमैट संकाय
9	कार्यालय प्रबन्धन पर मिनिस्ट्रीरियल संवर्गीय कार्मिकों का प्रशिक्षण (प्रथम चक्र)	40
10	एक भारत–श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम के अंतर्गत जनपदों को वर्ष 2024–25 हेतु वार्षिक कार्ययोजना का प्रेषण	सीमैट संकाय
11	शासनादेश संग्रह "प्रहरी"भाग 7 का प्रकाशन	सीमैट संकाय
12	कक्षा 3 से 8 तक के बच्चों हेतु "समर कैम्प" का आयोजन	500
13	जिला शिक्षा एवं खण्ड शिक्षा अधिकारियों का 04 दिवसीय पुर्नबोधात्मक प्रशिक्षण	35
14	जिला शिक्षा एवं खण्ड शिक्षा अधिकारियों का 04 दिवसीय पुर्नबोधात्मक प्रशिक्षण	23
15	कार्यालय एवं वित्तीय प्रबन्धन पर मुख्य प्रशासनिक अधिकारियों का प्रशिक्षण (द्वितीय चक्र)	26
16	माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों का सतत व्यावसायिक विकास प्रशिक्षण। (प्रथम चक्र)	28
17	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में विद्यालय समय सारिणी तथा अवकाश निर्धारण।	23
18	लोक सेवा आयोग के माध्यम से चयनित होने वाले उप शिक्षा अधिकारियों के प्रशिक्षण हेतु मॉड्यूल निर्धारण।	18
19	नई स्थानान्तरण नीति का प्रस्तुतीकरण।	-
20	माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों का सतत व्यावसायिक विकास प्रशिक्षण। (द्वितीय चक्र)	32
21	माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों का सतत व्यावसायिक विकास प्रशिक्षण। (तृतीय चक्र)	30
22	माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों का सतत व्यावसायिक विकास प्रशिक्षण। (चतुर्थ चक्र)	32
23	माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यों का सतत व्यावसायिक विकास प्रशिक्षण। (पंचम चक्र)	40
24	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक मतें विद्यालय समय सारणी तथा अवकाश निर्धारण प्रस्तुतीकरण।	–
25	विद्यालयी शिक्षा के प्रधानाचार्यों एवं प्रधानाध्यापकों हेतु विद्यालय नेतृत्व में नवाचार–प्रभावी विद्यालयी प्रबंधन के संदर्भ में 03 दिवसीय सेमिनार	55
26	कार्यालय एवं वित्तीय प्रबंधन पर मिनिस्ट्रीयल संवर्गीय कार्मिकों का प्रशिक्षण (तृतीय चक्र)	43
27	विद्यालय कोटिकरण पर 02 दिवसीय कार्यशाला	15
28	कार्यालय एवं वित्तीय प्रबंधन पर मिनिस्ट्रीयल संवर्गीय कार्मिकों का प्रशिक्षण (चतुर्थ चक्र)	44

राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान, प्रस्तावित वार्षिक कार्य योजना 2025-26

क्र. स.	प्रशिक्षण / कार्यशाला का नाम	प्रतिभागी	अवधि	प्रतिभागियों की संख्या	सम्भावित तिथि	अभ्युक्ति
1	विद्यालयों में छात्र / छात्राओं का प्रवेश तथा तत् संबंधी अनुश्रवण व फीडबैक कार्यक्रम	सीमैट संकाय सदस्य	—	—	अप्रैल से माह जुलाई तक	विद्यालयों में छात्र नामांकन बृद्धि के दृष्टिगत
2	प्रवेशोत्सव	समस्त शिक्षाधिकारी,सीमैट संकाय	01 दिन	—	21 अप्रैल 2025	विद्यालयों में छात्र नामांकन बृद्धि के दृष्टिगत
3	मिशन कोशिश' हेतु रणनीति एवं कार्य योजना तथा आनलाइन शिक्षण कार्य	सीमैट, एस.सी.ई.आर. टी. संकाय सदस्य	—	—	अप्रैल तथा माह मई	विगत कक्षा की दक्षताओं की सुनिश्चितता तथा नवीन कक्षा की तैयारी
4	अकादमिक, शोध एवं प्रशिक्षण निदेशालय के अन्तर्गत डायट, सीमैट व एस.सी.ई.आर.टी के ढांचे का निर्माण	सीमैट, संकाय	06 दिन		05 से 09 मई 2025	शासन द्वारा प्रदत्त निर्देश के अनुसार
5	पी.एम. श्री विद्यालयों में कार्यरत विद्यालय प्रमुखों का प्रशिक्षण **प्रथम चक्र**	विद्यालय प्रमुख पी.एम. श्री विद्यालय	05 दिन	—	05–09 मई 2025	समग्र शिक्षा द्वारा प्रदत्त बजट के अनुसार
6	पी.एम. श्री विद्यालयों में कार्यरत विद्यालय प्रमुखों का प्रशिक्षण **द्वितीय चक्र**	विद्यालय प्रमुख पी.एम. श्री विद्यालय	05 दिन	—	19–23 मई 2025	समग्र शिक्षा द्वारा प्रदत्त बजट के अनुसार
7	नेशनल प्रोफेशनल स्टैण्डर्स फार टीचर्स के दस्तावेज निर्माण हेतु कार्यशाला	सदस्य राज्य प्रोफेशनल स्टैण्डर्स फार टीचर्स	01 दिन		28 मई 2025	एन.ई.पी. 2020 के अनुरूप संस्थान को पद्धत्त कार्य
8	समर कैम्प	समीपस्थ मलिन बस्तियों में अध्ययनरत कक्षा 1 से 8 के छात्र छात्राए	07 दिन	500	जून प्रथम सप्ताह	
9	सीमैट निदेशकों की राष्ट्रीय बैठक	सीमैट निदेशक समस्त राज्य	03 दिन	40	10–12 जून 2025	NIEPA नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित
10	लोक सेवा आयोग से चयनित नव नियुक्त उप शिक्षाधिकारियों का क्षेत्रीय प्रशिक्षण के उपरान्त द्वितीय चक्र का प्रशिक्षण।	नव नियुक्त उप शिक्षाधिकारी	10 दिन		16 जून से 25 जून 2025	
11	विद्यालय नेतृत्व व प्रबंधन पर प्रधानाचार्यो का 30 दिवसीय सर्टिफिकेट कोर्स	प्रधानाध्यापक / प्रधानाचार्य माध्यमिक विद्यालय	30 दिन	35	1 जून से 30 जून 2025	NIEPA के सहयोग द्वारा प्रशिक्षण जून अथवा जनवरी

						दिसम्बर.25 से जनवरी 26 में करवाया जाएगा।
12	माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यो का सतत व्यावसायिक विकास प्रशिक्षण (प्रथम चक्र)	प्रधानाचार्य माध्यमिक विद्यालय	05 दिन	40	जुलाई द्वितीय सप्ताह	
13	NPST मार्गदर्शिका निर्माण कार्यशाला	कोर टीम व सीमैट संकाय	04 दिन	25	जुलाई तृतीय सप्ताह	
14	मिशन कोशिस का अनुश्रवण	प्रा. एवं मा. विद्यालय			जुलाई 2025	
15	शिक्षक शिक्षा संवर्ग के ढॉचे पर चर्चा	सीमैट / एस.सी.ई.आर.टी. संकाय		—	अगस्त प्रथम् सप्ताह	
16	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में राज्य में अद्यतन प्रगति पपर जनपद स्तरीय शिक्षाधिकारियों की बैठक	अधिकारी विद्यालयी शिक्षा विभाग	02 दिन		अगस्त द्वितीय सप्ताह	
17	माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाचार्यो का सतत व्यावसायिक विकास प्रशिक्षण (प्रथम चक्र)	प्रधानाचार्य माध्यमिक विद्यालय	05 दिन	40	अगस्त तृतीय सप्ताह	
18	पी.एम.श्री विद्यालयों के संस्थाध्यक्षो का प्रशिक्षण (प्रथम चक्र)	सीमैट संकाय	—	—	अगस्त चतुर्थ सप्ताह	
19	NPST मार्गदर्शिका का प्रस्तुतीकरण	विभागीय अधिकारी एवं सदस्य	01 दिन	40	अगस्त चतुर्थ सप्ताह	
20	माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाध्यापकों / प्रधानाचार्यो का 06 दिवसीय सतत व्यावसायिक विकास प्रशिक्षण (प्रथम चक्र)	माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरतप्रधानाचार्य / प्रधानाध्यापक	05 दिन	40	सितम्बर प्रथम् सप्ताह	प्रधानाध्यापकों / प्रधानाचार्यो को शैक्षिक नेतृत्व विकास व वित्तीय प्रबंधन पर प्रशिक्षण प्रदान किया जाना है।
21	माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाध्यापकों / प्रधानाचार्यो का 06 दिवसीय सतत व्यावसायिक विकास प्रशिक्षण (प्रथम चक्र)	माध्यमिक विद्यालयों में पदोन्नत प्रधानाचार्य / प्रधानाध्यापक	05 दिन	40	सितम्बर तृतीय सप्ताह	प्रधानाध्यापकों / प्रधानाचार्यो को शैक्षिक नेतृत्व विकास व वित्तीय प्रबंधन पर प्रशिक्षण प्रदान किया जाना है।
22	माध्यमिक विद्यालयोंमें कार्यरत प्रधानाध्यापकों / प्रधानाचार्यो का 06 दिवसीय सतत व्यावसायिक विकास प्रशिक्षण (पंचम चक्र)	माध्यमिक विद्यालयों में पदोन्नत प्रधानाचार्य / प्रधानाध्यापक	05 दन	40	सितम्बर चतुर्थ सप्ताह	नवीन पदोन्नत प्रधानाध्यापकों / प्रधानाचार्यो को शैक्षिक नेतृत्व विकास तथा वित्तीय प्रबंधन पर प्रशिक्षण

23	कार्यालय एवं वित्तीय प्रबंधन पर पदोन्नत मुख्य शिक्षा अधिकारियों का प्रशिक्षण	शिक्षाधिकारी उत्तराखण्ड	05 दिन	40	अक्टूबर प्रथम सप्ताह	
24	अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाध्यापकों /प्रधानाचार्यो का 06 दिवसीय सतत व्यावसायिक विकास प्रशिक्षण	अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्य / प्रधानाध्यापक	06 दिन	40	अक्टूबर द्वितीय सप्ताह	अशासकीय प्रधानाध्यापकों / प्रधानाचार्यो को शैक्षिक नेतृत्त्व विकास तथा वित्तीय प्रबंधन पर प्रशिक्षण प्रदान किया जाना है।
25	क्लस्टर स्कूलों के विद्यालय प्रमुखों का प्रशिक्षण (प्रथम चक्र)	विद्यालय प्रमुख क्लस्टर स्कूल	04 दिन	50	अक्टूबर तृतीय सप्ताह	
26	क्लस्टर स्कूलों के विद्यालय प्रमुखों का प्रशिक्षण (प्रथम चक्र)	विद्यालय प्रमुख क्लस्टर स्कूल	04 दिन	50	अक्टूबर चतुर्थ सप्ताह	
27	शिक्षाधिकारियों का शैक्षिक भ्रमण	अधिकारी विद्यालयी शिक्ष विभाग	—	100	अक्टूबर चतुर्थ सप्ताह	अजीम प्रेम जी फाउन्डेशन के सहयोग से
28	अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाध्यापकों / प्रधानाचार्यो का 6 दिवसीय सतत व्यावसायिक विकास प्रशिक्षण (प्रथम चक्र)	अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाचार्य / प्रधानाध्यापक	05 दिन	40	नवम्बर प्रथम सप्ताह	
29	पदोन्नत वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों का कार्यालय एवं वित्तीय प्रबंधन पर प्रशिक्षण	पदोन्नत वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी	5 दिन	40	नवम्बर द्वितीय सप्ताह	
30	बाल चौपाल का आयोजन	जनपदों से आमंत्रित छात्र–छात्राए एवं शिक्षक	01 दिन	120	14 नवम्बर 2025	कार्यक्रम शिक्षा में सहयोगी संस्थाओं के सहयोग से सम्पन्न करवाया जाएगा।
31	सतत व्यावसायिक विकास प्रशिक्षण का प्रधानाचार्य नेतृत्वशैली–निर्णय लेने की क्षमता पर प्रभाव संबंधी शोध अध्ययन	सीमैट संकाय			नवम्बर माह	टूल निर्माण तथा ऑकडे एकत्र करने संबंधी कार्य
32	शिक्षाधिकारियों एवं प्रधानाचार्यो के प्रशिक्षण हेतु प्रशिक्षण आवश्यकता का आकलन	सीमैट संकाय	—	—	दिसम्बर प्रथम सप्ताह	आनलाइन टूल प्रेषित कर प्रशिक्षण आवयकता का आकलन किया जाना प्रस्तावित है।
33	माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत प्रधानाध्यापकों / प्रधानाचार्यो का 06 दिवसीय सतत व्यावसायिक	प्रधानाध्यापक / प्रधानाचार्य माध्यमिक विद्यालय	06 दिन		दिसम्बर द्वितीय सप्ताह	

	विकास प्रशिक्षण छठा चक्र					
34	निदेशालय अकादमिक शोध एवं प्रशिक्षण की वार्षिक पत्रिका रत्नमाला के प्रकाशन कार्य हेतु डायट एवं एस.सी.ई.आर.टी. से आलेख एकत्रीकरण				दिसम्बर–24 से फरवरी 2026	
35	प्रशिक्षण साहित्य(प्रधानाचार्य / वरिष्ठ शिक्षा अधिकारी हेतु प्रशिक्षण साहित्य का निर्माण व प्रूफ रीडिंग तथा साहित्य को अन्तिम स्वरूप प्रदान करना	सीमैट संकाय व अन्य विशेषज्ञ शिक्षा अधिकारी			दिसम्बर 2024 से जनवरी 2026	
36	सीमैट की वार्षिक पत्रिका नवोन्मेष हेतु आलेख तैयार करना।	सीमैट संकाय	–	–	जनवरी 2026	वार्षिक पत्रिका नवोन्मेष का प्रकाशन
37	विद्यालयों की श्रेष्ठ प्रकियाओं पर विडियो निर्माण	सीमैट संकाय			ज्नवरी 2026	बजट SLA NIEPA द्वारा निर्गत होने पर तैयार किये जाएगे।
38	कार्यालय एवं वित्तीय प्रबंधन पर मिनिस्ट्रियल संवर्गीय कार्मिको का प्रशिक्षण	मिनिस्ट्रियल संवर्गीय कार्मिक	–	–	फरवरी द्वितीय सप्ताह	प्रशिक्षण वर्चुअल माध्यम से प्रस्तावित है।
39	वर्ष 2022–23 हेतु सीमैट की वार्षिक कार्ययोजना का निर्माण।	सीमैट संकाय			मार्च 2026	
40	विद्यालयों का अकादमिक अनुश्रवण	सीमैट संकाय			प्रतिमाह	विभागीय निर्देशानुसार
	विद्यालय अनुश्रवण आख्याओं का विश्लेषण।	सीमैट संकाय			प्रतिमाह	विभागीय निर्देशानुसार

नोट–

- उक्त कार्यकमों के अतिरिक्त विद्यालयी शिक्षा विभाग द्वारा प्रदत्त शोध,सर्वेक्षण,नीति नियोजन संबंधी कार्य, आकलन व प्रारूप निर्माण हेतु
- विभाग द्वारा दत्त कार्य को सम्पन्न किया जाएगा।
- एन.ई.पी. 2020 के अन्तर्गत दिये कार्यो को समयानुसार पूर्ण किया जाएगा।
- उक्त प्रशिक्षण / कार्यशालाए सीमैट को उपलब्ध बजट के अनुसार ही सम्पन्न करवायी जाएगी।
- प्रशिक्षण चकों में अन्य उच्च स्तरीय निर्देशो के फलस्वरूप परिवर्तन किया जा सकता है।

प्रकाशन

- वित्तीय प्रबंधन / प्रधानाचार्य प्रशिक्षण संबंधी माड्यूल संशोधन।
- समग्र शिक्षा अभियान के अन्तर्गत प्रधानाचार्य प्रशिक्षण हेतु साहित्य निर्माण।
- एस0एल0डी0पी0 प्रशिक्षण साहित्य संबर्द्धन।
- सीमैट की वार्षिक पत्रिका नवोन्मेष का प्रकाशन।

अपर निदेशक
सीमैट,
उत्तराखण्ड, देहरादून

शिक्षण संस्थाओं में कार्यरत माध्यमिक शिक्षको के लिए वार्षिक गोपनीय आख्या

भाग – 1 (स्वमूल्यांकन) वर्ष :–

कार्यालय / संस्था का नाम :– विकासखण्डः– जनपद :–

नाम – जन्मतिथि – गृह जनपद –

1. कर्मचारी कोड–

2. शैक्षिक योग्यता का विवरण

परीक्षा का नाम	वर्ष	विषय	संस्था / विश्वविद्यालय	अन्य
हाई स्कूल				
इण्टरमिडिएट				
स्नातक				
स्नात्कोत्तर				
प्रशिक्षण योग्यता				
एम०एड०				
पी०एच०डी०				
अन्य				

1. **व्यावसायिक दक्षता विकास प्रशिक्षण**

प्रशिक्षण का नाम	वर्ष	प्रशिक्षण संस्थान का नाम	उल्लेखनीय बिन्दु

1. वर्तमान धारित पद और उस पर नियुक्ति की तिथि –
2. .नियुक्ति का श्रोत– (तदर्थ / विनियमितीकृत / आयोग / पदोन्नत / अन्य) पदों का विवरण जिन पर आख्यागत वर्ष में काम किया

पद का नाम	तिथि		वेतनमान व ग्रेड वेतन	अधिकारी का नाम जिसके अधीन कार्य किया
	कब से	कब तक		

अवकाश यदि लिया हो (आकस्मिक अवकाश का उल्लेख न करें)

क.सं.	अवकाश का प्रकार	अवकाश तिथि		कुल दिवस
		कब से	कब तक	
1	चिकित्सा अवकाश			
2	बाल्य देखभाल अवकाश			
3	प्रसूति अवकाश / पितृत्व अवकाश			
4	अवैतनिक अवकाश			
5	उपार्जित अवकाश			
6	अन्य अवकाश			

आख्यागत अधिकारी के हस्ताक्षर

भाग – 2 (स्वमूल्यांकन)

अधिकतम अंक:– 60

अकादमिक मूल्यांकन

आख्यागत वर्ष:–

क. 1.1 परिषदीय परीक्षाफल (अधिकतम अंक–30)

क्र.सं.	संवर्ग (स0अ0/प्रवक्ता) में अध्यापन की जाने वाली बोर्ड परीक्षा कक्षा	विषय	आख्यागत वर्ष में परिषदीय परीक्षा में कुल सम्मिलित छात्र	कुल उत्तीर्ण छात्र	उत्तीर्ण प्रतिशत	कुल अंक उत्तीर्ण प्रतिशत $\frac{X30}{100}$
1						
2						
	औसत अंक					

1.2 अध्यापक द्वारा पढ़ाए गए विषय में छात्र–छात्राओं के प्राप्तांक प्रतिशत के अनुसार अंक (अधिकतम अंक–30)

संवर्ग (स0अ0/प्रवक्ता) में अध्यापन की जाने वाली बोर्ड परीक्षा कक्षा	कुल उत्तीर्ण छात्र	(60%से कम अंक प्राप्त करने वाले उत्तीर्ण छात्र/कुल उत्तीर्ण छात्र) X 5	(60%से अधिक परन्तु 70% अंक प्राप्त करने वाले उत्तीर्ण छात्र/कुल उत्तीर्ण छात्र) X 10	(70%से अधिक परन्तु 80% से कम अंक प्राप्त करने वाले उत्तीर्ण छात्र/कुल उत्तीर्ण छात्र) X 15	(80%से अधिक परन्तु 90% से कम अंक प्राप्त करने वाले उत्तीर्ण छात्र/कुल उत्तीर्ण छात्र) X 20	(90%या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले उत्तीर्ण छात्र/कुल उत्तीर्ण छात्र) X 30
1						
2						
कुल अंकों का औसत						

ख. शारीरिक शिक्षकों के गुणांकों का मूल्यांकन निम्नवत् किया जाएगा :–

छात्रों द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिभाग/प्रतियोगिता परीक्षा,(एन.डी.ए. आदि जहाँ पर खेल के माध्यम से छात्रो का चयन होता है) में चयन	60
छात्रों द्वारा राज्य स्तर पर प्रतिभाग	50
छात्रों द्वारा जनपद स्तर पर प्रतिभाग	40
छात्रों द्वारा विकासखण्ड स्तर पर प्रतिभाग	30

ग. ग्रेडिग वाले विषय के शिक्षकों के गुणांकों का मूल्यांकन निम्नवत् किया जाएगा :–

अधिकतम अंक 60

क्र. स.	परीक्षाफल	कुल प्राप्तांक
1	(बोर्ड परीक्षा/उच्चतम कक्षा में सम्बन्धित विषय में A-1 ग्रेड प्राप्त करने वाले कुल छात्र/ परीक्षा में सम्मिलित कुल छात्र) X 60	
2	(बोर्ड परीक्षा/उच्चतम कक्षा में सम्बन्धित विषय में A ग्रेड प्राप्त करने वाले कुल छात्र/ परीक्षा में सम्मिलित कुल छात्र) X 55	
3	(बोर्ड परीक्षा/उच्चतम कक्षा में सम्बन्धित विषय में B-1 ग्रेड प्राप्त करने वाले कुल छात्र/ परीक्षा में सम्मिलित कुल छात्र) X 50	
4	(बोर्ड परीक्षा/उच्चतम कक्षा में सम्बन्धित विषय में B ग्रेड प्राप्त करने वाले कुल छात्र/ परीक्षा में सम्मिलित कुल छात्र) X 45	
5	(बोर्ड परीक्षा/उच्चतम कक्षा में सम्बन्धित विषय में C-1 ग्रेड प्राप्त करने वाले कुल छात्र/ परीक्षा में सम्मिलित कुल छात्र) X 40	
6	(बोर्ड परीक्षा/उच्चतम कक्षा में सम्बन्धित विषय में C ग्रेड प्राप्त करने वाले कुल छात्र/ परीक्षा में सम्मिलित कुल छात्र) X 35	
7	(बोर्ड परीक्षा/उच्चतम कक्षा में सम्बन्धित विषय में D-1 ग्रेड प्राप्त करने वाले कुल छात्र/ परीक्षा में सम्मिलित कुल छात्र) X 30	
8	(बोर्ड परीक्षा/उच्चतम कक्षा में सम्बन्धित विषय में D ग्रेड प्राप्त करने वाले कुल छात्र/ परीक्षा में सम्मिलित कुल छात्र) X 25	
	कुल अंक	

नोटः– प्राप्तांकों की दशमलव के अधिकतम दो अंकों तक गणना की जायेगी व तृतीय अंक के 5 से अधिक होने पर द्वितीय अंक में 1 जोड़ दिया जायेगा कम होने पर छोड़ दिया जायेगा। कुल अंकों में दशमलव के बाद के अंक का 5 से अधिक होने पर सम्पूर्ण अंकों में 1 जोड़ दिया जायेगा व कम होने पर छोड़ दिया जायेगा।

दिनांक–

अध्यापक के हस्ताक्षर

नाम व पद –

सत्यापितः– (संस्थाध्यक्ष द्वारा उक्त सभी प्राप्तांकों को उपलब्ध अभिलेखों के आधार पर सत्यापित किया जायेगा)

संस्थाध्यक्ष के हस्ताक्षरः–

राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान (सीमैट) उत्तराखण्ड
ननूरखेड़ा, देहरादून
Email : uksiemat@gmail.com
Website : siemat.uk.gov.in